UNIVERSAL LIBRARY

OU_186304

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. G80.9 C496 Accession No. H [illegible]66

Author चतुर्वेदी, बरसानेलाल

Title गुजराती साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

This book should be returned on or before the date last marked below.

गुजराती साहित्य
का
संक्षिप्त इतिहास

लेखक

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी एम. ए., पी-एच. डी.

प्रकाशक

हिन्दी साहित्य संसार

१३६१ वैदवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली

प्रथमावृत्ति] १९६० [मूल्य २)

मूल्य : दो रुपये (२.००)

प्रथम संस्करण : नवम्बर १९६०

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली–६

मुद्रक : महामाया प्रिंटर्स, दिल्ली–६

दो शब्द

जब से हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित की गई है तब से हमारे राष्ट्रीय नेताओं एवं हिन्दी के प्रमुख विद्वानों का यही मत रहा है कि हिन्दी भाषी साहित्यकार को कम से कम एक अन्य प्रादेशिक भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। जब हिन्दी भाषा-भाषी अन्य प्रादेशिक भाषाओं में रुचि लेना प्रारम्भ कर देंगे तो अन्य भाषा-भाषी भी हिन्दी को प्रसन्नता-पूर्वक सीखने लगेंगे और भाषागत् कटुता समाप्त हो जायेगी। इसी भावना से प्रेरित होकर यह पुस्तक लिखी गई है। इसके लिखने का एकमात्र उद्देश्य यही है कि इस पुस्तक के पाठक को गुजराती-साहित्य की आवश्यक जानकारी हो जाय और जिसे अधिक रुचि हो उसे गुजराती-साहित्य के अधिक ज्ञानार्जन का रास्ता मिल जाय।

प्रसन्नता की बात है कि इस ओर हिन्दी के लेखक, प्रकाशक तथा पाठक रुचि ले रहे हैं। हिन्दी भाषी प्रान्तों की परीक्षाओं में भी अन्य प्रादेशिक भाषाओं का वैकल्पिक विषयों के रूप में समावेश हो गया है। आवश्यक पुस्तकों के अभाव में विद्यार्थी-वर्ग अन्य भाषाओं के लेने में हिचकिचाता है। मेरा ऐसा विश्वास है कि हिन्दी भाषी विद्यार्थी-वर्ग को भी यह पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

हिन्दी के कुछ पत्र भी अन्य भाषाओं की श्रेष्ठ कृतियों को प्रकाशित करके इस महत्वपूर्ण कार्य में योग दे रहे हैं। दिल्ली से प्रकाशित होने वाला त्रैमासिक "देवनागर" तो हिन्दी अनुवाद के साथ-साथ मौलिक कृति की भाषा भी प्रकाशित करता है जिससे पाठक को दूसरी भाषा से कुछ परिचय हो जाय। केन्द्रीय सरकार द्वारा

प्रकाशित मासिक "आजकल" प्रति अङ्क में चार-पाँच गद्य तथा पद्य की कृतियां अन्य प्रादेशिक भाषाओं से देता है। दक्षिण (मद्रास) 'निर्मला' नामक हिन्दी मासिक भी प्रति अंक में सीखने वालों के लिए एक पाठ तामिल का देता है। स्वतन्त्रता दिवस पर आकाशवाणी से प्रसारित 'सर्वभाषा कवि सम्मेलन' का महत्व भी कम नहीं है। इस अवसर पर सब प्रादेशिक भाषाओं के प्रमुख कवियों द्वारा अपनी-अपनी भाषाओं में कविता पढ़ी जाती हैं, तथा साथ-साथ उनके हिन्दी अनुवाद सुनाये जाते हैं। 'साहित्य अकादमी' तथा केन्द्र के प्रसारण-मन्त्रालय ने अन्य प्रादेशिक भाषाओं की बहुमूल्य कृतियों का हिन्दी में अनुवाद प्रकाशित करके एक महत्वपूर्ण कार्य किया है।

मेरा अपना मत है कि हिन्दी भाषा-भाषी को अन्य प्रादेशिक भाषाओं में गुजराती सीखना अपेक्षाकृत सरल है। गुजराती भाषा समझ में भी जल्दी आती है। गुजराती-साहित्य की वैभवपूर्ण परम्पराएं रही हैं। आज भी गुजराती-साहित्य की चतुर्दिक उन्नति हो रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की यह मातृभाषा रही है। कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, काका कालेलकर, उमाशङ्कर जोशी, सुन्दरम्, गुलाबदास ब्रोकर, धनसुखलाल मेहता, ज्योतीन्द्र दवे, बकुल त्रिपाठी, श्रीमती लीलावती मुन्शी, कुन्दनिका कापड़िया प्रभृति आज भी गुजराती-साहित्य को अपनी कृतियों द्वारा गौरवान्वित कर रहे हैं।

इस पुस्तक को लिखने में मुझे श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी कृत "Gujerat and its Literature" से तथा स्व० दीवान बहादुर कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी के "गुजराती साहित्यना मार्गसूचक अने वधु मार्गसूचक स्तम्भो" से बहुत सहायता मिली है। मैं श्री मुन्शी तथा झवेरी का आभार स्वीकार करता हूँ। इनके अतिरिक्त विजयराय कल्याणराय वैद्य कृत "गुजराती साहित्य नी रूपरेखा", प्रो० विष्णुप्रसाद

र. त्रिवेदी कृत "विवेचना", हिम्मतलाल ग. अंजारिया कृत "गुजराती गद्य ना धडनारा", आनन्द वा. ध्रुव कृत "साहित्य विचार", रामनारायण विश्वनाथ पाठक कृत "साहित्य विमर्श", रमणभाई कृत "कविता अने विवेचन—चार भाग", डाह्याभाई देरीसरी कृत "साठीनुं साहित्य", नानालाल कृत "साक्षर रत्नो" तथा "साहित्य-मंथन" आदि ग्रन्थों से भी सहायता मिली है। मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ।

मुझे आशा है, गुजराती-साहित्य का यह संक्षिप्त इतिहास पाठकों को गुजराती-साहित्य से परिचित ही नहीं करायेगा वरन् उनके हृदय में गुजराती-भाषा के अधिक पठन-पाठन के लिए रुचि भी उत्पन्न करेगा।

रामजीद्वार, मथुरा
१ नवम्बर १९६०

—बरसानेलाल

विषय-सूची

क्रम			पृष्ठ
१—विषय प्रवेश	...	...	६
२—अपभ्रंश भाषा के जैन कवि	...	...	१२
३—वीर-काव्य (१४००-१५००) तथा आख्यानकार		...	१५
४—भक्ति-काव्य का प्रादुर्भाव	...	...	२१
५—प्रेमानन्द तथा उनके समकालीन कवि	...	...	३३
६—गरबा-साहित्य का उदय तथा विकास	...	...	४३
७—गरबी-सम्राट दयाराम	...	...	४८
८—स्वामी नारायण सम्प्रदाय तथा उसके कवि		...	५५
९—युग-प्रवर्तक नर्मद तथा उनका युग	...	...	६०

१०—नर्मद युग के अन्य कवि ७१

११—गोवर्द्धनराम तथा अन्य आधुनिक कवि ... ७३

१२—गद्य का आविर्भाव ६४

नाटक ६५

१३—आलोचना-साहित्य ६६

१४—उपन्यास १०३

१५—कहानी ११०

१६—निबन्ध ११४

१७—विविध साहित्य

आत्म-चरित्र ११८

जीवन-चरित्र ११६

संस्मरण तथा रेखाचित्र १२

साहित्यिक संस्थाएं १२२

रङ्गमंच १२३

हास्य एवं व्यंग्य १२६

१

विषय-प्रवेश

भारतवर्ष की प्रादेशिक भाषाओं में गुजराती का प्रमुख स्थान है। गुजराती भाषा गुजरात अथवा 'गुर्जर देश' के निवासियों की भाषा है। कविशिरोमणि प्रेमानन्द ने 'गुजराती' नाम का प्रयोग सर्वप्रथम किया था। गुजरात प्रदेश भारतवर्ष के पश्चिमी भाग में स्थित है। भाषा की दृष्टि से सौराष्ट्र तथा कच्छ भी गुजरात के ही अंग हैं। इस भाषा का लगभग २ करोड़ नरनारी प्रयोग करते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मातृभाषा होने का गौरव गुजराती को ही प्राप्त है।

गुजराती भाषा गौर्जर अपभ्रंश से, गौर्जर अपभ्रंश प्राकृत अपभ्रंश से तथा प्राकृत अपभ्रंश संस्कृत से निकली। संक्षेप में कहा जा सकता है कि गुजराती भाषा भी संस्कृत से ही निकली है। गुजरात के प्राचीन-वासी गुर्जर ही बोले जाते थे। वैसे गुजराती नाम से गुजराती भाषा १७वीं शताब्दी से ही पुकारी जाने लगी। गुजरात की ऐतिहासिक परम्पराएँ अत्यन्त गौरवपूर्ण हैं।

गुजराती-साहित्य का प्रारम्भिक काल जैन अपभ्रंशों का काल रहा है। १५वीं शती से १८वीं शती तक का काल भक्ति-साहित्य से ओतप्रोत है। नरसी मेहता, मीराबाई, प्रेमानन्द, अखा तथा सामल भक्ति-काल के उज्ज्वल रत्न हैं। दयाराम की 'गरबी' भी इसी काल की देन हैं। इनके अतिरिक्त पद्मनाभ, भीम तथा धीरो भी इस काल के उल्लेखनीय कवि हुए हैं। इन कवियों ने राधा-कृष्ण की भक्ति में डूब कर काव्य-रचना की जिसकी प्रशंसा ब्रजवासियों तक ने की है।

१७९९ में सूरत के नवाब की मृत्यु हुई तथा सीरामपुर में मिशिनरी स्कूल की स्थापना हुई। अंग्रेजी राज्य के प्रारम्भ ने गुजराती साहित्य की दिशा को नया मोड़ दिया। बाल-विवाह, अन्धविश्वास, बालविधवा, अनमेल विवाह तथा अशिक्षा के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ। साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य के आलम्बन भी बदले। कवि नर्मद ने हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भांति साहित्य में नई विधाओं को जन्म दिया। साहित्य के अनेक रूपों का विकास हुआ। निबन्ध, व्यंग्य-कृतियाँ, आत्म-चरित, जीवन-चरित आदि का प्रारम्भ हुआ।

नर्मद की मृत्यु १८८६ में हो गई। इसके वाद गोवर्द्धनराम का युग आया। गोवर्द्धन-युग गुजराती साहित्य का महत्वपूर्ण युग है। खण्डकाव्य, गीत, उपन्यास, कहानी आदि आधुनिक साहित्य-रूपों का विकास इसी काल में हुआ। 'सरस्वतीचन्द्र' नामक उपन्यास जो गुजराती भाषा का गौरवग्रन्थ है, उसकी सृष्टि इसी काल में हुई।

१९१४ से गांधी युग का प्रभाव गुजराती साहित्य पर पड़ा। इस काल में चिन्तन एवं विचारप्रधान कृतियों का सृजन हुआ। तत्पश्चात् स्वतंत्रता का आगमन भारतवर्ष में हुआ। गुजराती साहित्य में भी राष्ट्रीय कविताओं का प्रचलन हुआ। कन्हैयालाल मुंशी, काका कालेलकर, उमाशंकर जोशी, आचार्य आनन्दशंकर ध्रुव, नरसिंहराव देवटिया, ज्योतीन्द्र दवे, धूमकेतु, रमणलाल वसन्तलाल देसाई, पन्नालाल पटेल, मेघानी आदि साहित्यकारों ने गुजराती साहित्य के उपवन को पूर्णरूपेण पल्लवित किया। उपन्यास, कहानी, कविता, निबन्ध, जीवन-चरित, हास्य एवं व्यंग्य शादि सब क्षेत्रों में गुजराती साहित्य का यथेष्ट विकास हुआ।

गुजराती पत्र-पत्रिकाओं ने भी गुजराती साहित्य के विकास में उल्लेखनीय योग दिया। "कुमार", "अखंड आनन्द" मासिक तथा "जन्म-

भूमि", "गुजरात समाचार", "सन्देश" तथा "लोकसत्ता" दैनिकों ने गुजराती साहित्य की वृद्धि में पूर्ण सहयोग दिया ।

अनुवाद के क्षेत्र में गुजराती साहित्य में रूसी तथा अंग्रेजी साहित्य का प्रचुर मात्रा में अनुवाद हुआ । विदेशी साहित्य के अतिरिक्त बंगाली तथा हिन्दी लेखकों की प्रमुख कृतियों का अनुवाद भी हुआ ।

पारसी लेखकों ने भी गुजराती साहित्य के भंडार को अपने उपन्यासों, कहानियों तथा हास्य-कृतियों से भरा । उनकी भाषा गुजराती होने के कारण उनका योग भी महत्वपूर्ण रहा ।

महिला साहित्यकारों का योग आधुनिक गुजराती साहित्य के विकास में उल्लेखनीय है । लीलावती मुंशी के अतिरिक्त विनोदिनी नीलकंठ, कुन्दनिका कापड़िया, लाभूभेन मेहता, धीरूभेन पटेल एवं गीता पारिख उल्लेखनीय हैं ।

साहित्य के इतिहास भी आधुनिक काल में ही लिखे गये । श्री कृष्ण-लाल मोहनलाल झवेरी कृत 'गुजराती साहित्य ना मार्गसूचक अने वधुमार्गसूचक स्तम्भो', श्री विजयराय कल्याणराय वैद्य कृत 'गुजराती साहित्य नी रूपरेखा', श्री कन्हैयालाल मुंशी कृत 'गुजरात एन्ड इट्स लिटरेचर', तथा संजन कृत 'Studies In Gujerati Literature' महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रन्थ हैं ।

: २ :

अपभ्रंश भाषा के जैन कवि

आभीरों की बोली को साहित्य में अपभ्रंश के नाम से पुकारा जाता है। ई० सन् ७४६ से १२९८ तक गुजरात में राजपूत राज्य था। इस समय ब्राह्मणों तथा जैनों ने अनेक संस्कृत पुस्तकें लिखीं। दसवीं सदी में अपभ्रंश का प्रचलन हुआ तथा राजपूत राजाओं के यशोगान के लिए भाट तथा चारणों ने रासाओं का उपयोग गाने के लिए किया। जैन-साधुओं ने यशोगान के स्थान पर काव्य तथा वार्ताएँ लिखीं। "रासा" काव्य की एक शैली है जिसका प्रयोग जैन-साधुओं ने जन-साधारण में अपने धर्म के प्रचार के लिए किया। इन 'रासाओं' का समय ई० सन् १३४४ से १८०० तक का माना जाता है।

अपभ्रंश-कृतियों के दो प्रकार पाये जाते हैं— (१) गुर्जर अपभ्रंश (२)'दक्षिणी शैली। प्रथम शैली का प्रयोग श्वेताम्बर जैनियों ने किया तथा दूसरी शैली का प्रयोग दिगम्बर जैनियों ने किया। हेमचन्द्र ने अपभ्रंश के उद्धरणों का संकलन किया है जिनमें से दो यहां दिये जाते हैं। इनसे अपभ्रंश काव्य का एक चित्र पाठकों को मिलेगा—

(१) **सायरु उप्परि तणु धरइ, तलि घल्लइ रयणाइँ।**
सामि सुभिच्चु वि परिहरइ, संभाणेइ खलाइँ॥

अर्थात् समुद्र घास को अपने ऊपरी भाग में सँजोता है तथा बहुमूल्य हीरों को अपने नीचे के भाग में रखता है इसी प्रकार स्वामी अपने अच्छे सेवकों की उपेक्षा करता है तथा दुष्ट सेवकों की पूजा करता है।

(२) **"माणि पणट्ठइ जइ न तणु, तो देसडा चइज्ज ।**
मा दुज्जण-कर-पल्लवेंहि, दंसिज्जन्तु भमिज्ज ॥"

अर्थात् यदि मनुष्य अपने देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि नहीं चढ़ा सकता तो उसे देश त्याग देना चाहिए। उसको अपने देश में भ्रमण नहीं करना चाहिए जिससे कि दुष्ट लोग उस पर उँगली उठावें।

हेमचन्द्राचार्य के अतिरिक्त प्राचीन रासाओं में उल्लेखनीय निम्नलिखित हैं—(१) गुणरत्नसूरि का 'भरत बाहुबली' (२) विजगभद्र का 'हंसराज वछराज' (३) उदयवंत विजयभद्रसूरि का 'गौतम स्वामी' (४) जयानन्दसूरि का 'क्षेम प्रकाश' तथा (५) हरसेवक का 'मदनरेखा' प्रसिद्ध हैं।

यशपाल ने "मोहराज पराजय" नामक नाटक लिखा जिसमें कुमारपाल का जैन धर्म स्वीकार करने से सम्बन्धित कथानक है। सोमप्रभा नामक साधु ने "कुमारपाल प्रतिबोध" जैन धर्म सम्बन्धी ग्रन्थ लिखा। यह ग्रन्थ सन् ११८५ में लिखा गया। मुख्यत: यह प्राकृत तथा अपभ्रंश में लिखा गया किन्तु इसका कुछ हिस्सा संस्कृत में भी है। इसके अतिरिक्त सोमप्रभा के ग्रन्थ 'सुमति नाथ चरित', सूक्तिमुक्तावली, स्तार्थकाव्य तथा पंचाख्यान हैं।

सन् ११७९–१२६२ के मध्य सोमेश्वर प्रसिद्ध कवि हुए। सोमेश्वर की कृतियों में दो महाकाव्य—(१) कीर्ति कौमुदी (२) सुरठोत्सव, एक नाटक उल्लाघराघव तथा २ प्रशस्तियां लिखीं जिनमें से रामशतक प्राप्य है। सोमेश्वर कालिदास के प्रशंसक थे तथा 'रघुवंश' उनका आदर्श काव्य था।

प्रह्लादन इस युग के दूसरे प्रसिद्ध कवि थे। "पार्थपराक्रम" इनका लिखा हुआ प्रसिद्ध नाटक है। इन्होंने कुछ कविताएँ भी लिखीं।

वस्तुपाल ने "नरनारायनानन्द" नामक महाकाव्य लिखा जिसमें सुभद्रा एवं अर्जुन के प्रेम सम्बन्ध का वर्णन है। बालचन्द्र का 'वसन्त-विलास' भी इस काल की महत्वपूर्ण कृति है।

जयसिंह नामक जैन साधु ने "हमीर-मद-मर्दन" नाटक लिखा जो अपने समय में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। यह कई स्थानों पर खेला भी गया। उदयप्रभा ने "संघाधिपति" महाकाव्य तथा "सुकृतकल्लोलिनी" लघु काव्य लिखा।

इस काल के कवियों के आदर्श माघ का "शिशुपालवध" तथा बाण की 'कादम्बरी' थी। महाकवि कालिदास को ये अपना आदर्श मानते थे। काव्य की दृष्टि से उस समय की रचनाएँ अधिक उच्चकोटि की नहीं कही जा सकतीं। इनके काव्य में अधिकतर अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा ही अधिक पाई जाती है।

: ३ :

वीर-काव्य (१४००-१५००) तथा आख्यानकार

चालुक्यों एवं वाघेलों के समय में गुजराती में वीर-काव्य लिखा गया। आक्रमणकारियों से अपने देश को बचाने के लिए गुजराती वीरों ने जो साहसपूर्ण कार्य किये उन्हीं का वर्णन इस समय के काव्य में है।

श्रीधर—ईडर के रणमल्ल के वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन श्रीधर लिखित 'रणमल्लछन्द' नामक काव्य में मिलता है। इसकी रचना लगभग १३६० में हुई। इसमें ७० पद्य खंड हैं। १३८५ में पाटन के वाइसराय मीर मलिक मुजा को रणमल्ल ने काफी परेशान किया। सुलतान ने बहुत चेष्टा की कि रणमल्ल आत्मसमर्पण करदे किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। जब सुलतान की सेना आक्रमण करती थी रणमल्ल अपनी मूँछों पर ताव देता था इस भाव का वर्णन इस प्रकार किया गया है :—

"साहस-वसि सुरहताण-दल समुंहरि जिम चमकन्त।
तिम रणमल्लह रोस-वसि मूछ सिहरि फुरकन्त॥"

इस काव्य में लड़ाई का वर्णन है तथा रणमल्ल के शौर्य की मुक्तकण्ठ से सराहना की गई है।

पद्मनाभ—"कान्हडदेह प्रबंध" गुजराती साहित्य में वीर-काव्य की प्रतिनिधि रचना है। जिसे सन् १४५६ में पद्मनाभ नामक कवि ने लिखा था। इसके पहले शतक में अलाउद्दीन खिलजी के सरदार अलफखां

द्वारा गुजरात काठियावाड़ के ऊपर किये गये आक्रमण का वर्णन है। इस काव्य को पढ़कर मन में देशाभिमान के भाव जागृत होते हैं।

कान्हडदेह प्रबन्ध—गुजरात का प्रसिद्ध 'रासा' है। पाटन के हिन्दूराज्य का पतन, सोमनाथ पर आक्रमण, राजपूतों का शौर्य, झालोर के राजा कान्हडे का अलाउद्दीन के घेरे में बारह वर्ष तक का निवास तथा कान्हडे के साथ एक राजपूत द्वारा किया गया विश्वासघात आदि इस काव्य के मार्मिक स्थल हैं। पराजय का वर्णन देखिए :—

"जे जे तुरक नासी ऊवल्या, अेक हानि जई जँगलि मिल्या ।
अेक उघाड़ा वस्त्र विहीण, भूखई करी ऐक थाइ खीण ।
अेक घूमन्ता जाई धाई, अेक डोडी ऊपाड्या जाइ ॥"

स्व० केशवलाल ध्रुव ने अपने आलोचना ग्रन्थ 'साहित्य अने विवेचन' में "कान्हडेप्रबन्ध" के बारे में लिखा है :—

"पात्रनिरूपण तथा रसोल्लास उत्तम है। पद्मनाभ की कविता उच्च देशाभिमान तथा प्रबल धर्माभिमान से जाज्वल्यमान है। कुछ प्रसंगों का वर्णन इतनी ओजपूर्ण भाषा में किया है कि उसे पढ़ते समय तथा सुनते समय रोमांच हो आता है।"

इस काव्य में कान्हडदेह का चरित्र एक आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह गुजराती साहित्य का गौरवग्रन्थ है।

भालन—पुराणों से प्रभावित होकर उनके आधार पर जो काव्य-शैली प्रारम्भ हुई वह "आख्यान" नाम से पुकारी गई। वह 'रास' के सदृश था किन्तु उसका वर्णन संक्षिप्त होता था। भाषा संस्कृतनिष्ठ होती थी। पुराणों की किसी आख्यायिका पर आधारित यह 'आख्यान' शैली बहुत प्रचलित हुई।

भालन का समय १४२६-१५०० माना जाता है। ये "आख्यान शैली" के जन्मदाता कहे जा सकते हैं। ये पाटन के निवासी थे तथा जाति के मोढ़ ब्राह्मण थे। पुराणों तथा प्राचीन ग्रन्थों के ज्ञाता थे। पहले ये शिवभक्त थे बाद में रामानन्दी हो गए। उद्धव तथा विष्णुदास इनके दो पुत्र थे। कृष्णभक्ति सम्बन्धी इनकी दो रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं। 'दशमस्कन्ध' भागवत के दशमस्कन्ध का अनुवाद है। इसमें राधा का वर्णन, बाल-लीला के पद तथा कृष्ण-सम्बन्धी सुन्दर पद हैं। दूसरी रचना है 'कृष्णविष्टि' जिसमें चार पद हैं। इसमें कृष्ण के दूतत्व की भूमिका रूप द्रोपदी के मनोभावों को व्यक्त करने वाला सन्देश पद्यबद्ध है। कुल मिलाकर इनके २४ ग्रन्थ माने जाते हैं--(१) बत्तीसी पूतणीनी वार्ता (२) सूडाबहोतरी (३) शिवपुराण (४) रेवाखंड (५) रणछोड़जी ना श्लोका (६) अंगदा विष्टि (७) पद्मावती (८) नदबत्तीसी (९) रावण-मदोदरी सम्वाद (१०) नलाख्यान (११) दशमस्कन्ध (१२) सप्तशती (१३) रामायण (१४) शिव भीलड़ी सम्वाद (१५) कादम्बरी (१६) ध्रुवाख्यान (१७) मृगआख्यान (१८) दुर्वासाख्यान (१९) कृष्णविष्टि (२०) जालंधराख्यान (२१) मामकी आख्यान तथा अन्य।

•

भ्रमरगीत हिन्दी में ही नहीं लिखा गया, सूरदास और नन्ददास की भांति भालन ने भी यह प्रकरण लिया है। यशोदा कृष्ण की याद करके दुःखी होती हैं और उद्धव से कहती हैं :—

"उद्धव कहेजो, उद्धव कहेजो, देवकी ने अेक बात रे।
पुत्रतणां सुख अमो भोगकां, हवे तमो थाओ मात रे।
पुनरपि द्वापर गोकुल मांहे कहान जी अवतरशे रे।
त्यारे भालण प्रभु रघुनन्दन अमशु अेमज करशे रे।"

—दशमस्कन्ध

भालन ने 'बाणभट्ट की कादम्बरी' के आधार पर कादम्बरी लिखी। ये उनकी महत्वपूर्ण कृति है। इस 'रासा' में एक माता अपने पुत्र के वियोग में उसकी अनेक क्रीड़ाओं की याद करती हुई कहती है :—

"वात करतो राम कहि, मिथ्या गमु ए काल ।
हृदि शूं चांप्यु नहीं, चुंबन देई बाल ।।
नाहाना नाहाना दंत विनि, सुन्दर मुखनु वान ।
पुत्र हसतु नहीं दीठु, करावतां पय पान ।।
चरण वागि घूघरी, अंगुली वलगु जाय ।
ए सुख हूं पामी नहीं ! हवि करुं किशु उपाय। ।
नेसाली थी मणी आखि, पाटी खडिउ हाथि ।
आइ ! कहीं बोलावतु धरि बाल घालि बाथि ।।
ए अरिअ वीतु नहीं, जे पुत्रमाता नाम ।
एणी पिरि मनि दुःख आणि नित्य परति स्वामि ।।"

भालन ने गरबियाँ भी लिखीं जिनमें श्रीकृष्ण के जीवन से सम्बधित झाँकियां हैं। जसोदा द्वारा कथित यह गरबी गुजरात में आज भी प्रसिद्ध है। कृष्ण मथुरा चले गये हैं। यशोदा को कृष्ण की याद आ रही है। वह कल्पना करके कृष्ण से बातचीत करती है :—

"मीठडा मावजी रे, मारे मन्दिर आवो।
प्रेमे पीरसुं परमानन्द, कुर ने दूध शीरावो।
मथुरा रिद्धि पाभ्या घणी, आध्यु छे अति तेज रे।
सही जाणजो मारा सरखुं, को नहिं आणे हेज।
धवरावीने हैंडे चांपती, त्यम देवकी नहिं चांपे रे।
रोमांचित मारी देहडी थाती, त्यम तेनी नव कांपे।
माता नहिं थाउं तमारी, धाव कहीने जाणो रे।
में बांध्यो जे माखण माटे, तेणे रोष भराणो।

कालिंदी मांहे तम ऊपर, जे हुँ नव झंपावी रे।
जाणु छु ँ ते बात संभारी, रीस मनमांहे आवी।
तें कीधो त्यय कोय दे नहिं, प्रीत करीने छेहरे।
भालणप्रभु रघुनाथ संभारों, एक घडीनो नेह ॥"

कादम्बरी की रचना करने के कारण भालन का स्थान मध्यकाल के कवियों में अक्षुण्ण है। इन्होंने ही "गुर्जर भाषा" शब्द प्रयोग अपने काव्य में सर्वप्रथम किया। आख्यान पद्धति के ये जन्मदाता हैं। इनकी प्रारम्भ की हुई आख्यान शैली नाकर से लेकर प्रेमानन्द तक का दिशा-निर्देश करती रही तथा दयाराम तक ने उससे प्रेरणा ग्रहण की। इस के अतिरिक्त आधुनिक कवि दलपतराय, केशवलाल ध्रुव तथा सुन्दरम् तक पर इनका प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

रामलाल मोदी कृत 'भालण' की प्रस्तावना में लिखा है :—

"अपने साहित्य को पल्लवित करके भालन ने अपने गौरव की स्थापना की है। सर्वप्रथम "कादम्बरी" का गुजराती काव्य में रसात्मक अनुवाद करके तथा अन्य भाषाओं के साहित्य की तुलना में अपना साहित्य रखकर तथा वात्सल्य रस का आलेखन करके गुजरातियों का मुख उज्ज्वल किया है।"

नाकर—ये भी आख्यानकार थे। ये बड़ौदा-निवासी थे। इन्होंने लगभग बीस आख्यान लिखे। इन्होंने दस महाभारत पर्व तथा ध्रुव, नल, हरिश्चन्द्र, अभिमन्यु, चन्द्रहास, लव-कुश, मोरध्वज तथा ओखा सम्बन्धी आख्यान लिखे। इन्होंने भालन की काव्य-पद्धति का अनुकरण किया। प्रेमानन्द के बड़े आख्यानों के लिए नाकर ने कच्चा माल तैयार किया।

भीम—ये सिद्धपुर पाटन के निवासी थे तथा मोढ़ ब्राह्मण जाति के थे। इन्होंने बोपदेव की भागवत के संक्षिप्त सार के आधार पर

अपनी भाषा में कथारूप में लिखा। इनकी दूसरी कृति 'प्रबोध-प्रकाश' है जो कि कवि कृष्णमिश्र के संस्कृत 'प्रबोध-चन्द्रोदय' नाटक का भाषान्तर है। इनका एक ग्रन्थ 'हरिलीलाषोड़शकला' भी है।

केशवदास—ये प्रभास पाटण के वाल्मीकि कायस्थ थे। इन्होंने 'सारोद्धारी काव्य' लिखा जिसमें भागवत के दशमस्कन्ध के बाद हरिवंश तथा अन्य पुराणों तथा दन्तकथाओं का उपयोग किया गया है। कुछ विद्वान रस की दृष्टि से भालण तथा प्रेमानन्द के भागवत अनुवादों से इनका अनुवाद अधिक अच्छा मानते हैं।

मधुसूदन व्यास—ये खेड़ा जिला सारसा के निवासी थे। खंभात की राजपुत्री सम्बन्धित इनकी पद्य-वार्ता "हंसावती–विक्रमकुमार—चरित्र" प्रसिद्ध है। ये करुण रस से ओतप्रोत है। रस तथा अलंकार दोनों ही दृष्टियों से यह सुन्दर रचना है।

गणपति—ये आमोद निवासी थे तथा जाति के कायस्थ थे। इनकी रचना "माधवानलकामकन्दलादोग्ध" शृङ्गार रस की श्रेष्ठ रचना है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पन्द्रहवीं शताब्दी में आख्यान-शैली का पर्याप्त विकास हुआ तथा संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थों के आधार पर आख्यान-शैली में पर्याप्त रचनाएँ हुईं।

: ४ :

भक्ति-काव्य का प्रादुर्भाव

१६वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भक्ति-आन्दोलन सारे भारतवर्ष में व्याप्त हो चुका था। श्रीकृष्ण की भक्ति की किरणें भारतवर्ष के इस छोर से उस छोर तक फैल चुकी थीं। भागवत तथा गीता का प्रचार भी पूर्णरूपेण हो चुका था।

भक्ति का प्रारम्भ अलवारों से प्रारम्भ हुआ। विष्णु पुराण में विष्णु को वासुदेव चित्रित किया गया है। इसमें विष्णु भगवान हैं तथा मनुष्य उनकी भक्ति करके अपना कल्याण कर सकता है। भक्ति सूत्र में नारद ने भी भक्ति का विशद विश्लेषण किया है।

वैसे दसवीं शताब्दी में ही दक्षिण से भक्ति आन्दोलन ने महत्वपूर्ण स्थान ले लिया था। अलवार सन्तों ने भक्ति के गीत गाये जो वैष्णववेद के नाम से प्रसिद्ध हुए। अलवारों के बाद भक्ति-आन्दोलन को आचार्यों ने बढ़ाया।

सन् १००० में श्री यामुनाचार्य तथा उनके नाती श्री रामानुज ने अपना रामानुज सम्प्रदाय चलाया। लगभग ११५० में निम्बार्क ने निम्बार्क-सम्प्रदाय चलाया जिसमें कृष्ण के साथ राधा को भी महत्व दिया गया। ११९९ में माधव ने माधव-सम्प्रदाय चलाया। विष्णु स्वामी जिनके शिष्य वल्लभाचार्य हुए, उन्होंने भक्ति का प्रचार किया। वल्लभाचार्य ने पुष्टिमार्ग चलाया जिससे प्रभावित अष्टछाप के कवि हुए जिनमें सूरदास तथा नन्ददास प्रमुख थे।

चैतन्य महाप्रभु ने वैष्णव धर्म का पर्याप्त विकास किया। चैतन्य ने वृन्दावन में आकर भक्ति-रस के सागर में गोते लगाये।

सोलहवीं शताब्दी में वृन्दावन के सम्प्रदाय का प्रभाव गुजरात पर पड़ा तथा मीराबाई तथा नरसी मेहता पर यहां के साधुओं तथा भक्तों का बहुत प्रभाव पड़ा।

गुजराती विद्वान स्व. गो. मा. त्रिपाठी ने अपने ग्रन्थ Classical Poets Of Gujrat में भक्ति की व्याख्या इस प्रकार की है :—

"भक्ति नवीन धर्म की आत्मा तथा प्राण है। भक्ति एवं उससे सम्बन्धित सब भावों को व्यक्त करने वाला अंग्रेजी में कोई शब्द नहीं। Worship (पूजा), Prayer (प्रार्थना), Devotion (परायणता) आदि शब्दों में भक्ति के सम्पूर्ण अर्थ का समावेश नहीं होता। देवता के सम्मुख खड़े-खड़े सेवा करना, उनके ऊपर प्रेम रखना तथा उनका प्रेम पात्र होना, उनके साथ सम्भाषण करना, उनके प्रत्यक्ष दर्शन करना, उनका श्रवण करना तथा सब उपभोग देवता को ही कराना, इस सब का नाम भक्ति है।"

गुजराती साहित्य में भक्तिपूर्ण कविताओं तथा कवियों का विशाल भंडार है जिनका योग भक्ति सहित्य में अक्षुण्ण है:—

मीराबाई—गुजराती भाषा के भक्ति-साहित्य में मीरा का विशिष्ट स्थान है। इनका सारा जीवन कृष्ण की भक्ति में बीता। समस्त भारत-वर्ष में मीराबाई के पद गाये जाते हैं। "मेरो तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई" वाली पंक्ति इन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाई। मीरा के पितामह दूदाजी सच्चे भगवद्भक्त थे। मीराबाई का जन्म सन् १५०० के लगभग हुआ। बाल्यकाल में इनपर इनके बाबा की वैष्णव भक्ति का प्रभाव पड़ा। इनका विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ जिनकी मृत्यु सन् १५०७ में हो गई। विधवा

मीरा भक्ति-रस में डूब गई। मन् १५३२ में राणा साँगा के द्वितीय पुत्र विक्रम गद्दी पर बैठे। मीरा को सांसारिक बनाने में इनके ससुराल वालों ने सब चेष्टाएँ कीं लेकिन सब विफल हुई। राणाने इन्हें मारने की चेष्टा की किन्तु इन्हें दिया हुआ जहर का प्याला अमृत का प्याला हो गया। इन्होंने तीर्थयात्रा भी पर्याप्त की। ये कृष्ण की खोज में ब्रज में भी घूमीं। अन्त में ये द्वारका पहुँचीं जहां इनकी मृत्यु हुई। इनकी रचनाएँ राजस्थानी, ब्रज तथा गुजराती में मिलती हैं। मीराबाई के गुजराती पद वृहत काव्य दोहन भाग १,२,५,६ और ७ में प्रकाशित हैं। इनकी एक और रचना "सत्यभामानुं रूसणुं" नाम से भी प्राप्त होती है। इसमें परिजात पुष्प न पाने पर सत्यभामा के मान और कृष्ण द्वारा उनके मनाये जाने का वर्णन है।

मीरा की भक्ति में कृष्ण के दर्शन की उत्कट अभिलाषा मिलती है। ये कृष्ण से मिलने का कितनी आतुर थीं यह इस पद में देखिए :—

"कानुडे न जाणी मोरी पीर, बाइ हुँ तो बालकुंवारी रे
जल रे जमनां अमे पाणीडां गयां तां वाहाला,कानुडे उड्ाड्यां आछां नीर
उडयां फरररररर रे।
वृंदारे वनमां वा ले रास रच्या छे, सोलसें गोपीनां ताण्यां चीर,
फाटयां चरररररर रे।
हूँ वरणागी कहाना तमारा रे नामानी रे, कानुडे मार्या छे अमने तीर
वाग्यां अरररररर रे।
बाई मीरां के प्रभु गिरधर नागर, कानुडे बाली ने फेंकी उंचे गिर,
राख उडे फररररररर रे॥"

मीरा सगुण भक्ति की उपासिका थीं किन्तु निम्निलिखित पद में उन्होंने निर्गुण भावधारा की झलक दिखाई है :—

"मारा प्राण पातलिया वहेला आवो रे तमरे बिना हूँ तो जनम जोगण छु,
नाभि कमल थी सुरता रे चाली जइ ने तखत पर रास रचीला रे,
सुखमना नाडी अेनी सेज बिछावे ने दी रंग मीना छे रास धारी।"

मीरा में भावातिरेक मिलता है। वे स्वप्न में अपने प्रिय कृष्ण का दर्शन करती हैं और उस स्वप्न को सत्य से अधिक मानती हैं। प्रेम में डूबी हुई मीरा तन्मयता में गाती हैं:—

"प्रेमनी प्रेमनी प्रेमनी रे मने लागी कटारी प्रेमनी।
जल जमुना मां भरवा गयांतां हती गागर माथे हेमनी रे।
काचे ते तातणे हरि जीए बांधी जेम खेंचे तेम तेमनी रे।
मीरां कहे प्रभु गिरधर-नागर शामली सुरत शुभ एमनी रे।"

मीराबाई जन्म से गुजराती नहीं थी। द्वारका रह कर इन्होंने गुजराती सीखी ऐसा प्रतीत होता है। यद्यपि इनके पद शृंगारमय दीखते है किन्तु वास्तव में वे शुद्ध प्रेम से ओतप्रोत हैं। मां तथा पुत्री इन पदों को साथ में गाती हैं जिन्हें हजारों नर-नारियां सुनती हैं। गुजराती इतिहासकार श्री हिम्मतलाल गणेशजी अंजारिया मीराबाई के काव्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं—"मीराबाई की रचना में विषय की विविधता नहीं है। वे तो भक्ति की धुन में तल्लीन हैं। कृष्ण के साथ ही अपना सारा समय बिताती हैं, कृष्ण के सत्संग में आनन्द मनाती हैं। कृष्ण–विरह से उत्पन्न प्रेम-पीड़ा प्रकट करती हैं।······कृष्ण और कृष्ण की भक्ति के प्ररेणा-स्वरूप हार्दिक भाव, उनकी कविता में सर्वत्र व्याप्त हैं। मीराबाई को ज्ञान या उपदेश, आनन्द या उल्लास, धर्म या कर्त्तव्य इनमें एक की भी आवश्यकता नहीं है। वे तो भक्ति में मस्त और कृष्ण सेवा में मग्न हैं। भक्ति की धुन में तन्मय होकर भजन गाना, कृष्ण के साक्षात्कार का

अनुभव करना और जीवन को कृष्ण के चरणों में कृष्ण के साथ एक **रूप होने** में बिता देना ही उनका आनन्द है।"

नरसी मेहता—गुजराती के भक्त कवियों में नरसी मेहता का नाम **अग्रगण्य** है। "वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे" पंक्ति के रचयिता नरसी मेहता ही थे। इनके हृदय में भक्ति का संचार सदैव हुआ करता था।

इनकी जन्म-तिथि के बारे में विद्वानों में मतभेद है। इतना सर्व-मान्य है कि इनका समय सन् १४१५ से १४८१ तक रहा। ये जूना-गढ़ के नागर ब्राह्मण थे। बचपन में ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। बाल्यकाल से ही इनका झुकाव श्रीकृष्ण की ओर था। इनके भाई ने इनका पालन-पोषण किया। इनकी भाभी ने एक दिन इन पर व्यंग्य करते हुए कहा, "यह तो घर के कुछ भी काम का नहीं है इससे धोबी का पत्थर अच्छा।" इनको यह बात चुभ गई। यह सुन कर ये समुद्र के किनारे चले गये तथा इन्होंने गोपनाथ के मन्दिर में यह व्रत लिया कि जबतक इनकी इच्छा पूरी नही होगी तबतक ये घर नहीं जायेंगे। शिवजी प्रसन्न हुए और इनको द्वारका ले गये। वहां इनको रासलीला दिखाई गई जहां कृष्ण के दर्शन इन्हें हुए। घर लौट कर इन्होंने अपनी भाभी के पैर छुए तथा यह पद कहा—

"धन्य भाभी ! तमे धन्य माता पिता ! कष्ट जाणी मने दया रे कीधी
तमारी कृपा थी हरिहर भेटिया, कृष्णजीए मारी सार लीधी"

इनकी पत्नी का नाम मानिकबाई था। सामल इनके पुत्र तथा कुँवरबाई इनकी पुत्री का नाम था। सांसारिक लोग इनकी भक्ति का मजाक बनाते थे किन्तु विनम्रता पूर्वक ये सब को सहन करते थे। ये कृष्णभक्त नर-नारियों को इकट्ठा करके पद तथा भजन गाते थे तथा करताल बजाते थे। गरीबों के प्रति इनके हृदय में बहुत प्रेम

था। ये अछूतों तथा गरीबों से खुलकर मिलते थे तथा उन्हें भक्ति सिखाते थे। वे गाते थे।

"कुल तजशे ने हरिने भजशे, सहेशे, ससारनु महेणु रे।
भणे नरसैयो हरि तेने मलशे, बीजी वाते वोहणु रे।।"

अर्थात् जो अपने परिवार को त्याग देता है, हरि की पूजा करता है तथा दुनिया के व्यंग्य सहन करता है, वही (नरसी मेहता) हरि से मिलेगा। दूसरे लोगों का जीवन व्यर्थ है।

नागर ब्राह्मण पुराने विचारों के थे। नरसी मेहता एक दिन एक भंगी के यहां भजन गाने चले गये। जातिवालों ने इन्हें जाति से निकाल दिया। इस पर इन्होंने कहा—

"निरधन ने वली नातनागरी, हरि न आपीश अवतार रे"

अर्थात् हे प्रभु, मुझे निर्धनता मत देना तथा नागर जाति में जन्म मत देना। इनके बाद के कवियों ने इनके जीवन सम्बन्धी ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया है। यह भी कहा जाता है कि वह कृष्ण पर हुंडी लिख कर रुपया लिया करते थे तथा कृष्ण ने उनकी हुंडी सकारी।

इनका पारिवारिक जीवन अत्यन्त दुःखद रहा। नरसी मेहता की रचनाएँ हैं—सुरतसंग्राम, गोविंदगमन, चातुरी छत्तीसी, चातुरी षोडसी दाण लीला, सुदामाचरित, रास सहस्रपदी, शृङ्गारमाला, बाललीला, हींडोलानां पदो, भक्तिज्ञाननां पदो, कृष्ण जन्म सम्बन्धी पद, वसंतनां पदो, सामलदासनो विवाह, हारमाला।

इनकी अधिकांश रचनाएँ कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित हैं। इनके पदों में ज्ञान तथा भक्ति के दर्शन होते हैं। नरसी भक्ति को दुनिया का श्रेष्ठ पदार्थ मानते हैं। वे कहते हैं—

"भूतल भक्ति पदारथ मोटुं, ब्रह्मलोक मां नाहीं रे"

वे यहां तक कहते हैं कि भक्ति बिना जीवन बेकार है :—

"भक्ति बिना जे जिन जीवे ते केम कहीये मानव देह रे"

नरसी मेहता ढोंग के विरुद्ध थे। उनका विश्वास था कि जिसने अपनी आत्मा की उन्नति नहीं की तथा ब्रह्म को नहीं पहचाना उसका जीवन व्यर्थ है :—

"शूं थयूं स्नान सेवा ने पूजा थकी ? शूं थयूं घेर रही दान दीधे ?
शूं थयूं खटदर्शन सेवा थकी ? शूं थयूं वरणना भेद आणे ?
ए छे परपंच सहु पेट भरवा तणा आत्माराम परिब्रह्म न जोयो
भणे नरसैंयो तत्व दर्शन विना रत्न चिंतामणि जन्म खोयो"

गुरु के महत्व को स्वीकार करते हुए नरसी ने यह दोहा लिखा है :

श्री गुरुने प्रणाम करीने, बर्णवुं श्री जदुराय ;
श्री कृष्णनी लीला सांभलता पातिक दूर पलाय ॥

नरसी ने अपने पदों में ब्रजभाषा का प्रयोग भी किया है। यथा :-

वृन्दावननी कुंजगलनमे महिडाँ बेचण रे ।
महि मटुकी शीर पर लीधी चाली वननी बाटी रे ॥

जब कृष्ण को उनके मामा अक्रूर मथुरा लेने आये उस समय गोपियों की दशा अत्यन्त दयनीय हो गई। गोप तो क्रोधित होकर उसे मारने तक को तैयार हो गये :—

कृष्ण जवानुं सांभल्यूं गोपियो ए ज्यारे जी।
बाघ देखी अजा जेवी तेम थई स्त्रियाँ त्यारे जी।
कोना ससरा स्वामी पिता भ्राता हुता जी।
माटे "गले झलाइ" गई त्यांथी सौको दुहिता जी।
वली त्यां गोप सखाए सुण्युं गमन जी।
तिणे तो अक्रूर मारवानुं कीधुं मन जी।

नरसी मेहता ने कृष्ण लीला के प्रायः सभी अंगों पर सुललित एवं रसप्लावित पद लिखे हैं। इन पर वल्लभ सम्प्रदाय, चैतन्य सम्प्रदाय

तथा अन्य सम्प्रदायों का भी प्रभाव पड़ा है। इन्होंने आख्यान शैली, पद शैली तथा मुक्तक शैली में अपनी काव्य रचना की है। मुख्यतः इन्होंने पद लिखे हैं जिनकी संख्या लगभग ७४० है। ये पद शृंगार-माला नाम की पुस्तक में संगृहीत हैं। इनकी कविताओं की विषय-वस्तु अधिकांशतः भागवत पर आधारित है। सुरतसंग्राम में कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन है। आख्यानों की अपेक्षा इसमें संग्रहित कविताएँ उच्च स्तर की हैं।

महात्मा गांधी द्वारा प्रचारित एवं प्रशंसित नरसी मेहता द्वारा लिखित यह पद देखिए जिसमें नरसी ने अपना जीवन दर्शन दिया है—

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड पराइ जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे ते, मन अभिमान न आणे रे।
सकल लोकमाँ सहुने वदे, निंदा ते न करे केनी रे।
वाचकाछमन निश्चल राखे तो, धन्य धन्य जननी तेनी रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जे ने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहि ते ने, हठ वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनाममुं तालो रे लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।
वणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध ने निवार्यो रे।
भणे नरसैंयो तेनु दरसन करतां, कुल इकोतेर तार्या रे।

नरसी की प्रभातियाँ भी अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। भाषा सरल एवं भाव-गम्भीर इनकी विशेषता रही है। गुजराती साहित्य में ये सर्वोत्कृष्ट कवियों में से एक हैं।

अखा—ये १७वीं शती के कवि हैं। इनका समय १६१५–१६७४ है। ये अहमदाबाद के सुनार थे। इनकी बहन बचपन में मर गई थी। इससे इनके हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो गया। एक स्त्री जिसे ये अपनी

बहन मानते थे, उसने इन्हें ३००) रुपये अमानत के रूप में रखने के लिए दिये। उस स्त्री को किसी ने बहका दिया कि उसके रुपये डूब जायेंगे। उस स्त्री ने इनसे कहा कि ये उसे ३००) रुपये की कण्ठी बना कर देदें। इन्होने ४००) रुपये की बना कर दी। तब भी लोगों ने उसे बहकाया कि खराब सोना होगा। जब सोना दिखाया गया तब भी वह ४००) रुपये का हो गया। अखा पर इस काण्ड का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। उनको दुनिया से घृणा हो गई। उनको अनुभव हुआ कि इस दुनिया में स्वार्थ का बोलबाला है। इसी कारण इनकी कविता में व्यंग्य बहुत मिलता है। जिस प्रकार कबीर ने हिन्दी में व्यंग्य लिखा उसी प्रकार अखा ने गुजराती में लिखा।

अखा गोकुल में गोस्वामी जी से मिले किन्तु उन्हें वहा ढोंग ही नजर आया। उन्होंने सोचा जब गुरु को ही ब्रह्मज्ञान नहीं है तो वे अखा को क्या ज्ञान देंगे? अखा ने लिखा :—

गुरु थई बैठो होंशे करी, कंठे पहाण, शकेश्यम तरी ?
पोते हरि नहीं जाणे लेश, काढी बेठो गुरुनो वेश ।

अखा के निम्नलिखित ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं :—अखे गीता, चित्र विचार सम्वाद, पंचीकरण, गुरुशिष्य-सम्वाद, अनुभव बिन्दु, कैवल्यगीता, ब्रह्मलीला (हिन्दी में), परमपद प्राप्ति, पटपदी (छप्पा) तथा पंचदशी तात्पर्य, इसके अतिरिक्त और भी अनेक पद लिखे हैं।

अखा वर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध थे। अछूतों को निम्न समझना तथा ब्राह्मणों और वैश्यों को उच्च समझना वे नहीं मानते थे। उन्होंने लिखा है :—

आभड़छेट अन्त्यजनी जणी, ब्राह्मण वैष्णव कीधा घणी
त्यम ऊँच नीच न गणे नारायण...............
भूतपंचनो आ संसार, मूरख ते वहे वर्ण अहंकार,

भात चालवा वर्णावर्ण, को मस्तक हस्त कटि चर्ण,
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ने शूद्र, हरिनो पिंड अखा कोण क्षूण ।

अखा ने कवियों को भी अपने व्यंग्य-बाणों का शिकार बनाया है। कवियों के शब्दाडम्बर तथा ब्रह्मज्ञानी न होने पर उन्होंने लिखा :—

कविए शक्य जणावा काज, गाजे जेम रोहेणीनो गाज
... ...

पूजावा मनमां बहु कोड, शब्दतणा जोडे छे जोड,
... ...

कवि थइने अधिकुंशुं कव्युं, जोतां नहीं ब्रह्म अणचव्युं
रागद्वेषनी पूंजा करी, कवि व्यापार वेठो आदरी,
तेमां अखा शूं पामे लाभ.....................

अखा को तिलक, छापा, कथा आदि में विश्वास नहीं था। इनकी हँसी उड़ाते हुए वे कहते हैं :— .

तिलक करतां त्रेपन वह्यां जपमालानां नाकां गयां,
तीर्थ फरीफरी थाक्या चर्ण, तो य न पहोंता हरिने शर्ण
कथा सुणी सुणी फूट्या कान, अखा तोय नाव्यूं ब्रह्मज्ञान

धार्मिक मतभेदों पर अखा ने लिखा है :—

"आपे आपमा उठी बला, एक कहे राम ने एक कहे अल्ला ।"

व्यंग्य-काव्य के अतिरिक्त उन्होंने भक्तिरस से पूर्ण कविताएँ भी लिखी हैं। भक्त का वर्णन करते हुए अखा लिखते हैं :—

गद्गद् कंठे गाते थके रोमांचित होये गात्र,
हर्ष आंसु बहु हेत हृदय प्रेम कर्से ते पात्र,
खातो पीतो बोलतो देखतो ते सगले राम,
वेध्युं मन रहे तेहनुं शिथिल संसारी काम,
नवनीत सरावुं हृदे कोमल कहयुं न जाए हेत

आंख माँहे अमृत भरियुं हरि भक्ति केरु क्षेत्र,
ज्यम जार वलुंधी युवती तेनुं मन रहे प्रीतम पास,
आहर्निश रहे आलोचती माइ एहकुं मन हरिदास।

व्यंग्य-काव्य, भक्ति-काव्य के अतिरिक्त उन्होंने दार्शनिक-काव्य भी लिखा। अखा कहते हैं, अफीम और संसार का रस एक-सा है। जितना इन्हें सेवन करो उतनी ही प्रवृत्ति बढ़ती है। वे लिखते हैं : -

एक अफीण बीजो संसीरो रस, अधिक करे तेम आपे कस
जेम-जेम अधिकुं खातो जाय, अगे अकले हीणो थाय,
जो मूके तो मुवे सरे, नहीं तो अखा ते खातो भरे

इसी प्रकार संसार की विशदता का वर्णन दार्शनिक दृष्टिकोण से करते हुए कवि लिखते हैं :—

वारिधि केरुँ वारि, चार दिश मध्ये चाले;
पृथ्वी पर पथराय, वनराजी फूले फाले
अगर तूं रहे अंबु सर्व ढली आवे ढाले;
ते नदी नाम धराय; न्हाय सहु, बहु महिमा लेहे
गर्व भरी गाजे अखा ! शस्त्र न जुए सरिता सही,
जेम सागर, तेम श्री हरी; वच्चे जीवनदी वही,
... ...

जेम जाय ऋतु जलद, शरद, ऋतु रुड़ी दीसे
दामिनी दमक पलान; वाय हलवे मन हींसे;
चहुदिश चमके चंद; धंद सहु मननूं भागे;
तेम भागे भवभ्रांति कांति द्वितीयानी आगे

जिस प्रकार चन्द्रमा की आभा सब संसार में व्याप्त है उसी प्रकार परमात्मा की ज्योति से सब का हृदय आलोकित रहता है।

उदय उजालो दे जेम चन्द्रमा जी,
किरण तेह्नां पसरे वनवीथी मंद्रमां जी,
तेम सरखो आतम भासे कीट इन्द्रमांजी,
एह्वो प्रगट्यो हृदयाकन्द्रमांजी

५

प्रेमानन्द तथा उनके समकालीन कवि

प्रेमानन्द का स्थान गुजराती साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि उनको भक्तिकाल का सर्वोच्च कवि कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। ये बड़ौदा के थे। इनके पिता का नाम कृष्ण था। ये साठोदरा ब्राह्मण जाति के थे। रामचरन संन्यासी के सत्सङ्ग में इन्होंने उत्तरी भारत का भ्रमण किया तथा संस्कृत और हिन्दी भाषाओं का अध्ययन किया। पहले इन्होंने हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया किन्तु गुरु के कहने से गुजराती जो कि इनकी मातृभाषा थी, उसमें लिखना प्रारम्भ किया।

अपने बाद में इन्होंने ५२ शिष्य छोड़े जिनमें १२ स्त्रियाँ थीं। गुजरात के नर-नारियों में इनकी कविताएँ अत्यन्त प्रिय थीं। इनकी ५७ रचनाएँ हैं। मुख्य रूप से इन्होंने महाभारत, भागवत, मार्कण्डेय पुराण तथा रामायण की कथाओं पर अपनी काव्य-रचना की। महाभारत की कथाओं पर आधारित इनके ग्रन्थों के नाम हैं—चन्द्रहंसाख्यान, ऋष्यशृंगाख्यान, द्रोपदीस्वयंवर, मांधाताख्यान, भगवद्गीता, नलाख्यान, द्रोपदीहरण, सुभद्राहरण, अष्टावक्राख्यान। भागवत पर आधारित इनके ग्रन्थ हैं—लक्ष्मणहरण, ऊरवाहरण, सुदामाचरित, वामनचरित्र, दानलीला, सप्तम-स्कन्ध, रुक्मिनीहरण तथा ध्रुवाख्यान। मार्कन्डेयपुराण पर आधारित ग्रन्थ मदालसाआख्यान, हरिश्चन्द्राख्यान तथा देवीचरित हैं। नरसिंह मेहता के जीवन पर आधारित इनकी रचनाओं में विवाह, हुंडी, हारमाला, श्राद्ध तथा मामेरु हैं। फुटकल ग्रन्थों में स्वर्गनिसरणी तथा भ्रमरपचीसी हैं। इसके

अतिरिक्त इन्होंने तीन नाटक भी लिखे—(१) रोषदर्शिका सत्यभामाख्यान (२) पांचालीप्रसन्नाख्यान (३) तपसाख्यान।

प्रेमानन्द ने गुजराती भाषा की सेवा करने का व्रत लिया था। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक वे गुजराती भाषा की उन्नति नहीं कर लेंगे तब तक पगड़ी नहीं पहनेंगे। उन्होंने लिखा—

सांगोपांग सुरंग व्यंग अतिशे, धारो गिरा गुर्जरी,
पादे पाद रसाल भूषणवती, थाओ सखी उपरी।
जे गीर्वाण गिरा गणाय गणतां, ते स्थान ए ल्यो वरी,
थाये श्रेष्ठ सहु सखी जन थकी, ए पाश पूरो हरि॥

प्रेमानन्द ने अभिमन्यु आख्यान में शुक्राचार्य का वर्णन निम्न प्रकार से किया है—

वृद्ध वेश कर ग्रही लाकड़ी, वागे ठेस पडे आखड़ी,
जलजलां नेत्र जुवे ऊरुंपरुं, माथे वांध्युं फाटुं चीथरुं,
थर थर देहड़ी ध्रुजे जदुराय, कायामां प्रगट्यो कंप वाय,
मुख नासिकाये लालो चूवे, कर कपाले दई आडुं जूवे,
पेटे वली छे कर चली, दीनबंधु दुबला जाणे पेपली,
उधरसनो ठोंसो ने चढे श्वास, खई रोगिया थया अविनाश,
खों खों खों खुंखारो करे, मोम पड़े ने पग लडथडे,
नीसरी खुंध कटी बेवड वली, पगे वायु ने माथे पली,
खोडांगतो चाले कानुवो वांकुं घुंटण पगे जानुवो,
वलगे जीभ बोलता आवे शूल, ओढ्यो कामलो पहेर्युं वनकूल,
एवे रुपे परमेश्वर पल्या, अहिलोचने सामा मलया।

प्रेमानन्द ने नरसी मेहता की उस हुंडी का वर्णन जो उन्होंने कृष्ण पर द्वारका में करी थी, इस प्रकार किया है—

वहालो गोमती जीना घाट मांरे, मल्यो तीरथवासीने वाटमां रे,
वेश पुरो आण्यो मारे वहाले रे, नाथ चउटानी चाले चाले रे,

छे अवला आंटानी पाघड़ी रे, वालाजीने केय बांधतां आवडी रे ?
दीसे वाणीओ भीन वान रे, एक लेखण खोसी छे कान रे ।।

... ...

त्रिकम जी वणिक नो तोले रे, नाथ उतावलु ने बोबडु बोले रे,
सोनानी सांकली ने कंठे दोरो रे, केडे पाटीवालो कंदोरो रे,
झलके धनरेखा हथेलिमां रे, आंगलीए वींटी ने वेढीआं रे,
एक ओढी पछेड़ी खांधे रे, नाथ दुंदालो ने मोटी फांदे रे ।

इनके काव्य में रसों का परिपाक एवं अलंकारों का सौन्दर्य मिलता है। जहां इन्होंने भक्ति विषयक ग्रन्थ लिखे हैं वहां काव्य-चमत्कार दिखाने वाले ग्रन्थ भी लिखे हैं। इनके काव्य में उत्प्रेक्षा तथा रूपक तो पग-पग पर मिलते हैं। इन्होंने सामाजिक परिस्थितियों का भी अपने काव्य में चित्रण किया है।

प्रेमानन्द ने कृष्ण-जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओं का अपने काव्य में अत्यन्त मनोरंजक ढंग से वर्णन किया है। यशोदा उद्धव से कृष्ण को सदेश भिजवाती है कि उससे आकर मिल अवश्य जायें। यदि अकेले आना न हो सके तो देवकी को साथ लेते आवें—

ओधवजी कहेजो वंन्यो भ्रातने, सुखेणी करजो देवकी मात ने ।
रखे छेह देता वसुदेव तात ने, अेकबार मलजो अमो अनाथ ने ।।
दुर्लभ जाणी गोप ने समे गोकुल आवजो ।
धीरे नहीं जो देवकी तो साथे तेडी लावजो ।।

कृष्ण जब नाग का वध करने यमुना जी में कूद जाते हैं तब यशोदा अत्यन्त दुःखी हो जाती है। करुण रस से पूर्ण यशोदा की मनोदशा का वर्णन प्रेमानन्द के शब्दों में देखिए—

"संतान रूपिपुं मोदुं धन ते करमें लीधूं लूटी,
में नव जाण्युं जतन करीने रतन पड़ी केम छूटी ।

पुत्र पार्यो हूँ छेल्ले आश्रमे ऊछेयों प्रतिपाली।
नीयनो रस ढली गयो, हुँ वियोग अंगे बाली ॥"

... ...

"तुं प्राणेश्वर तुं गोपेश्वर गोपी देह केम धरशे ?
बाल सखानी कोण वले ? आ गायो हीसी हीसी मरशे।"

वास्तव में प्रेमानन्द ने गुजराती साहित्य की अभिवृद्धि करने में प्रशंसनीय कार्य किया। उनका स्थान गुजराती साहित्य में अक्षुण्ण है।

शामल भट्ट—इनका जन्म सन् १७०० में तथा मृत्यु सन् १७६६ में हुई। ये वेगपुर (आजकल का नाम-गोमतीपुर) जिला अहमदाबाद के गोडमालवी ब्राह्मण थे। संस्कृत, हिन्दी तथा ब्रजभाषा का इन्हें अच्छा ज्ञान था। इनके 'छप्पे' बहुत प्रसिद्ध थे। इन्होंने भी अपनी काव्य-रचना संस्कृत के ग्रन्थों के आधार पर की। शामल ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक कोई निमन्त्रण न देगा वे किसी आश्रयदाता के यहां नहीं जायेंगे। इनके ग्रंथ इस प्रकार हैं :—बत्तीस पूतणीनी वार्ता, सूडाबहोतेरी, शिवपुराण, रेवाखड, रणछोड़जी ना श्लोका, अंगदविष्टि, पद्मावती, नन्दबत्रीसी, रावण मंदोदरी सवाद, उद्यमकर्म संवाद, शामलरत्नमाला, विनेचटनी वार्ता, अभराम कुलीना शलोको, बरासकस्तूरी, चन्द्रचन्द्रावती, कालीमाहात्म्य, शुकदेवआख्यान, मुन्दर-कामदार, द्रोपदी वस्त्रहरण, भोजकथा, पन्द्रमीविद्या, रबीदास चरित्र, विश्वेश्वराख्यान तथा मदमोहना।

इन्होंने अपने ग्रंथों में नर नारियों के गुण दोषों का वर्णन किया है। इनके कुछ ग्रंथ वर्णनात्मक हैं तथा कुछ बोधात्मक। एक शिक्षात्मक 'छप्पा' देखिए :—

"पेट करावे वेठ, पेट वाजा वजडावे
पेट उपडावे भार, पेट गुण सोना गावे।

पेट भमे परदेश, पेट थी पाप करे छे,
पेट करे छे जार, पेट थी सत्य हरे छे,
वणी संच प्रपंच अधिक करे, पेट काज नरके पडे;
शामण कहे साचुं मानजो, पेट पाप नरने नडे।"

प्रेमानन्द पौराणिक थे तथा उनकी ख्याति अधिक थी जो शामल को असह्य थी। यद्यपि ये प्रेमानन्द के पुत्र वल्लभ के समकालीन थे किन्तु इन्होंने प्रेमानन्द को लक्ष्य करके यह व्यंग्य कविता लिखी :—

भण्यो नथी कोई पुराण हूँ, भण्यो नथी कोई वेद,
रसालंकार न आवडे, मन न पाभे खेद।
घर घर राग ताणुं नहि, पुत्र न मुज गुण गाय
राजदरबारे रझलवुं, मेलवी नथी पसाय।
भाट ब्राह्मण ने भांडवा, लांबी मूकी पोक,
रीझी भला भला कहे, तेथी थाये शोक।

अर्थात् न मैंने पुराणों का अध्ययन किया है न वेदों का। मुझे रस अलंकार नहीं आते इसका मुझे दुःख नहीं है। मैं घर घर भटकता नहीं हूँ न मेरे गुण गाने को मेरे पुत्र हैं। मैं दरबारों में भेंट लेने नहीं जाता। भाट, ब्राह्मण तथा विदूषक जोर जोर से चिल्लाते हैं तथा जनता कहती है 'क्या खूब'। किन्तु मुझे तो इस पर क्लेश होता है।

शामल स्त्री जाति के बारे में अच्छे विचार नहीं रखते थे। उनके स्त्रियों के बारे में विचार देखिए :—

"कंके मार्या कंथ, कंके परण्भा पर हरिया,
कंके उंच अमीर, तजी किंकर वर करिया;
कंके कुटुंब परिवार, तजी चित्र बीजे चाली;
कंके महिपति ने मेलि, माननी गमते महाली;

कंके सासु नणंद संहारियाँ, मात पिता मर्दन कर्या,
ए जुवति जात छे जक्षणी, जोर जोरावरनाँ हर्या ।"

अर्थात् कुछ स्त्रियों ने अपने पतियों को मार डाला; कुछ स्त्रियों ने अपने अच्छे पतियों को छोड़कर निम्न वर्ण के लोगों से विवाह कर लिया, कुछ ने अपने परिवार और बच्चों को छोड़ कर दूसरों के साथ रहना प्रारम्भ कर दिया। कुछ ने अपने सुख के लिए राजाओं तक को छोड़ दिया। कुछ ने अपनी बहिनों को तथा सासों को मार दिया। स्त्री एक जीवित डाकिनी है। ये बलवान का भी बल नष्ट करती है।

श्री अनन्तराय म. रावण ने अपनी पुस्तक 'साहित्यकार' में "कवि शामल" शीर्षक निबन्ध में लिखा है जिसका हिन्दी में सारांश इस प्रकार है :—

"जिस जमाने में कवियों की दृष्टि रामायण, महाभारत, भागवत आदि ग्रंथों पर टिकी हुई थी, उस समय शामल ने निस्संकोच भाव से मानवतावादी काव्य का सृजन किया तथा अपने गुजराती भाई बहिनों को लोक व्यवहार तथा नीति की शिक्षा दी।"

मुकुंद—ये द्वारका के गूगणी ब्राह्मण थे। "भक्तमाल" इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। गोरख तथा कबीर का चरित्र भी इन्होंने लिखा। कबीर की मृत्यु पर इनकी ये कविता देखिए :—

"बस्ती बनस्पति रोई दूनी ओर बनकी
हिंदुही मुसलमान लढे दोऊ मील मोल;
कबीर हे तेरा, मेरा चिता घोर करेंगे
महादयालु हे सन्त, स्वधाम से पीछे आये ।
दोनुको समज दीनो, भाई हम जरंगे
मुसलमीनकु कहा, कहाको फिसाद करो,
भाई हम जाय भूमिमांही सोई परंगे

वेसा उच्चारन करी देहके दो भाग करी,
हिंदुयवन को दीने संत दयावान जो।"

देवीदास—ये पेटलाय के सौजित्र गाम के गंधर्व थे। "रुक्मणि हरण" उनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। कृष्ण जब रुक्मिणी को लेकर जा रहे थे तब शिशुपाल की सेना ने उन पर आक्रमण किया। उस समय कृष्ण ने उस सेना को हराया तथा शिशुपाल का वध किया। उस समय का चित्रण देखिए :—

रुक्मिणि विनती विनये, यादव जी, जी
तमे सांभणो श्री महाराज, कहूँ प्रीतम जी, जी
अे खोड वेसे अमने, यादव जी, जी
अे मूको मारो वीर, कहूँ प्रीतम जी, जी
में मानातात सहू मूकिया, यादव जी, जी
हूँ तो आवी तमारी साथ, कहूँ प्रीतम जी, जी।
में तातभुवन सहु ताज कीधां, यादवजी जी
मारे तनमन धन तमो आप कहूं प्रीतम जी, जी
मारो भाई मारवो नव घटे, यादव जी, जी
दुःख धरी अभे बोलया वाण, कहूँ प्रीतम जी जी

शिवदास—ये खंभात के ब्राह्मण थे। इनके ग्रन्थ द्रोपदीस्वयंवर, कामावतीनी वार्ता, डांगवाख्यान, एकादशीमाहात्म्य हैं। फुटकर कविता भी इन्होंने लिखी।

विष्णुदास—खंभात के नागर ब्राह्मण थे। इन्होंने रामायण तथा महाभारत के कई पर्वों का अनुवाद कविता में किया। इनके अन्य ग्रन्थ कुँवरबाई नुं मोसारुं, लक्ष्मणाहरण तथा सुदामाचरित हैं।

विश्वनाथ जानी—ये पाटण के थे। इन्होंने नरसिंह मेहता का जीवन चरित्र लिखा।

मुरारि—इनका ग्रन्थ 'ईश्वर विवाह' है जिसमें मेना की पुत्री से शिव के विवाह की कथा वर्णित है। इसमें हास्यरस का अच्छा पुट है। ससुर के आगे शिव दिगम्बर भेष में जाते हैं--

टूंक तीक्षण जोगड़ी, तेनां बदन अतिविकराण,
भूतावण छे पांच से, साथे डाकडमरू काण।
गोधा ऊपर ते चडयो, भूतजोगणोनो साथ॥

श्रीधर—इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'गोरी चरित्र' है। शिव जब कैलाश पर तप करने गये तथा पार्वती ने तप भंग कराया, ये कथा इसमें वर्णित है।

नरहरि—इन्होंने गीता लिखी। सम्पूर्ण भगवद्गीता का काव्य-रूप में भाषान्तर इन्होंने सर्वप्रथम किया।

वल्लभ—ये प्रेमानन्द के पुत्र होने के साथ-साथ उनके शिष्यों में भी प्रमुख थे। इन्होंने अधिकतर अपने पिता के ही गुण गाये। इन्होंने शामल के विरुद्ध अपने पिता प्रेमानन्द की वकालत भी की। ये लिखते हैं—

"प्रेमानन्दनी कविता, सविताशी पेखिये,
ब्राह्मणथी भाट थया, वंशजविधिना आतो,
कवीश्वर ना पिता थी, चंद मंद देखिए।"

अर्थात् प्रेमानन्द की कविता सूर्य के समान है। भाट ब्राह्मणों के वंशज हैं तथा ब्राह्मण की उत्पत्ति स्वयं ब्रह्म से है। चन्द्र भी कवि-सम्राट (स्वयं वल्लभ) से हीन है। वल्लभ के ग्रन्थ हैं—दुःशासनरुधिर पानाख्यान, कुंतीप्रसन्नाख्यान, यक्षप्रश्नोत्तर, कृष्णविष्टि, वल्लभ झगडो, प्रेमानन्दकथा, मित्रधर्माख्यान, युधिष्ठिर-वृकोदराख्यान इत्यादि। वल्लभ गुजराती भाषा की श्रेष्ठता पर लिखते हैं—

कोमणता कमणयी अधिक देखाय जेमां,
मधु सुधा मिष्टपणे हारी-हारी जाय छे।
अमलना अेना जेवी नथी कोई भाषा मध्ये।
प्राचीन पणुं तो जेनुं मोटेरूं मनाय छे।
नव रसनी नायका सुखदायिका छे सिद्ध,
जाणे-नहि तेह अेना खोटा गुण गाय छे।
कडंकपणुं कहे छे नथी अेना मांहीं रज,
वीर-ग्रन्थ भाल्ला नहि खत्ता तेणे खाय छे।

वीरजी—ये बरहानपुर के रईस थे। ये प्रेमानन्द की कविताओं को मधुर कंठ से गाते थे। इनके ग्रंथ हैं :—कामावतीनी कथा, बलि-राजानु आख्यान, काकुराजकथा, सुरेखाहरण, दशावतार तथा काम-कथा। ये बहुत अभिमानी थे और अपने को सबसे बड़ा कवि समझते थे।

रत्नेश्वर—प्रेमानन्द के समकालीन कवियों में इनका विशिष्ट स्थान है। ये डभोई के मेवाड़ा ब्राह्मण थे। इनकी कृतियों में भागवत वैराग्यलता, मूर्खलक्षणावली, सुगनावली, महिम्नस्तोत्र, शिशुपालवध, गंगालहरी, भगवद्गीता, कामविलास, राधाकृष्णना महिना, वैराग्यलता, अश्वमेध, लंकाकांड, आत्मविचार, चन्द्रोदय, स्वर्गारोहण।

ये संस्कृत के विद्वान् थे। 'राधाकृष्ण महिना' में राधा का वर्णन देखिये—

प्रकटी मदन व्याधि मोह्यों बाण सांधी;
हरि हरि कहे राधा, प्रेमने पाश बाँधी!
विरह विकल रोती, चीर शुं नीर ल्होती,
अरुण नयन दीसे, आशजोतां अरीसे।

अर्थात् कामदेव के बाणों ने उसे घायल कर के गिरा दिया। प्रेम के वशीभूत होकर वह "हरी हरी" पुकारी। वह विरह से व्याकुल होकर रोई तथा कपड़े से अपने आंसू पोंछने लगी। जैसे ही उसने दर्पण में मुख देखा उसे अपनी आँखें लाल दिखलाई दीं। राधा "बादलों" को सम्बोधित करके कहती है :—

सुण घन मुज वाणी, वर्षतां राख पाणी,
क्षण इक थिर रेनी, कृष्णनी बात केनी !
मधुपुरथकी आव्यो, शो समाचार लाव्यो
मधुरी मुरली मीठो, कृष्ण जो क्यांय दीठो ?

अर्थात् ओ बादल, मेरे शब्द सुन। बरसना बन्द कर और थोड़ी देर के लिए रुक। मुझे कृष्ण के समाचार सुना। तुम मधुपुर से क्या सन्देश लाये ? क्या तुम्हें कृष्ण अपनी वंशी की भांति ही मीठे लगे ?

६

गरबा-साहित्य का उदय तथा विकास

ई० स० १७०० से १८०० तक का समय गुजराती साहित्य में निष्क्रियता का समय था। गुजरात पर अनेक शक्तियों ने आक्रमण किये। अशान्ति का वातावरण था। इस काल में शिव, विष्णु तथा देवी के उपासकों ने अपने अपने प्रकार से स्तुतियाँ लिखीं।

'गरबा' गानेवाले देवी की शक्ति एवं सौन्दर्य की स्तुति करने के उपरान्त याचना करते हैं। काठियावाड़ में पुरुष तथा गुजरात में स्त्रियां 'गरबा' गाती हैं। प्रमुख गरबाकार इस प्रकार है :—

वल्लभभट्ट—ये देवी के भक्त थे तथा इन्होंने देवी की स्तुति में अनेक गरबा लिखे। इन्होंने अपनी गरबों में समाज के कल्याण के लिए देवी से प्रार्थना की है। अन्नसंकट के समय ये देवी से प्रार्थना करते हैं :—

अन्न अति मोघां हुवे हो बहुचरी,
अधर्म व्याप्यो असाध्य।
को कोनी करणी जुए हो बहुचरी ?
अेकथकी अेक अगाध !
उदरथकी उपजावीआं हो बहुचरी,
उभयतणो जे अंश,
ते तन पेट तजावीआं हो बहुचरी,
विक्रय कीधो वंश।

\+ \+ \+

म्होंमाग्या मेघ मोकल्यो हो बहुचरी,
खटरस ना वे खोट,
आई ! अमिछासे नांखीअे हो बहुचरी,
छोरु, ढोरु ने गाम ।

जिस प्रकार शाभल अपने छप्पों के लिए प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार वल्लभभट्ट अपने गरबों के लिए प्रसिद्ध हैं।

द्वारको- ये डाकोर के थे। इन्होंने कृष्णलीला के कुछ पद लिखे हैं।

भाणदास—इनका ग्रंथ 'हस्तामलक' प्रसिद्ध है।

कालिदास- ये वसावड़ के नागर ब्राह्मण थे। इनके ग्रन्थ सीता-स्वयंवर, ध्रुवाख्यान, ईश्वरविवाह प्रसिद्ध हैं। प्रह्लादाख्यान सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ।

प्रीतमदास- ये भाट थे। खेड़ा जिला के संधेमर-गांव में रहते थे। इनके गुरु गोविन्दराम थे। इनके ग्रन्थ सारस गीता, ज्ञानकक्को, गुरु-महिमा, ज्ञानभास तथा कृष्णजन्म के पद, भक्तिप्रकाश, ज्ञानप्रकाश, भगवद्गीता, आध्यात्मिक रामायण, ज्ञानगीता, कृष्णलीला तथा गरबा प्रसिद्ध है।

गोपियों का भाव कृष्ण की वंशी के प्रति क्या था, इससे सम्बन्धित ये चित्र देखिए :

हे वांसलडी, वेरण थई लागीरे व्रजनी नारने ।
तुं शोर करे, जातलडी नारी रे मन विचार हे वांसलडी !
ते अेवडां कामण शां कीधां ?
श्यामणीअे मुख चुंबन लीधां,
मन व्रजनारी नां हरी लीधां, हे वांसलडी !
तुने वोड करी कृष्णे झाली,
गौनाद सूणी आवी चाली,

तुं विश्वम्भर ने बहु व्याली, हे वाँसलडी !
सूरत तुं कांई नथी लावी,
उघाडे छोगे छे आवी,
भगवानतणे मन बहु भावी, हे वांसलडी !
तें व्रततपतादिक शूं कीधुं ?
राधाथकी मान अधिकलीधुं,
तुंने आलिंगन प्रभुए दीधुं, हे वांसलडी !

शिवानन्द—ये सूरत के नागर ब्राह्मण थे। इन्होंने आरतियाँ लिखीं जो कि ठाकुरजी की आरती उतारते समय भक्तों द्वारा गाई जाती हैं। इन्होंने हिन्दी तथा ब्रज में भी कविताएं लिखीं।

गोविन्दराम- ये भरूच जिला के आमोद गांव के औदीच्य ब्राह्मण थे। इन्होंने "कलिजुगनो महिमाय" लिखा है। कलिजुग में ब्राह्मण कैसे होंगे ? इनके शब्दों में सुनिए :—

उत्तम जाति माणस थईने करशे मदिरापान जी
कन्याओना पैसा लैशे, देश प्रदेशे देशे जी
शास्त्र पुराणने भणवां मेली पैदां करी धन लेशे रे।

कलिजुग में स्त्रियाँ कैसी होंगी ?

सासुनी शिखामण बहुओ अन्तरमाँ नहि धारे जी रे,
माताने बहु नित्य दबावशे तोमे पुत्र नहि वारे रे,
दीकरा पण बहुनो पक्ष लईने मात पिता ने लडशे जी रे।

मनुष्य स्त्रियों के वशीभूत किस प्रकार होंगे ?

वहुने सारूं लगाडवा काजे जेम कहे तेम करशे जी रे
नारीवश थई काम सहु करशे, नफट थई ने करशे रे
धणीयानी धोशे वस्त्र, हाथे रांधशे हाली जी रे।

धीरो भक्त—ये बड़ौदा जिले के गोडगाम के ब्रह्मभट्ट थे। इनका समय ई० सन् १७५३ से १८२५ तक का है। भक्तों में इनका नाम अग्रगण्य है। इनकी स्त्री अत्यन्त उग्र स्वभाव की थीं। इनका जीवन दुःखी था। इनके पदों को काफिए कहते है। ये अत्यन्त सरल भाषा में लिखे हुए हैं। इनके काफिए अत्यन्त प्रसिद्ध हुए हैं। एक काफिग्रा देखिए :—

फूल्यो शुं फरे छे रे ? भूल्यो भवकूपमां पड्यो।
मनुष्यदेहरूपी खोयो मणि हाथ चड्यो।
डाह्यो थई दुनीआमां फरे छे, तेणे शुं सर्यु तारुं काज ?
तें न जाण्युं जे जावुं पलकमाँ, केम करी रहेशे लाज ?
डहापण तारुं जाण्युं रे, ज्यांरे जमहाथ चड्यो।

\+ \+ \+

मनमाँ ले शिखामण, ममता मूकी परी,
कर स्मरण सरजनहारनुं, जनम सफल ले करी,
दास धीरो कहे छे रे, सौथी तुं सरस नीवड्यो।

नीरांत भक्त—ये जाति के पाटीदार थे। ये बड़ौदा के निकट देथाण के रहने वाले थे। इनका दृष्टिकोण दार्शनिक था। इनकी भाषा सरल एवं प्रसाद गुण-युक्त थी। इन्होंने उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनका एक भजन देखिए :—

आवो अवसर फरीफरी नहीं आवे रे, हरि भजीए।
मूरख हीरो कोड़ी तुल्य गमावे, हेते हरि भजीए।
वेहेतां जल तो वही जशे रे शुं कहीए, हरि भजीए।
पितु पितामह सर्व गया तो आपण कयांथी रहीए।
हेते हरि भजीए।
सुत वित्त दारा कुल कुटुम्ब सहुतारे रे, हरि भजीए।
अन्तवेलाए कोने कोण उगारे, हेते हरि भजीए।

सखे जाणजो स्वारथनुं छे साक्षी रे, हरि भजीए ।
मृत्यु जाणजो माथा ऊपर भमतुं रे, हरि भजीए ।
ज्यारे त्यारे करशे एनुं गमतुं, हेते हरि भजीए ।

भोजा भगत—ये काठियावाड़ के पाटीदार थे । ये अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे । गिसार के संन्यासियों से इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ । इनके 'छाबका' बहुत प्रसिद्ध हैं जिनमें सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य-वाण छोड़े गये हैं :—

रे में दुःख दुनियानां भाली, परणी नारी पियरे मेली वाली रे
एकन मागे भमरडो ने बीजो ते मागे जाली रे ।
त्रीजो रे कहे मने डगली शीवडावो ने चोथो ले छे पेट पाली रे में ।
कडलां घडावुं त्यारे कांबीओ रे मागे, ने वीटी घडावुं त्यारे वाली रे
आठज पहोर मने जंपवा न दे, एनां पांजरियां मेल पर जाली रे
बढ़ती रे सुए ने बढ़ती रे ऊठे, कजीआभां छे कारी रे;
ऊजलां मुख एनाँ करिये न दीठां, एतो आठे पहोर ओशियाली रे
वारणे रे आव्या पांच परुणा ने धाइने ते घरमां पेठी रे
छोकराँ ने तो धमची मचावे त्यारे चूंटला ले छे ताणी ताणी रे ।

: ७ :

गरबी-सम्राट दयाराम

कतिपय आलोचकों का मत है कि जो रस दयाराम की गरवियों में पाया जाता है वह गुजराती साहित्य के किसी भी अन्य कवि की कविता में नहीं पाया जाता। गुण विशिष्टता की दृष्टि से दयाराम अपना सानी नहीं रखते।

आकर्षक गाँव चाँडोद में सन् १७६७ में साठोदरा नागर ब्राह्मण के परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके माँ-बाप की मृत्यु शीघ्र ही होगई। इनकी चाची ने इनको पाला। बचपन में ये अत्यन्त चंचल थे। ये छोटेपन से ही स्त्रियों से छेड़छाड़ करने लगे थे। उनके मटके फोड़ देते थे। एक गाँव में केशवानन्द संन्यासी से इनकी भेंट हुई जिनके ये शिष्य हो गये।

१४ वर्ष की अवस्था में ये पास के गाँव डभोई चले गये। इन्होंने गोकुल, मथुरा, वृन्दावन, काशी तथा अन्य तीर्थों की यात्रा की। इन्होंने हिन्दी, ब्रजभाषा, संस्कृत तथा गुजराती के प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया। वैष्णव धर्म से प्रभावित होकर इन्होंने अपना नाम दयाशङ्कर से बदल कर दयाराम कर लिया। ये पुष्टिमार्ग के केन्द्र श्रीनाथद्वारा भी गये। वहां से भी इन्होंने गोस्वामियों के सम्पर्क से प्रेरणा प्राप्त की।

इनका व्यक्तित्व आकर्षक था। ये ठाठ से रहते थे। ये गोस्वामियों की तरह लम्बे बाल रखते थे और उनमें सुगन्धित तेल लगाते थे। ढाका की बहुमूल्य मलमल का अंगरखा पहनते थे। इनके ओंठ पानों से लाल रहते थे। कभी-कभी ये भंग भी लेते थे। ये नागपुर से मँगा कर धोती

पहनते थे जिसमें सिल्क की किनार होती थी। जब कभी बाहर जाते थे तो नड़ियाद की बँधी हुई एक विशेष प्रकार की पगड़ी पहनते थे।

इनकी वाणी अत्यन्त मधुर थी। ये अच्छे गायक थे। ये स्वाभिमानी थे। ये विष्णु के भक्त थे। इनका कहना था "सिवाय श्रीकृष्ण के मेरा मस्तक किसी के आगे नहीं झुकेगा।" बड़ौदा के गोपालदास ने गणपति पर काव्य लिखने के लिए इन्हें निमन्त्रण दिया किन्तु इन्होंने उत्तर भिजवाया "गोपीकृष्ण ही मेरे स्वामी हैं। मेरा दूसरा स्वामी कोई नही। आप प्रसन्न हों अथवा अप्रसन्न।"

इनके आश्रयदाता गोस्वामी ने एक बार इनसे अभद्र व्यवहार कर दिया। इन्होंने तुरन्त उनकी दी हुई कण्ठी गले से उतार कर तोड़ डाली। एक बार काँकरौली के गोस्वामी जी को उनके दुष्कार्यो के कारण गाली दी।

रतनबाई जो एक विधवा सुनारिन थो, उससे इन्होंने प्रेम किया और खुले रूप मे ३० वर्ष तक अपने साथ रक्खा। एक बार इन्होंने रतन को घर से बाहर निकाल दिया किन्तु रतनबाई का इनमें अगाध विश्वास था और वे वापिस आ गई। दयाराम अपने लिए और रतनबाई के लिए स्वयं भोजन बनाते थे।

दयाराम की मृत्यु ६ फर्वरी १८५२ को हुई। गुजरात में इनके शिष्यों तथा प्रेमियों की संख्या पर्याप्त थी। इनके एक शिष्य ने इनकी सेण्डिलों को पूजा करने के लिए माँगा किन्तु दयाराम ने अपने शिष्य से ऐसा करने से मना कर दिया।

इन्होंने गुजराती में ४८, ब्रज में ४१ ग्रन्थ लिखे। इसके अतिरिक्त गुजराती में सात हजार, ब्रज में १२ हजार, मराठी में दो सौ, पंजाबी में चालीस, संस्कृत में पन्द्रह तथा उर्दू में पिचहत्तर पद लिखे। इनके गुजराती ग्रन्थ इस प्रकार हैं:—

१. गीता माहात्म्य, २. रसिक वल्लभ, ३. अजामिल आख्यान, ४. वकत्रासु आख्यान, ५. प्रेमरस गीता, ६. प्रबोधबावनी, ७. काग-ज्ञानसार, ८. प्रश्नोत्तरमालिका, ९. श्रीकृष्णनाम माहात्म्य मंजरी, १०. श्रीकृष्णनाम माहात्म्य माधुरी, ११. श्रीकृष्ण स्तवन चन्द्रिका, १२. श्रीहरिभक्त चन्द्रिका, १३. श्रीहरिभक्त रत्नमाला, १४. श्रीहरि-नामवेली, १५. श्री गुरुदेव चन्द्रिका, १६. शिक्षा तथा परीक्षा, १७. भक्तिपोषरण, १८. भक्तिहरणत्व, १९. स्तवन माधुरी. २०. सत्य-भामा विवाह २१. रुक्मिरणी विवाह २२. दशमलील २३. रास पंचाध्यायी, २५ भ्रांतिभंजन, २६. अन्यायमर्दन, २७. मोहमर्दन, २८. ईश्वर निरीक्षरण, २९. पुष्टिपन्थ रहस्य मार्णदाय, ३०. चिन्ता-चूर्णिक, ३१. प्रमेय पंचाव तथा स्वान्तःकरण समाधान, ३२. श्रीकृष्ण नामामृतधारा, ३३. क्षमापराधषोडसी, ३४. ऋतुवर्णन, ३५. बारमास, ३६. भक्तवेल, ३७. चोरासी वैष्णवनु ंधोरण, ३८. ब्राह्मणभक्त विवाद नाटक, ३९. बाणाधारी अन्तरनिष्ठ सम्वाद नाटक, ४० मनमति सम्वाद, ४१. श्री पुरुषोत्तम पचांग, ४२. श्री यमुनास्तवन, ४३. श्री कृष्ण अष्टोत्तर शतनाम चिन्तामणि, ४४. श्रीकृष्णनामावलि, ४५. विनयबत्तीशी, ४६. अष्टपटराणी विवाह, ४७. चोखाहरण, ४८. नर-सिंह महेतानी हुण्डी ।

इनके ग्रन्थों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—(१) धर्म सम्बन्धी (२) नीति सम्बन्धी (३) शृंगार सम्बन्धी । इनके अधिकांश ग्रन्थ धर्म सम्बन्धी ही हैं ।

दयाराम की भाषा ही इनकी कविता का विशेष गुण है । इनकी भाषा सरल, शुद्ध, संस्कारी एवं अर्थगौरववाली है । अन्य कवियों की तुलना में भाषा-गौरव तथा अर्थ-गौरव दोनों ही दृष्टियों से दयाराम श्रेष्ठतर हैं । इनकी गरबियों में इतना रस है कि जिस समय उन्हें

गाया जाता है उस समय गाने वाले तथा सुनने वाले रसविभोर हो जाते हैं। नवलराय के मत से इनकी गरबियाँ प्रेमानन्द से कम रसपूर्ण हैं।

शृंगार रस के ये श्रेष्ठ कवि थे। गरबियों में गीति काव्य के सब लक्षण पाये जाते हैं। प्रत्येक गरबी राग, ताल एवं स्वर में गाई जा सकती है तथा विचार, भाव तथा अर्थ की दृष्टि से भी अपने में पूर्ण है।

नीति सम्बन्धी इनकी कुछ पंक्तियाँ देखिए :—

१—वैष्णव नथी थयो तुं रे, शदि गुमानमां घूमे ? हरिजन नथी थयो तूंरे

२—फूल्यो शुं करे छे रे ? भूल्यो भवकूपमां पड्यो
मनुष्य देह मोंधो रे, खोयो मणि हाथ चड्यो

३—गर्भवास राख्यो रे किरपा तने बहु करी
सदासुख आघुं रे तेने केम गयो विसरी ?

४—साचुं ते सगपण समज मन ! श्यामतणुं
बाकी सहु जुठुं रे, कशुं नहि कामतणुं

५—श्री वल्लभविट्ठल, श्री जी, स्वामी शामणीआ वहाला
सघणुं समजो हो अंतरजामी नन्दलाला रे !

६—व्रज वहालुं रे वैकुण्ठ नहि आवुं,
मने न गमे चतुर्भुज थावुं, त्यां नन्दकुंवर क्यांथी लावुं ? व्रजवहालुं रे

७—जे कोई जन कल्याण चहो ते स्त्रीनी संगत तजजो रे।

८—जे कोई प्रेमअंश अवतरे प्रेमरस तेना उरमां ठरे
सिंहणकेरु दूध होय ते सिंहणसुत ने जरे
कनक पात्र पाखे सौ धातु फोडी ने नीसरे प्रेमरस
सकरखोर नुं साकर जीवन, खरना प्राण ज हरे।
क्षार सिंधुनुं माछसडुं ज्यम मीठा जणमां मरे। प्रेमरस
सोमवेली रसपान शुद्ध जे ब्राह्मण होय ते करे

वगणवंशीने वमन करावे, वेदवाणी उचरे प्रेमरस
उत्तम वस्तु अधिकार विना मले, तदपि अर्थ नव सरे
मत्स्यभोगी बगलो मुक्ताफण देखी चंचुना भरे। प्रेमरस

इनकी गरबियों में से इस गरबी को देखिए जो कि श्री कृष्ण की वंशी को सम्बोधित करके कही गई है। दयाराम की गरबियों में ये अत्यधिक प्रसिद्ध है :—

मानीती तु' छे मोहनतणी, हो वांसलडी रे !
तु'ने वालम करे छे घणु' वहाल रे, हो वांसलडी !
मीठो अखडो शो सोहोर, मोह्यो नदनो किशोर
तारु' आवडु' शु' जोर, मुंडी ! कालजडु' मा कोर रे !
पीए अधरामृत पीयु तणु' तु', हो वांसलडी रे !
अमारे शोक्य सरीखु' तु' साल रे, हो वांसलडी रे !
वाजी वाजी ने विह्वल कर्या हो वांसलडी !
तु' जो पीजे हमारा प्राण रे हो वांसलडी !
सुणताँ पड़े छे हृदे सांसराँ हो वाँसलडी !
ताहारा टवुकाराथी मोहबाण रे हो वाँसलडी !
झरे घणु' छे तारी झपटयाँ हो वाँसलडी !
भलाँ तु' थी भाला तरवार रे हो वाँसलडी !
एकी वारे तु' हणी नारवनी हो वाँसलडी !
ओ मुंडी थोडे मा मार रे, हो वाँसलडी !
पतिव्रतानां पण मुकाव्या हो वाँसलडी !
तें तो छोडावीयाँ सतीओनाँ सत्य रे, हो वाँसलडी !
वन वन कु'ज कु'ज फेरव्याँ तें हो वाँसलडी !
गरजे गुमान भरी आवडी, हो वाँसलडी !
तु' नो जोनी विचारी ताहारी जात रे, हो वांसलडी !

जो ताँ तुं काष्ठ केरो करकडो हो वाँसलडी !
तुंने आज मली छे ठकरात रे, हो वाँसलडी !
गतविहोणाँ तें घेहेलाँ कर्यां, हो वाँसलडी !
तें तो लगाड्यु लालशुं लगंन रे, हो वाँसलडी !
चोरनी संगे शीखी चोरवा, हो वाँसलडी !
वहाले माखण चोर्यु ने तें तो मंन रे, हो वाँसलडी !
मान न राख्युं मानीतणुं, हो वाँसलडी !
दयाना प्रीतमनी दासी तुं खरी, हो वाँसलडी !
तेडे सहुने बेठी तुं ठाम रे, हो वाँसलडी !

इसी प्रकार एक और गरबी देखिए। इसमें गोपी श्री कृष्ण को अपने घर आने के लिए आमन्त्रित करती है। इसमें प्रेम की तन्मयता है, प्रेमी से मिलने की तीव्र आकांक्षा है तथा आत्मसमर्पण है :

मोहोले पधारो मारा राज, माणीगर ! मोहोले पधारो;
वहाल वधारो व्रजराज, माणीगर मोहोले पधारो
करी राखी छे एकठी, घणा दिवसनी छे गोठ;
राज मले तो कीजिए आवी रही छे मारे होठ।
हुँ सराखी बहु आपने, मारे तो एक आप;
रहेवातुं नथी राजवण, कोने कहुँ परिताप ?
सेज समारी फूलडे, आनन्द उर न समाय।
प्राणजीवन त्याँ पोढशो, हुं तो तलाँसीश पाय।
प्रीतमदास दया तणा श्री व्रजराज कुमार !
घणा दिवसनी होंस छे पूरो प्राणाधार !

इनकी एक और लोकप्रिय गरबी देखिए जिसमें एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि कृष्ण उसकी ओर इतने आकर्षित क्यों हैं ? जब हम पानी भरने जाती हैं ये हमारा पीछा करते हैं। बिना कहे गगरी

उठवा कर सिर पर रख देते हैं। कोई न कोई बहाना लेकर घर पर आ जाते हैं। अकेली पाकर पैरों में गिर पड़ते हैं। जहाँ मैं जाती हूँ वहीं ये मेरे पीछे आ जाते हैं।

"हुं शु जाणु जे वहाले मुजमाँ शु दीठु ?
वारे वारे सामु भाले मुख लागे मीठु हुं शु जाणु ।
हुं जाउं जल भरवा त्याँ पुंठे पुंठे आवे,
वगर बोलाको वालो ब्हेडलु चडावे; हुं शु जाणु
वढु ने तरछोडु तो ये रीस न लावे;
काँइ काँइ मिषे मारे घरे आवी बोलावे; हुं शु जाणु
दूर थकी देखी वालो मुने दोड्या आवी दोटे;
पोतानी माला काढी पहेरावे मारीं कोटे; हुं शु जाणु
मने एकलडी देखी त्यां मारे पालवे लागे !
रंक थइ कांइ कांइ मारी पासे मागे। हुं शुं जाणुं
मुने ज्यां जाती जाणे त्यां ए आवे ढुंके !
बेनी ! दयानो प्रीतम मारी केड नव मूके। हुं शुं जाणुं।"

: ८ :

स्वामी नारायण सम्प्रदाय तथा उसके कवि

स्वामीनारायण सम्प्रदाय के कवियों का गुजराती साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वामीनारायण सम्प्रदाय के प्रमुख नेता सहजानन्द का जन्म अयोध्या के निकट छपैया में सन् १७८१ में हुआ। सहजानन्द रामानन्द के शिष्य थे जिन्होंने इस सम्प्रदाय को जन्म दिया। मुख्यतः इस सम्प्रदाय ने वैष्णव धर्म से प्रेरणा ग्रहण की। आचार की शुद्धता इसका मुख्य गुण थी। साधुओं से २६ प्रतिज्ञाएँ कराई जाती थीं। स्त्रियों से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध वर्जित था। काठियावाड़ तथा गुजरात के निर्धन परिवारों में इसकी बहुत मान्यता थी।

१९वीं सदी के बहुत से साधु जो इस सम्प्रदाय के मानने वाले थे, उन्होंने काव्य लिखा। इनमें प्रेमानंद स्वामी अत्यधिक प्रसिद्ध थे। बहुत से लोग इन्हें प्रेमानंदसखी के नाम से भी पुकारते थे।

ब्रह्मानंद—ये जन्म के भाट थे। डूंगरपुर के पास एक छोटे गाँव में इनका जन्म हुआ था। इनका बचपन भुज में बीता जहाँ इन्होंने पिंगलशास्त्र तथा ब्रजभाषा के ग्रन्थों का अभ्यास किया।

इन्होंने तीन भाषाओं में कविताएँ लिखी हैं। लाडु नाम से चारणी में, श्रीरंग नाम से हिन्दी में तथा ब्रह्मानन्द नाम से गुजराती में। जूनागढ़

के नवाब को प्रसन्न करके इन्होंने लक्ष्मीनारायण का मन्दिर बनवाया। बड़ौदा के सयाजीराव गायकवाड़ भी इनका आदर करते थे। इनके कई ग्रंथ हैं तथा आठ हजार फुटकर पद हैं। इनके पद आनद देने वाले हैं। इनका एक पद देखिए :—

आ तनरंग पतंग सरीखो जातां वार न लागे जी
असंख्य गया धनसंपत्ति मेली तारी नजरो आगे जी
अंजे तेल फुलेल लगावे, माथे छोगां घाले जी
जोबन धननु ं जोर जणावे, छाती काढे चाले जी
जेम ऊंदर डे दारू पीधो, मस्तानो थई डोले जी
मगरूरी मां अंग मरोडे, जेम तेम मुखथी बोले जी।
मनमां जाणे छे मुज सरीखो रसियो नहि परत रागी जी,
बहारे ताकी रही बिलाडी, लेतां वार न लागी जी।
आज काल मां हुं तु ं करतां जमडा पकडी जाशे जी।
ब्रह्मानन्द कहे चेत अज्ञानी, अंत फजेती थाशे जी।

मुक्तानन्द—ये रामानन्द के मुख्य शिष्य थे। सहजानन्द से भी इनकी घनिष्टता थी। अधिकतर इनका विषय था ज्ञान। ये साधु हो गये थे। साधु होने से पहले इनका नाम मुकुंददास था।

इनके कई ग्रंथ हैं। फुटकर पद लगभग नौ हजार हैं। इनका सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ 'उद्धव गीता' है। इन्होंने 'सती गीता' भी लिखी है। इनकी भाषा सरल है। 'आदर्श नारी' के गुण बताते हुए इन्होंने लिखा है :—

ज्ञान वैराग्य के भक्ति ने बणे, न बणी पतिसंग जोय,
धर्म बाल्याने बणे न बणी पति संग कोय।
सुन्दर सुतनु ं बण ग्रही पतिसंग न बणी होय,
ए रीते तन नव तजे विधवा कहावे सोय।

जे विना वैराग्यवंती, विषय थकी उदास,
श्री हरि ने निज पति गणे, त्यागे सुखनी आश ।
प्राकृत नर अति तुच्छ जाणी न परणी जे नार ,
ते पण विधवा जाणवी जे थवा कच्छे भवपार
जे वनिता ने तप ज वहालुं, दृढमति निष्काम,
बाणपणथी हरि भजे, उर धरे प्रभु सुख नाम ।
तेसर्व वनिताओ विधवा, सन्यासी सम श्रेह ,
मुक्तानंदन कहे : मानवी ! सर्वे साँभणोधरी नेह ।

निष्कुणानन्द—ये कच्छ के थे । इनका पहला नाम लालजी था । ये सहजानन्द के साथी थे । इनके २० काव्य-ग्रथ हैं तथा ३ हजार फुटकर पद हैं । इनकी कविता का विषय वैराग्य है । वैराग्य विषयक इनके पद का कुछ अंश देखिए :—

जनुनी जीवो रे गोपीचन्दनी ! पुत्रने प्रेर्यो वैराग जी ।
उपदेश आघो अेणी पेरे, लाग्यो संसारीडो आग जी; जनुनी
धन्य धन्य माता रे ध्रुवतणी, कह्यां कठण वचन जी;
राजसाजसुख परहरी वेगे चालीआ वंन जी;
... ...

भलोरे त्याग भरथरी तणो, तजी सोणसें नार जी;
मन्दिरभरूखा मेली करी आसन कीधलां बहार जी ।

मंजुकेशानन्द—वडताल जो स्वामीनारायण सम्प्रदाय का मुख्य केन्द्र है, वहां इनकी हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हैं । ये सद्गुरु की श्रद्धा करते थे किन्तु पाखंडी गुरु का तिरस्कार करते थे जो इनके निम्न-लिखित भाव से स्पष्ट है :—

नरतन पामी हार्यो जीती बाजी मूढ ! अज्ञानी,

खोटा संततणी शिखामणो तें अन्तरमां सत्यमानी।
कामी क्रोधी गुरु तुने अेम कहे छे, तारा देहमां प्रभु रहे छे,
तुं बहारथी शुं शोधे छे ?
अेम कही परनारीसङ्ग करे, करी चेला तेनुं द्रव्य हरे,
तेनुं पाप हैयामां नव धरे.................... नरतन।

देवानन्द—ये लोकप्रियता में सबसे आगे थे। इनके भजन भिक्षुकों द्वारा खूब गाये जाते हैं। इनकी गरबियाँ दयाराम की गरबियों सी रसमयी हैं।

इनकी कुछ गरबियाँ देखिए :—

(१)

कर प्रभु सङ्गाथे दृढ़ प्रीतडी रे,
मर जावुं मेली धनमाल, अन्तकाणे संगु नहि कोई नुं रे,
संस्कारे सम्बन्धी सर्वे मल्यां रे,
अे छे जूठी मायाकेरी जाण। अन्तकाणे
मारुं मारुं करीने धन मेणव्युं रे,
तेमा तारुं नथी तलभार। अन्तकाणे
सुखस्वप्ना जेवुं छे संसारनुं रे,
अेने जातां न लागे वार। अन्तकाणे

(२)

अज्ञानी ! तारा अन्तरमां देख विचारी,
अन्तसमे कोई काम न आवे सगां कुटुम्ब नर नारी रे, अज्ञानी।
जोबनधननुं जोर जणावे, फाटी आंखे फरतो,
काल कराल कठण शिरवेरी, दिलमां नथी डरतो रे, अज्ञानी।

मालखजाना मन्दिर मेली मुश्रा भूप मदमाता,
श्वानशुकरना देह धरीने घरघर गोथां खाता रे। श्रज्ञानी।
श्राज श्रमुसख श्रवसर श्राव्यो, हरि भज्यानुं टाणुं
देवानन्द कहे देह मनुष्यनो नमणे खरच्ये नाणुं; श्रज्ञानी।

मूलजीभट्ट—इनकी मृत्यु संवत् १८८१ में हुई। इनके पिता का नाम भाईभट्ट था। ये श्रहमदावाद के थे। इन्होंने नरसिंह मेहता का श्राद्ध लिखा है।

: ६ :

युगप्रवर्तक नर्मद तथा उनका युग

गुजराती साहित्य में दलपतराम तथा नर्मदाशङ्कर दोनों का उदय एक महत्वपूर्ण घटना है। इनके समय में कविता के मान बदले। विषय-वस्तु में परिवर्तन हुआ। शैलियां बदलीं। धार्मिक एवं पौराणिक आख्यानों से निकल कर कविता की धारा ने मोड़ लिया। यद्यपि दयाराम के समय से ही कविता मानवतावाद की ओर झुक चुकी थी किन्तु धार्मिक कथावस्तु का मोह उनका पल्ला पकड़े हुए था किन्तु नर्मद-काल ने कविता के रूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला दिया।

कविता-क्षेत्र में ही नहीं, सामाजिक क्षेत्र में भी सुधारों का बोल-बाला था। तत्कालीन नेताओं ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जिहाद बोल दिया था। बाल-विवाह के विरुद्ध एक आन्दोलन खड़ा हो गया था। तत्कालीन कवियों ने उन लोगों को सुधारने का संकल्प लिया जो विदेश गमन का विरोध कर रहे थे तथा विधवा विवाह के मार्ग में रोड़े अटका रहे थे।

दलपतराम का समय १८२०–१८९८ का है तथा नर्मदाशंकर का समय १८३३–१८८६ का है। दोनों समकालीन ही थे। दोनों ही सुधारक थे। दलपतराम को प्राचीन पद्धति की शिक्षा प्राप्त हुई थी किन्तु नर्मदाशंकर आधुनिक ढंग की शिक्षा से शिक्षित हुए थे। नर्मदा-शंकर सुधार शीघ्रता के साथ करना चाहते थे किन्तु दलपतराम सुधार के मार्ग पर धीरे-धीरे बढ़ना चाहते थे। दलपतराम का सुधार के विषय में कथन था—

सज्जन संभणावजो रे, धीरे धीरे सुधारानो सार,
लाखो कीडी पर जाडवो, अगसे मेलीये तो मरी जाय
भुको करी भभरावीये, तो ते खासी रीते थी खाय।

दलपत के पिता वेद के ज्ञाता थे। ये वढवाण के श्रीमाली ब्राह्मण थे। इनको प्रारम्भ से ही उच्च शिक्षा मिली। चौदहवें वर्ष में ही इन पर स्वामीनारायण सम्प्रदाय की छाप पड़ गई। इनके गुरु देवानन्द थे जो स्वामीनारायण सम्प्रदाय के एक साधु थे। इन्होंने ब्रज एव सस्कृत का अध्ययन भी किया था।

इनके समय में सामाजिक परिस्थितियाँ भी बदल चुकी थी। शिक्षा-पद्धति में भी परिवर्तन हो चुका था। युरोपियनों से सम्पर्क स्थापित हो चुका था। बम्बई विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ पाश्चा य ढंग से उच्च शिक्षा का प्रबन्ध भी हो रहा था। कार्बस महोदय के प्रयत्न से गुजराती भाषा की उन्नति के लिए "गुजरात वर्नाक्यूलर सोसायटी" की स्थापना हो चुकी थी। सन् १८४३ में कार्बस महोदय ने इण्डियन सिविल सर्विस में शामिल होकर बम्बई में कार्य प्रारम्भ किया। अनेक जिलों में इन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य किया। ये साहित्यिक रुचि के व्यक्ति थे। सन् १८४६ में ये असिस्टेण्ट जज के पद पर अहमदाबाद में आये। यहां इन्होंने श्री भोगीलाल से गुजराती का अध्ययन किया तथा १८४८ में भोणानाथ भाई द्वारा दलपतराम को अपने यहां बुलाया। कार्बस साहब ने दलपतराम के साथ मित्रना स्थापित करके गुजराती तथा गुजरात के उत्थान के लिए अनेक कार्य किये। इनकी सेवाओं के कारण इन्हें अमरत्व प्रदान करने के लिए दलपतराम ने "कार्बस-विलास" नामक एक काव्य ग्रन्थ भी लिखा।

दलपतराम के ग्रन्थ इस प्रकार हैं—भूतनिबंध, ज्ञाति निबंध, लक्ष्मी नाटक, कथन सप्तशती, विजय विरह, पुनर्विवाह प्रबंध, स्त्री संभाषण,

बाण लग्न निबन्ध, गुरु शिष्य धर्म, शहेर सुधारो, विजय क्षमा, काव्य दोहन भाग १-२, शेर विषे गरबीयो, हंस काव्य शतक, गुजरातना हिंदुग्रोनी स्थिति, जशवंत राजनीति, सौराष्ट्र समृद्धिवर्धक, वेन चरित्र, श्रवणाख्यान (हिन्दी), ससारी धर्म विषे, मिथ्याभिमान नाटक, दैवज्ञ दर्पण, काव्य संक्षेप, सगोत्र विवाह निर्णय, कारबस विलास तथा कारबस विरह।

दलपतराम की कविता लोककल्याणकारी थी। जनता का उत्थान एवं कुरीतियों का विनाश इनके मुख्य लक्ष्य थे। "सुकविता कोई ने न होय अवगुणकारी" अर्थात् सुन्दर कविता वही है जिससे किसी का भी अहित न हो, यह इनका काव्य-सिद्धांत था। इनका प्रकृति-चित्रण भी उत्तम है। नीति विषयक कविताएँ भी इन्होंने लिखी। मनुष्य जीवन के लक्ष्य के बारे में इन्होंने लिखा है--

चेते तो चेतावुं तने रे, पामर प्राणी;
माखीग्रोग्रे मधु कीधुं, न खादुं न दान दीधुं,
लूंटनारे लूंटी लीधुं रे, पामर प्राणी;
देवे नरतनु दीधी, तें तो न किम्मत कीधी;
मणि साथे भेश लीधी रे, पामर प्राणी।

इसी प्रकार के भाव इनके दूसरे छन्द में मिलते हैं--

मरणपथारी पर तो सौ प्राणी मरे,
कहीग्रे तेनी काया गई नकाम जो
जे काया कुरबान स्वदेश लीधे करे,
नवयुग तेनां निश्चल रह्यां ते नाम जो,
स्वदेशनी ममता मनथी नव मूकीये।

इनके काव्य के मुख्य तीन लक्ष्य थे—(१) सामाजिक कुरीतियों को धीरे-धीरे किन्तु स्थायी रूप मे समाप्त करना (२) स्वतत्रता का मान तथा अत्याचार के प्रति विद्रोह (३) राष्ट्रीय प्रेम।

स्वदेश प्रेम सम्बन्धी इनकी भावना देखिए:—

"स्वदेशनु सर्व प्रकार सारूं;
तमे करो ते गणिने तमारूं;
जरूर अेमां जन धर्म जाँणो
अरे स्वदेशी अभिमान आणो।"

इन्होंने 'ऋतुवर्णन' भी लिखा किन्तु आलोचकों की दृष्टि में वह उच्चकोटि का नही है:—

सूर्यास्तवर्णन—गायो चरी गाम भणीवणे छे,
जुदी पडेली समुहे मणे छे,
धणी नदीओ मणी अेक राह
जाणे थयो जान्हाविनो प्रवाह

प्रभातवर्णन—प्राची दिशा मां नभ रक्त दिशे,
अे ठाम शोभा उपजी अतीशे,
जाणे प्रतापी परणे भूपाण,
आनन्दनो आज उडे गुलाल।

'विजय विनोद' भी वर्णनात्मक काव्य है, इसका एक अश देखिए:—

"जाजम पुरिछे जो अहीं, जो अहीं आजमराय।
आजमना इतो वणी, चित्रविचित्र जणाय॥"

इसमें 'आजम' शब्द पर 'श्लेष' है। आजम नाम राजा तथा यमराज दोनों के लिए आता है।

इनकी भाषा सरल तथा प्रसादगुण-युक्त है। कुछ उदाहरण देखिए—राम-लक्ष्मण बन को जा रहें हैं। राम सीता से कहते हैं:—

"राम लक्ष्मण वन मां सीधावतां
सती सीता ने लक्ष्मण साथ,
कहे रघुनाथ पधारो पीयर भणी।"

दूसरा दृश्य बालकों के विद्यालय जाते समय का है :—

"आवजो आवजो आवजो रे, आज वहेलां निशाणे आवजो,
बेहेनी मने बोलावजो रे, आज वहेलां निशाणे आवजो।"

तत्कालीन सामयिक स्थिति पर एक व्यंग्य है :—

"पूरी ओक अन्धेरी ने गंडु राजा,
टके शेर भाजी टके शेर खाजां
बधी चीज बेचाय ज्यां भाव ओके
कदि सारी बुरी न वेचे विवेके।"

ये हास्यरस की कविता भी लिखते थे। एक फूलण जी थे। जाति वाले उन्हें उकसा कर उनके वित्त के बाहर खरच करवा देते थे तथा उनकी झूठी प्रशंसा करके उन्हें चढ़ा देते थे, दलपतराम ने लिखा है :—

फूलणजी तमे फूलाव्या केम फूल्या रे, फूलण जी,
आ उपजखरचनो अडसट्टो केम भूल्या मारा फूलण जी,

कार्बस साहब के सहयोग से इन्होंने पर्याप्त पर्यटन भी किया। वास्तव में कार्बस साहब इनके मित्र, गुरु तथा मार्गदर्शक थे। इनके विषय में दलपतराम ने लिखा :—

करेल कीर्तिमेर, दुनियामां ते देखवा :
कार्बस रूपे फेर, भोजपधार्यां भूमिमां।

इन्होंने भाषा के साथ स्वच्छंदता का व्यवहार किया है। कहीं कहीं इनके भाषा प्रयोग चिन्त्य हैं। इनके परवर्ती कवि नवलराम ने

इनकी कविता के बारे में जो लिखा है उसका हिन्दी सारांश इस प्रकार है—"दलपतरामनी कविता शांति बुद्धि की, व्यवहारपटु, चतुरतापूर्ण तथा सभारंजनी है। यह नव-रस में विचरती है किन्तु विवेक तथा व्यवहार-ज्ञान की मर्यादा में रहती है। दलपत का मुख्य ध्येय संसार का शांत-चित्त से अवलोकन करना है तथा उसमें से व्यवहारोपयोगी ज्ञान संचित करना है। दुःख से छूटने के लिए थोड़ा विनोद भी इनकी कविता में मिलता है। इनकी कविता में मधुर हास्य, मर्म पर चोट करने वाला व्यंग्य एवं अनेक प्रकार का चातुर्य भी मिलता है।"

इनकी शैली का अनुकरण इनके समकालीन तथा इनके परवर्ती साहित्यकारों ने प्रचुर मात्रा में किया। वास्तव में दलपतराम का स्थान गुजराती साहित्य में प्रथम पंक्ति में रखने योग्य है।

नर्मद—इनका पूरा नाम नरबदाशङ्कर था। गुजराती साहित्य में इनका वही स्थान है जो हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का है। ये गुजराती साहित्य में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सूरत की एक संभ्रान्त नागर ब्राह्मण जाति में इनका जन्म २४ अगस्त १८३३ को हुआ। इनके जन्म के समय इनके पिता लालशंकर दवे बम्बई में नौकरी करते थे। इनको अँग्रेजी की शिक्षा मिली। प्रथम बार १८५० तथा दूसरी बार १८५४ में अेल्फीन्स्टन कालिज बम्बई में इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। इस काल में इन्होंने अपने प्रोफेसरों पर अपनी प्रतिभा का सिक्का जमा दिया। ये बचपन से ही परिश्रमशील तथा महत्त्वाकांक्षी थे।

जैसा कि प्रारम्भ में लिखा जा चुका है, इनका समय परिवर्तन का समय था, इन्होंने भी कुरीतियों के विरोध में नारा बुलन्द किया। सोलह वर्ष की उम्र में इन्होंने "जुवान पुरुषोनी अन्योन्य बुद्धिवर्द्धक सभा" में एक भाषण दिया जिसमें संगठन के महत्व पर बल दिया। यह भाषण बाद में प्रकाशित हुआ और इसकी प्रशंसा हुई। इन्होंने सूरत

स्कूल के हेडमास्टर ग्रेहाम की कृपा से १५) रु० महीना की मुनीमी की। नौकरी में इनका मन नहीं लगा। योरोपियनों को शिक्षा देने का कार्य भी इन्होंने किया। रंगमंच योग्य नाटक भी लिखे। कथा वाचना भी कुछ दिन किया। कुछ आमदनी किताबों से होने लगी। ये सब आय के साधन अपर्याप्त थे। सूरत में इन्होंने जनता के लिए 'सरस्वती मन्दिर' की स्थापना की। इनका अन्त समय अत्यन्त कष्टपूर्ण बीता। इन पर काफ़ी क़र्ज़ हो गया था। इनको अनेक लोगों ने आर्थिक सहायता दी।

ये युवावस्था में विलास में पड़ गये थे। खर्च भी अनाप-शनाप करते थे। स्त्रियों के साथ भी इनके सम्बन्ध अधिक सन्तोपप्रद नहीं थे। इनकी प्रथम पत्नी की मृत्यु १८५३ में हो गयी। इन्होंने १८५६ में दूसरा विवाह किया। पांच वर्ष इन्होंने सूरत की एक स्वजातीय विधवा को अपने घर में रख लिया। इस कारण जातिवालों ने इन्हें जाति से पृथक कर दिया।

ये दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति थे। इन्होंने अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त संस्कृत, मराठी तथा हिन्दी का भी अध्ययन किया था।

इनके ग्रन्थ लगभग ५८ हैं; किन्तु अत्यन्त प्रसिद्ध हैं "नर्म कविता" जो कि इनकी कविताओं का संग्रह है तथा दूसरा "नर्म गद्य" जो कि इनकी गद्य रचनाओं का संग्रह है। इसके अतिरिक्त इन्होंने बहुत से कवियों के जीवन-चरित्र लिखे। जो ग्रन्थ इन्होंने संशोधित किये उनमें दयाराम कृत कविता, प्रेमानन्द का दशमस्कंध, नलाख्यान तथा मनोहर स्वामी के पदों का संग्रह हैं। इन्होंने अपना जीवन-चरित्र 'मारी हकीकत' नाम से लिखा है।

इनकी कविता के विषय धार्मिक, नैतिक, सांसारिक तथा आर्थिक प्रश्न सम्बन्धी हैं। वास्तव में इन्होंने लिखा बहुत है किन्तु रस-निष्पत्ति

की दृष्टि से वह काव्य की कोटि में नहीं रक्खा जा सकता। वास्तव में ये प्रयोगवादी थे। इनका मुख्य उद्देश्य सुधार करना था। इनके काव्य के विषय ही सुधार से सम्बन्धित होते थे। इनके उर्मि काव्य तथा वर्णन काव्य उच्च कोटि के हैं। जितनी मात्रा में इन्होंने कविता लिखी है गुण की दृष्टि से उसका बहुत कम हिस्सा उच्च कविता कहा जा सकता है।

इन्होंने पिंगल आदि का अध्ययन भी किया तथा 'पिंगलप्रवेश' लिखा। इन्होंने स्वदेशाभिमान तथा स्वतन्त्रता सम्बन्धी राष्ट्रीय कविताएँ भी लिखीं, लार्ड रिपन पर प्रशस्ति भी लिखी, शौर्यपूर्ण वीररस की कविता भी लिखी तथा प्रकृति-चित्रण भी किया। "वैधक चरित्र" में युवा विधवाओं के दुःखद जीवन पर मार्मिक पंक्तियां लिखी हैं।

इनके शृंगार में अश्लीलता का प्राधान्य है। ऋतु वर्णन में तो अश्लीलता अपनी सीमा पार कर गई है।

सबसे अधिक सफलता इन्हें सांसारिक सुधार विषयक कविताओं में मिली। एक कविता देखिए:—

सहु चलो जीतवा जङ्ग, ब्युगलो वागे,
या होम करीने पडो फतेह छे आगे।
साहसे कोलम्बस गयो नवी दुनियामां,
साहसे नेपोल्यन भीड्यो यूरप आखा मां।
साहसे ज्ञातिना बंध, कापि झट नांखो,
साहसे जाओ परदेश, ब्हीक नव राखो।

उपरोक्त पंक्तियों में जाति के बन्धनों को काट कर, निर्भीक होकर विदेश गमन का सन्देश दिया गया है। कोलंबस तथा नेपोलियन के साहस की दुहाई दी गई है।

भावी भारत का आदर्श नर्मद के मस्तिष्क में क्या था वह इनकी इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है:—

"कोनुं मोढुं में जोयुं अंगमां रङ्ग रमे छे।
उछणी उछणी लोही, डोकीयाँ खुब करे छे।

\+ \+ \+

दिवस हतो छे रात, वणी पाछो दी उगशे
तन मन धन वण तेह, फरीथी ब्हार निकणशे।
कसरत करशे पुरुष, निरोगी पुष्ट थशे बहु,
स्त्रीओ तेमनी साथ, हवा रुडी लेशे सहु।"

\+ \+ \+

बाणलग्न नहिथाय, स्वयंवरथी परणशे,
जाति बन्धनो तुटे, परस्पर जमवुं थाशे।
जाशे जेन परदेश, नवुं त्यां जईने जोशे
आवा ते निज देश, शोभतो करशे होंसे।

गुजरात की प्रशस्ति में लिखा हुआ उनका यह गीत देखिए :—

जय जय गरवी गुजरात,
जय जय गरवी गुजरात,
दीपे अरुणुं परभात
ध्वज प्रकाशशे झणणणण कसुंबी, प्रेम शौर्य अंकित,
तुं भणव भणव नीज संतति सऊने, प्रेम भक्तिनी रीत

अंत में बीच की पंक्तियां, जो इसी गीत का अन्तिम अंश है, इस प्रकार हैं :—

ते अन्हिलवाडना रङ्ग
ते सिद्धराज जयसिंह,
ते रङ्ग थकी पण अधिक सरस रङ्ग, थशे सत्वरे भात
शुभ शकुन दीसे मध्याह्न शोभशे, वीती गई छे रात

जन घूमे नर्मदा साथ,
जय जय गरवी गुजरात,

इनका सूरत से भी सम्बन्ध रहा था। इनका सूरत से विशेष प्रेम भी था। सूरत सम्बन्धी इनकी ये पंक्तियां देखिए:—

आ ते शा तुज हाल, सूरत सोनानी मुरत,
थया पुरा बेहाल, सुरत तुज रडती सुरत।
रे हसी हसीने रडी, च्हडी च्हडी पडी तुं बांकी,
दीपी कुन्दनमां जडी, पडी रे कथीरे झांखी।
+ + +
सुरत तारी शी सुरत, जनो क्यांना ललचाव्या,
फिरङ्गी ने अंग्रेज, वलंदा फ्रांसीस आव्या
+ + +
सुरत तणा ओ तनुज, विशेषे नागर बच्चा,
अनावला काछेच, तमे हठमां नहि कच्चा।
रूडी वातमां हठ्ठ, राखशो रूडी रीते,
स्वार्थ अने परमार्थ, साधि रहेशो सुखि नीते।

स्वदेशाभिमान पर इनकी कविता देखिए:—

देशप्रीत, हङ्कार, छुपा सुतां कहां आजे
+ + +
बिना देश अभिमान, देश उत्कर्ष न थाये,
देश रान समशान, जेहवो खावा धाये,
राज समंधी ऐक्य, नथी अहिना लोकोमां,
जाति बन्धनो खुब, जनो बाधोना मोंमां।

नर्मद का गद्य भी उच्चकोटि का है। शैली मौलिक है तथा भाषा सरल है। इन्होंने गद्य में ऐतिहासिक निबन्ध, आत्मचरित्र, पत्र, नाटक तथा आलोचनात्मक निबन्ध लिखे हैं।

विष्णुप्रसाद त्रिवेदी ने अपने "विवेचना" ग्रन्थ में इनके गद्य के बारे में लिखा है जिसका हिन्दी सारांश इस प्रकार है :—

"नर्मदाशंकर का गद्य एक गुजराती का गद्य है, बहुत सरल, स्पष्ट, ओजपूर्ण, उत्साही, भावपूर्ण, मुहावरेदार, गंभीर एवं यथार्थपूर्ण है।"

वास्तव में गुजराती साहित्य में १८५० से ४० वर्ष बाद तक के साहित्यकारों में नर्मद जैसा प्रतिभाशाली, कर्मण्य, युग-निर्माता एवं मेधावी दूसरा साहित्यकार नहीं हुआ।

१०

नर्मद युग के अन्य कवि

दलपतराम तथा नर्मद ने काव्य के क्षेत्र में जो नवीन मार्ग प्रशस्त किया उसपर अनेक कवि आगे बढ़े।

सवितानारायण—ये १८६७ से १८८५ के बीच में हुए। नर्मदशैली पर लिखी गई इनकी कविता "सबिताकृत कविता" में संगृहीत है। 'बिहारी सतसई' की इन्होंने टीका भी लिखी। "नीति सुधा तरंगिणी" इनकी एक हिन्दी पुस्तक का अनुवाद है। अलंकार सम्बन्धी एक पुस्तक इन्होंने "अलंकार चन्द्रिका" भी लिखी।

विजयाशंकर केशवलाल त्रिवेदी—इनकी एक रचना "विजय वाणी" सन् १८७० में निकली।

हीराचन्द—इनका एक कवितासंग्रह "मिथ्याभिमान मत खंडन" है। इसमें इन्होंने बनावटी कवियों पर व्यंग्य कसते हुए लिखा है :—

> **अरेरे, हाय, हाय, ठेकाणे ठेकाणे गाय,**
> **अेवी शुं कविता थाय ?**

इनके अन्य ग्रन्थ हैं—गायन शतक, जुना रीत रिवाजोनी कविता रुपे निंदा, कुमार बोध, कुमारिका बोध, नामार्थ बोध, गुजराती अनेकार्थ कोश, मुधरेल शास्त्र, गुजरातनी गांडाई, भाषा भूषण, जोधपुर के महाराणा जशवंतसिंह जी के ग्रन्थ अलंकार-शास्त्र पर गुजराती टीका।

भोणानाथ साराभाई—ये अहमदाबाद के उच्च परिवार के थे। ये जाति के नागर ब्राह्मण थे तथा फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी तथा मराठी के विद्वान थे। अर्वाचीन भक्त कवियों में इनका प्रमुख स्थान है।

"ईश्वर प्रार्थना माला" तथा "अभंगमाला" में इनकी कविताएँ संगृहीत हैं। इनकी प्रकृति शान्त तथा मानस वेदनशील है। इनकी भक्ति विषयक कविताओं पर मराठी तथा वैदिक भक्ति कवियों का प्रभाव है। इनके भजन अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

कलापी—इनका समय १८७४--१९०० तक का है। "कलापी" इनका उपनाम था। वास्तव में इनका नाम सुरसिंह जी तख्तसिंह जी गोहेल था। ये काठियावाड़ के लाठी संस्थान के ठाकुर थे। इनकी मृत्यु २५ वर्ष की आयु में हो गई। मुख्यरूप से ये प्रेम तथा शृंगार के कवि माने जाते हैं। प्रेम की सच्ची अनुभूति इन्हें थी। ये १८ वर्ष की अवस्था में कविता करने लग गये थे। साहित्यकार मणिलाल, मणिशंकर तथा गोवर्द्धनराम का इनके जीवन पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा था। ब्राह्मण शिक्षकों द्वारा इन्हें शिक्षा मिली थी।

काश्मीर तथा उत्तर हिन्द में इन्होंने आठ मास तक पर्यटन किया था। ये विशाल-हृदय तथा प्रकृति-प्रेमी थे।

इनकी कविता में असफल प्रणय की यातना मुखरित हो उठी है। इनके दर्द में गहनता है। रमा नामक राजकुमारी से इनका विवाह हुआ। उसके साथ एक लड़की शोभना थी। छोटेपन से ही इनका आकर्षण उस लड़की की ओर था। बड़ी होने पर उस प्रेम का रूप बदल गया। उसका विवाह एक खवास जाति के युवक से करना पड़ा। वह युवक शोभना के योग्य नहीं था। कलापी ने अन्त में शोभना से विवाह किया।

इनकी पांच पुस्तकें हैं—काश्मीरनो प्रवास, माला अने मुद्रिका, हमीरजी गोहेल, कलापीनी पत्रधारा, नारी हृदय (अपूर्ण)। "कलापीनो केकाख" इनकी लिखी रचनाओं का संकलन है।

इनकी गजलों का संग्रह श्री सागर ने "गजलिस्तान" नाम से सन् १९१३ में किया। "आपनी यादी" शीर्षक इनकी यह गजल देखिए:—

"ज्यां ज्यां नजर मारी ठरे, यादी भरी त्यां आपनी,
आँसु महीं ओं आँख थी यादी झरे छे आपनी

\+ \+ \+

रोऊँ न कां ओ राहमां बाकी रहीने ओकलो,
आशकोना राहनी जे राहदारी आपनी।

\+ \+ \+

"किस्मत करावे भूल ते भूलो करी नांखु' बधी,
छे आखरे तो ओकली ते ओज यादी आपनी।"

अंग्रेजी कवि शैली की कविता "दी क्लाइड" से प्रभावित होकर 'कमलिनी' लिखी है। उसकी कुछ पंक्तियां दृष्टव्य हैं:—

"कुमुदी न्हानी बेनडी मुज, व्हाल चन्दा पर धरे,
चन्दा कुंणा करस्पर्श मृदुथी, फेरवे मुखडा परे;
भगिनी मारी लाडकी ते जागती आखी निशा,
मुज पास जल शैया परे निद्रा करे दिनमां सदा।"

पशु-पक्षियों से इन्हें स्नेह था। "मने जोई ने उडी जतां पक्षीओने" शीर्षक कविता में इन्होंने लिखा है:—

"सौन्दर्यो वेड फी देतां ना ना सुन्दरता मणे,
सौन्दर्य पामतां पहेलां सौन्दर्य बनवुं पडे।"

प्रेम, सौन्दर्य तथा दर्शनयुक्त कविता लिखने वालों में कलापी एक विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं।

प्रो० मणिलाल द्विवेदी—ये नड़िआद के साठोदरा ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम नमुभाई द्विवेदी था। ये तत्वज्ञानी तथा गंभीर विद्वान थे। ये रससिद्ध पद्यकार के अतिरिक्त सफल गद्यकार भी थे। इनका समय १८५८—१८९८ तक का है। इन्होंने अंग्रेजी की

उच्च शिक्षा लेकर स्कूल इंस्पेक्टर का कार्य किया। इनकी आध्यात्मिक कविताओं का संग्रह "आत्म निमज्जन" है। इसके दो भाग हैं "अभेदोर्मि" तथा 'प्रेमजीवन'। 'आत्म निमज्जन' की भूमिका में मणिलाल ने लिखा है कि आत्मा में पैठ कर जो मोती-रत्न ढूंढे हैं उन्हें कविता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इनकी एक लोकप्रिय गज़ल देखिए—

"कहीं लाखो निराशामां अमर आशा छुपाई छे !
वफ़ा बंजर सनमनामां रहम ऊँडी लपाई छे !
जुदाई जिन्दगीभरनी करी रो रो बधी कहाडी,
रही गई वस्लनी आशा, अगर गरदन कपाई छे।
घड़ी वस्लनी आवी, सनम पण छेतरी चाली।
हजारो रात वातो माँ गमावी ओ कमाई छे।
जखम दुनिआ जबानो ना, मुसीबत खोफना खंजर,
कतल माँ ओ कदमबोसी, ऊपर कयामत खुदाई छे।
शमा पर जाय परवाना, मरे शीरी ऊपर फरहाद,
अगम गमनी खराबीमाँ, मजेदारी लुंटाई छे।
फ़ना करवुं फ़ना थावुं, फ़नामा राह समाई छे।
मरीने जीववानो मन्त्र, दीलबर ने दुहाई छे।
जहर नू नाम ले शोधी, तुरत पी ले खुशी थी तुं,
समन ना हाथनी छेल्ली, हकीकत नो रफाई छे।
सदा दिलना तडपवामां, सनमनी राह रोशन छे।
तड़पते तूटतां अन्दर, खड़ी माशूक साँई छे।
चमन ना आवीने उभो, गुलो पर आफरीन थई तुं,
गुलोना खार थी बचतां बदन गुलने नवाई छे।
हजारो ओलिया मुरशिद, गया माशूकमां डूली,
न डूल्या ते मुवा, ओनी कलामो सावा गाई छे।"

आनन्द शंकर ध्रुव ने अपने ग्रन्थ 'साहित्यविचार' में इनके बारे में लिखा है जिसका हिन्दी सारांश इस प्रकार है :

"इनका समस्त जीवन तथा ग्रन्थकार रूप में इनकी प्रकृति तथा इनका उद्देश्य एक ही था "अभेदानुभव"। इस उद्देश्य को इन्होंने धर्म में, नीति में, काव्य में तथा गृह में अपनाया।" वास्तव में इन्होंने अपने मन रूपी क्षीरसागर से विविध विषयों को मथकर कवितारूपी रत्न देकर गुजराती साहित्य की अभिवृद्धि की है।

बालाशंकर उल्लासराम कंथारिया—इनका समय १८५९ १८९८ है। ये नडिआद के रईस थे। इन्होंने कई पत्रों का सम्पादन किया। इन्होंने हाफ़ेज की अधिकांश गजलों का अनुवाद किया। इनके काव्य-संग्रह "हरिप्रेमपंचदशी" तथा "क्लान्त कवि" नाम से प्रसिद्ध है। इनके काव्य पर सूफीमत का प्रभाव है। इनके मन्तव्यों में दृढ़ता है। इन्होंने फारसी की गजलों को भी गुजरातीमय बना दिया है तथा उसमें फारसी शब्दों का प्रयोग न्यूनतम मात्रा में किया है। इनकी कुछ गजलें निम्नलिखित हैं:—

(१) **दिलदारनां दर्शन बिना बीजू मने गमतूं नथी,**
पुतणी पटे नजदीकमां बेठा बिना गमतुं नथी।

(२) **जीगरनो यार जुदो तो बधो संसार जुदो छे,**
बधा संसार थी अे यार, बेदरकार जुदो छे।
अरे शुं जाणशे लज्जत, पवित्रीमां पडी रहेतो,
प्रियानी प्यालीनी मस्ती तणो, कंई बहार जुदो छे॥

(३) **कचेरी मांही काजीनो नथी हीसाब कोडीनो,**
जगत काजी बनीनें तुं, वहोरी ना पिडा लेजे।

(४) **गुजारे जे शिरे तारे, जगतनो नाथ ते स्हेजे,**
गण्युं जे प्यारूं प्याराअे, पुरु प्यारूं गणी लेजे।

: ११ :

गोवर्द्धनराम तथा अन्य आधुनिक कवि

गोवर्द्धनराम माधवराम त्रिपाठी का जन्म सन् १८५५ की विजया-दशमी को हुआ था। ये नागर ब्राह्मण थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बुद्धिवर्द्धक पाठशाला में हुई। माध्यमिक शिक्षा नडियाद तथा उच्च-शिक्षा ऐलफिन्स्टन कालिज बम्बई में हुई। १८७५ में बी० ए० पास किया तथा १८८३ में बम्बई में वकालात प्रारम्भ की। १८७९–८३ में इन्होंने भावनगर के दीवान शामलदास परमानन्ददास के मंत्री रूप में कार्य किया। बम्बई में १९०७ की जनवरी में इनकी मृत्यु हुई।

गोवर्द्धनराम की सांस्कृतिक देन गुजराती साहित्य को महत्त्वपूर्ण है। "सरस्वतीचन्द्र" नामक इनकी गद्यकृति ने इन्हें अमर बना दिया। गुजराती साहित्य में "सरस्वतीचन्द्र" प्रथम कोटि के ग्रन्थों में है जिसका परिचय 'गद्य-खंड' में मिलेगा। गोवर्द्धनराम पर चरोतर, भावनगर तथा बम्बई तीनों स्थानों का विभिन्न असर पड़ा। इनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। अधिकांश आलोचक गोवर्द्धनराम के प्रभाव के कारण इनके समय को गोवर्द्धनराम-युग की. संज्ञा देते हैं जिसका समय १८८७ से १९२० तक का माना जाता है। "सरस्वतीचन्द्र" के समकक्ष इनका दूसरा ग्रंथ "साक्षर दृष्टिनूं" भी अपने दार्शनिक वैभव के कारण अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। इसका विवेचन भी गद्य-खंड में होगा।

कवि के रूप में यद्यपि इनका अधिक महत्त्व नहीं है किन्तु इनकी कुछ कविताएँ कविता की दृष्टि से उच्चकोटि की मानी गई हैं और इन्हें पर्याप्त लोकप्रियता तथा मान्यता प्राप्त हुई है। अधिकतर इनकी कविता दार्शनिकता लिये हुए है तथा करुणरस से ओतप्रोत है। "कोकिलाने" शीर्षक इनकी एक कविता का कुछ अंश देखिए :—

नील लीलम समाँ लाल गाले बेठाँ तमे जे तणे रे,
अेवा रूडा आँखलियानो डाण मूकीने, कोयल क्याँ गयाँ रे !
ऊँचे सोहे प्रभात ना रंग राता राता आभमां रे,
तेवा नाचे नीचे आना महोर !
फाल्यो फाल्यो ओटवलियो आ काण वसंतसमीरमाँ रे,
सूनो तोय तमो विना आज—
काणा काणा भेदी जाड़ा मेघ, किरण शशीलेखानां रे
ठारे आँख, न लेखा जणाय !!
भेदी तिमिर तणाँ पड अेम ऊंडाँ गाणाँ तमतणं रे,
सुणो कान, तमो न देखाव !

दार्शनिक भाव की "स्नेहनिदान" शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ देखिए :—

"मुज वृत्तमाँ नथी को नवाई, सिवाय पण हुं शुं कहुं ?
पूछ्युं तथापि तमेज तो हुं नकार पण शी रीते भणुं ?
मुज जेवुं वृत्त धणकनुं सुणशो पूछ्ये आ देश माँ;
परदेशी सज्जन ! हिन्दुओ गाणेज जीवन क्लेश माँ !
नरजात सुखी हशे अहीं कदी मालती स्वच्छन्दथी;
पण नारीने रोया विना नहीं कर्ममां बीजू कंई ।
पंडित पिता तणी आत्मजा भणी कंई हुं तात प्रताप थी;
मन विकसियुं, उर चोंटियुं सद्गुण विशे बहु भावथी !

हरिलाल ध्रुव—ये बड़ौदा में जज थे। साठोदरा नागर जाति के थे। इन्होंने विदेश से "डाक्टरेट" की उपाधि प्राप्त की थी। ये संस्कृत तथा प्राकृत के पंडित थे। गुजराती कविता को पाश्चात्य शैली में ढालना इनका ही कार्य है। इन्होंने अँगरेजी की प्रसद्धि कविताओं का अनुवाद भी गुजराती में किया। स्वदेश प्रेम तथा स्वदेशाभिमान इनकी कविता की मुख्य विशेषताएँ थीं। इन्होंने कई साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। 'नागरउदय' तथा 'चन्द्र' उनमें प्रमुख थे। इनकी कविता प्रसादगुण-युक्त है। नर्मद की कविताओं का प्रभाव भी इनकी कविता पर दृष्टिगोचर होता है। इन्होंने संस्कृत के ग्रन्थ मेघदूत, कौमुदिमाधव आदि का अनुवाद भी किया। "कुंजविहार" में इनकी कविताओं का संकलन है। बर्न्स की कविता का अनुवाद देखिए :-

Had we never loved so blindly,
Had we never loved so kindly,
Had we never met nor parted,
We had never been broken-hearted.

अनुवाद

"ना होत स्निग्ध नयनो निरख्यां कदापि,
बोल्यां न होत प्रथमेथी मुखे तथापि,
बांधी न होत अकणावति प्रीत चित्ते,
तो झंखना नहत दुःखद कोई रीते !!

राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत इनकी एक कविता देखिए :—

"अेकवार मेदान पड्या रण चड्या के घुमवुं घुमवुं !
अंग तरंगित उमंगथी शिरशत्रु झझुमवुं झझुमवुं !
शूरा ! सामद हो ! अेकवार !!

शरम शानि स्वदेश सेवा मां ! मुरवत त्यां कामनी शी ?
प्हेल पेलो करे, प्हेल बीजो करे,—अे आश कामनी शी ?
शूरा सामद हो ? अेकवार

तथा

"अे भूमी हमारी, मैया हमारी, कोण अवर कहेशे निजनी ?
न देउं उचरवा ।
"अे स्वदेश माटे को रणयज्ञे, प्राण आहुति देउं सजनी
न चाहुं उगरवा ।
"नथी रांकडा, नथी बायला, नथी रेवा नित दास सृज्या,
कयम गाजी न कहीअे ?
"छउं स्वधर्मरंगी, स्वकर्म संगी, स्वदेशजोगी, प्रेमभींज्या !
हजी अेक ज हईअे - "

मरजबान—इनका पूरा नाम फरदुन जी मरजबान था। ये पारसी थे। इन्होंने लगभग ४७ पुस्तकें लिखी। शेखसादी के "गुलिस्तान" के पद्य-भाग का भाषान्तर इन्होंने "फुलेस्थान पोथी" के नाम से किया। इन्होंने फुटकर कविताएँ भी लिखीं। एक छन्द देखिए:—

"ओ बाबा आदमनी ओलाद, साफ देलथी तमो,
सेतायश करो तेहनी-ने अेकला तेने नमो
नफो तेमां जोशो धणे, न कदी ना जो सो हाण,
ते पोताना भगतोनुं, सदा करे छे कलेआण"

मलबारी—(१८५३-१९१२) बेरामजी मेरवानजी मलबारी उन पारसी कवियों में से हैं जिन्होंने गुजराती कवियों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। इनके चार काव्य-ग्रंथ हैं—(१) नीति विनोद (२) विलमनविरह (३) अनुभविका (४) संसारिका।

'नीतिविनोद' में स्त्री जाति के दुःखों का चित्रण है। एक विधवा का विलाप देखिए :—

प्रभुअे पेलुं सुख न चखाड्युं के, मुज कंगाणने रे लोल,
भाँग्या चूडाओ चंडाणे के, बोडचा बालने रे लोल
काणुं कामणीउ ओढाड्युं के पियुना नामनुं रे लोल,
वेश उतरावी मंन मनाव्युं के गयेला श्यामनुं रे लोल

इनकी एक कविता "मृत्युलेख" बहुत प्रसिद्ध है जिससे इनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण ज्ञात होता है :—

"फरज जो अदा में कीधी हो, खुदा !
गरज बीजी शी ! अेक फाटी चदर,
न उपकार कोना, न कोनी अदा,
मणे चार गजनी जो सादी कबर,
ननामी, छूपी, को बियाबान मां,
के परवतनी ढणती तलेटी ऊपर;
गमे कोतरे, तुज खुद मानमां,
फकत बेज बोलो इलाही शुकर"

खबरदार—ये दमण के रईस थे। इनका पूरा नाम अरदेशर फरामजी खबरदार था। गुजराती के ये लोकप्रिय कवि हुए हैं। ये जागीरदार थे। इनका मोटर तथा साइकिल का अच्छा व्यापार था। १८९४ में सर्वप्रथम इनकी कविताओं का संग्रह "अेकसो दृष्टान्तिक दोहरा" नाम से प्रकाश में आया और अन्त का ग्रंथ "गुजराती कविता ना रचना करणा" नाम से १९४१ में प्रकाशित हुआ। इनका अध्ययन गहन था। ये चिन्तक तथा विचारक भी थे। काव्यसिद्धान्त के पंडित थे। देशभक्ति की कविता में नर्मद के बाद इनका नाम आता है। तत्त्वज्ञान सम्बन्धी कविता में मणिलाल के ये समकक्ष माने जाते हैं।

"मोटालाल" नाम से इन्होंने "पैरोडियाँ" भी लिखीं जो अत्यन्त लोकप्रिय हुई । इनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी । "गुणवंती गुजरात" शीर्षक इनकी गरबी प्रत्येक बालक से आप सुन सकते हैं । इन्होंने अँगरेजी में भी कविताएँ लिखीं । गुजराती में आधुनिक शैली के कवियों में ये अग्रगण्य हैं ।

इनके चार संग्रह प्रसिद्ध हैं— काव्य-रसिका, विलासिका, प्रकाशिका तथा भारतनो टंकार । रासचन्द्रिका तथा भजनिका भगवत्विषयक कविताओं के संग्रह हैं ।

"काव्य-रसिका" की काव्यभावना, प्रकृतिवर्णन तथा नीतिबोध प्रशंसनीय हैं । भाषा अत्यन्त ललित है । "विलासिका" में नये छन्दों के प्रयोग किये गये हैं । रस की दृष्टि से "प्रकाशिका" की कविताएँ उत्तम हैं ।

"गृहद्वारना बेलडियाँ" शीर्षक इनकी गरबी के कुछ अंश देखिए :—

"आछा घूंघट उघाड,
सखीरी ! तारा आछा घूंघट उघाड !
उर सौंदर्य चखाड,
सखीरी ! तारा आछा घूंघट उघाड !
रसरंगीली चंदा माधुरी
वेरे रूपाकूल;
वादणवसन मुखेथी खसेडी
करती दुनिया डूल;
सखीरी ! तारा आछा घूंघट उघाड !
सरवर सलिले कुमुदिनी नाचे
अनिले अनिले पूर;

मुखवल्लरी खीलवे पांखडीमां।
झीलवा चंदा उर;
सखीरी ! तारा आछा घूंघट उघाड !
नहि झीले तो नहि खीले ओ,
वीले मुख सुकाय :
उरसंवाद प्रफुल्ल वसे त्यां,
रस जोडी विकसाय;
सखीरी ! तारा आछा घूंघट उघाड !

भाषा तथा भाव की सरलता की दृष्टि से "हालरडु" शीर्षक इनका गीत देखिए :—

बाणकडां पोढो रे मारां बाणकडां पोढो !
पंखीडां सूतां जई माणे
खाई हिडोणा आंबाडाणे,
झुलातां पारणियां मांले,
बाणकडां पोढो !
बाणकडां पोढो रे वा लां बाणकडां पोढो !
नींदरडी आ आली अटारी,
गाती ने नाचन्ती सारी;
कोमणडां नेणोने ठारी,
बाणकडां पोढो !
बाणकडां पोढो रे मीठां बाणकडां पोढो !
तारलिया रक्षो मुज बापु,
चांदलियानुं अमृत आपुं,
दुखडां लई रुदयाशुं चांपुं;
बाणकडां पोढो !

बाणकडां पोढो रे ! मोंधां बाणकडां पोडो !
पंखीडां उठशे सहु ज्यारे
कलरव करतां गाशे त्यारे
हसतां रमतां उठजो हां रे
बाणकडां पोढो ?
बाणकडां पोढो रे मारां बाणकडां पोढो !

नरसिंहराव दिवेटिया—गुजराती के आधुनिक कवियों में इनका प्रमुख स्थान है। १८५९ में इनका जन्म अहमदाबाद में हुआ। इनको अंग्रेजी की उच्च शिक्षा मिली। इन्होंने सरकारी नौकरी में अपना पर्याप्त समय व्यय किया। अवकाश के समय ये साहित्य-सर्जन करते थे। इनकी काव्य में प्रवृत्ति थी। ये मेधावी थे। इन्होंने साहित्यिक भाषण देने में यश अर्जन किया। इनकी विद्वत्ता सर्वमान्य थी। गुजराती के प्रतिष्ठित मासिक पत्र 'वसंत' में इनकी साहित्यिक कृतियाँ बराबर प्रकाशित होती रहती थी। पुराने साहित्य का भी इनको यथेष्ट ज्ञान था। इन पर अंगरेजी कवियों का विशेष प्रभाव था। इनको प्रकृति-चित्रण में विशेष रुचि थी।

प्रो० मणिलाल नमुभाई ने इनकी कविता पर व्यंग्य किये। उनका मत था कि दिवेटिया की कविता पाश्चात्य कवियों की छाया मात्र है। किन्तु इस मत का गुजराती साहित्यकारों में कोई असर नहीं पड़ा।

"कुसुममाला" तथा "हृदय वीणा" इनके प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ हैं।

"स्मरण-संहिता" इनके युवा पुत्र के आकस्मिक निधन पर लिखी गई शोक-ग्रस्त कविताओं का संग्रह है। "नूपुर-झंकार" "लाइट आफ एशिया" तथा "महाभिनिष्क्रमण" पर आधारित भाषान्तरों का संग्रह है।

इनकी कुछ कविताएँ देखिए :—

मङ्गल मन्दिर खोलो,
दयामय, मङ्गल मन्दिर खोलो,
जीवन वन अति वेगे वटाव्युं
द्वार उभो शिशु भोणो ।
तिमिर गयुं ने ज्योति प्रकाश्यो,
शिशुने उरमाँ ल्यो ल्यो,
दयामय, मङ्गल मन्दिर खोलो ।

"उषानु' गीत" में इनका प्रकृति-चित्रण देखिए :—

सनातन यौवने राती, हसुं आनन्द हुँ लहाती;
आनंद कुसुम वीणती, दिव्य उपवननी माँही,
ने कुसुमो अे वेरती, मर्त्य लोकमां काँई;
कुसुम वेरी मनुज लोके सुख सुगंधो भरु' थोके;
कृति अे उदारने योगे, मधुर गान हुं रहुं गाती सनातन ।

मध्यरात्रि में कोयल का वर्णन देखिए :—

नगर बधुं आ शाँत सुतुं, चाँदनी पण अहिं सुँती,
ने वादणीओ चपण ते पण आ समे नव जागती ।
अनिल धीरे भरे पगलां पणे शाँति रखे सहु,
त्यां उछ्णती आनंद रेले, कोकिला बोले-टुहू !

आनन्दशंकर बा. ध्रुव ने 'साहित्यविचार' में इनके बारे में लिखा है जिसका हिन्दी सारांश इस प्रकार है :—

"नरसिंहराव केवल कवि, विद्वान् तथा भाषाशास्त्री ही नहीं थे वे सर्वतोमुखी थे और सब क्षेत्रों में उच्च थे । इन्होंने नर्मद जैसी मेधा पाई थी तथा लाक्षणिक स्वरूप में कहा जा सकता है कि कहीं-कही ये नर्मद से भी उच्च दिखाई देते हैं ।"

बणवंतराय—इनका समय १८६९–१९५० है। ये बी० ए० पास थे। "भणकार" इनका कविता-संग्रह है। ये अच्छे कवि थे। "युग मुबारक" शीर्षक कविता में से कुछ पंक्तियां उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं :—

शकुननं सबरस ल्यो, हाँरे कोई सबरस ल्यो !
मंगलदिन मंगल घड़ी मंगल अरुण सोहाय,
मंगल कुदरतथी वही मंगलोर्मि छलकाय;
अेथी मुज अखेपात्र उभराय।
दिन पलटचो पलटी घड़ी पलटी हाथ कमान;
कलि–रजनी–संध्यां तणा विषादनं अे गान,
परन्तु आ तो उगतो भाण।
कलि–जडता–विष उतरे, स्फुरे प्राण शबमांह्य
रजनी त्रण वीती गई, रक्त सजीवन थाय;
फरीथी ओपे पौरुष काय।

बोटादकर—इनका पूरा नाम दामोदर खुशालदास बोटादकर था। इनके काव्य-संग्रह, 'कल्लोलिनी', "निर्झरणी" तथा "स्रोत-स्विनी" प्रसिद्ध हैं। ये गजलें भी लिखते थे। "रासतरंगिणी" इनके गीतों का संग्रह है। इनका "शैवालिनी" नामक काव्य-संग्रह इनकी मृत्यु के पश्चात् १९२५ में नरसिंहराव दिवेटिया की भूमिका के साथ प्रकाशित हुआ। भाषा तथा भाव दोनों ही दृष्टियों से इनकी कविता श्रेष्ठ थी।

प्रेम सम्बन्धी इनकी एक कविता देखिए :—

"अहो सत्स्नेह अंगे, सुहृद अे बोलवुं छाजे ?
चहे जो प्रेम आदरने, नहि अे प्रेम प्रेमीनो।"

मेघ को सम्बोधित एक पद्यांश देखिए :—

परन्तु कँ जुदुं तुज हृदयमाँ व्हाल विलसे,
अने अेथी आशा धरी अधिक आ अंतर हसे,
तने जीती लेवा अम निकट शक्ति कंई नथी,
तने आकर्षंती अभण अनुरक्ति कंई नथी ।
परंतु प्रेमीनाँ उर कंई अपेक्षा नव धरे,
निसर्गेथी नित्ये सकण जननाँ सङ्कट हरे
तने अे सन्मार्गे प्रिय अधिक व्हाली ! विचरवुं,
यशः काये जीवी, जग नजरथी मात्र भरवुं;
अने अेवी रीते अवनितल आवी उतरजो,
कृपाथी कल्याणी ! प्रतिभवन पीयूष भरजे ।

मणिशंकर रतनजी भट्ट—चावड के प्रश्नोरा नागर थे। "वसंत-विजय" तथा "चक्रवाक मिथुन" इनके प्रसिद्ध काव्य हैं। "व्हालाँ नो विदाय" भी इनका प्रसिद्ध काव्य है। इनकी मृत्यु के पश्चात् "पूर्वालाप" नाम से इनका काव्य-संग्रह निकला। इनकी कविता की भाषा बोधगम्य है। इनमें वर्णन करने की अच्छी प्रतिभा थी। ये मस्त तबियत के थे। दर्शन में इनकी रुचि थी। प्रो० रामनारायण पाठक ने इनकी कविता के बारे में लिखा है :—

"इनकी रसवृत्ति तथा हृदय के संस्कार अंग्रेजी काव्य के हैं। पाश्चात्य संस्कृति की नवीनता, बल तथा सजीवता इनके समय में थी। मणिलाल का विकास इसी वातावरण में हुआ था।"

"वसंतविजय" तथा "चक्रवाकमिथुन" में करुण रस प्रधान है। ये सुकुमार भावों के कवि थे। इनके गीत उल्लासयुक्त हैं। इनकी कुछ कविताएँ देखिए :—

(१) हिन्द पर आशीर्वाद

उतारो जी अम देशे ईश्वर आशीर्वाद.

बांधव देश थया जागृत सौ :
अेक रही अम दाव !
उतारो जी अम देशे ईश्वर आशीर्वाद.
शतको वीत्यां भर निद्रा माँ
कीधो पूर्ण प्रमाद;
पूर्वजनी उज्ज्वल कीर्तिनी
न करी साची याद !

(२) चक्रवाकमिथुन

लांबा छे ज्यां विन प्रिय सखी, रात्रीअे दीर्घ तेवी,
आ अैश्वर्ये प्रणय सुखनी होय ! आशाज के वी ?
महेमानो ! ओ व्हालां ! पुनः पधारजो !
तम चरणे अम सदन सदैव सुहाय जो !
बेसीने कोण जाणे क्यंहि परभृतिका गान स्वर्गीय गाय,
गाणी नांखे हलावी रसिक, हृदय ने वृत्तिथी दाख जाय।

(३) वसंत विजय

नहीं नाथ ! नहीं नाथ ! न जाणो के सवार छे !
आ बधुं घोर अंधारुं हजी तो बहु वार छे ॥
हजारो वर्षो अे वचन नीकल्याने वही गयां,
खरे ! वक्ता श्रोता नथी तदपिअे विस्मृत थयां;
सहु भाद्री पांडु तरत ज पिछाने उचरतां
वही जो के वेणा निरवधि शतशृंग फरतां।
गिरिना प्रान्तमां कोई बांधी पर्णकुटी द्वय।
बन्ने राज्ञी तथा राजा करतां काल त्यां क्षय।

नानालाल—इनका जन्म सन् १८७७ में हुआ। ये सुप्रसिद्ध कवि दलपतराम के पुत्र थे। ये वढवाण के श्रीमाली ब्राह्मण थे। अपने विद्यार्थीकाल में ही ये कविता लिखने लग गये थे। इन्होंने एम० ए० करने के बाद सरकार के शिक्षा-विभाग में नौकरी की। गुजराती साहित्य में इनका स्थान प्रथम कोटि में आता है। इनका व्यक्तित्व निराला था। इन्होंने मुक्त छंद का प्रयोग अपने काव्य में किया जिसकी पर्याप्त टीका-टिप्पणी की गई किन्तु ये अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। गद्य तथा पद्य दोनों में ही ये समान गति से लिखते थे। इनका अध्ययन भी गहन था। इन्होंने प्राचीन ग्रंथों तथा इतिहास का मथन किया था। इनकी कविता स्नेह-सिक्त एवं भाव-पूर्ण है। रस परिपाक की दृष्टि से इनकी गरबियां तथा गीत श्रेष्ठतम हैं। अपने पूर्ववर्ती एवं परवर्ती कवियों में इनका स्थान विशिष्ट है। इनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। इनकी कविता के विषय देशप्रेम, भक्ति-भावना, तथा शृंगार हैं। इन्होंने गीता का भाषांतर भी किया।

"कुरुक्षेत्र" १२ कांडों का इनका वृहत्काव्य है। इसमें कवि ने महाभारत के महत्त्वपूर्ण पात्रों का अपने दृष्टिकोण से चित्रण किया है। "राजराजेन्द्र" नामक इनका एक लघुकाव्य है। काठियावाड़ में रहने के कारण इनकी कविता में काठियावाड़ के ग्राम्य जीवन की झाँकियाँ मिलती हैं। इन्होंने छोटे छोटे 'रास' भी लिखे। इनकी फुटकर कविता प्रचुर मात्रा में है।

'गुजरात' को दी हुई इनकी श्रद्धांजलि देखिए :—

धन्य हो ! धन्य ज पुण्य प्रदेश !
अमारो गुणियल गुर्जर देश;
कृष्णचन्द्रनी कौमुदीउजणो,
कीध प्रभु अेय स्वदेश :

अमारो गुणियल गुर्जर देश
आर्यनुं सागर तीर्थपुराण,
तपोवन भृगुवासिष्ठना भाण ;
गीताना गानारा महाराज
पार्थना सारथीनां ज्यां राज्य :
ग्रीसरोमथीय जूनां
कुरुपांडवथीये प्राचीन,
सोमनाथ, गिरिनगर, द्वारिका :
युग युग ध्यानविलीन
उभी ने कालसिन्धुने तीर
बजावे बंसरी भव्य सुधीर।

प्रकृति-चित्रण की दृष्टि से 'सरोवर' शीर्षक कविता देखिए :—

नरी सरलता कोण पूजशे?
नथी तेज, नथी तरंग :
शान्त, विमल, विरल, रम्य :
तुज मुख शुं भयुं सौम्य, मुज लाडिली !
अलौकिक नील पट सन्ध्या लईने
प्रशान्त निद्रित बाल प्रभात,
अन्तरिक्षना रंग धरी सूतुं
तुज नयन सभा जलहृदये; मुज लाडिली !

अब ओज-भरी वाणी देखिए :—

धर्मना वीर ! ओ आर्यपुत्र ! उठजो !
सुभटना शुक्र ननो वागो घडीओ ;
उत्तरायण थया, उत्तरे रवि वल्या,

भानुना भर्गनी वरसो झडीओ ।
मृत्युने बाणता, शान्त ने बोधता ,
भीष्म पोढ्या हतां युद्ध घाटे ।
मृत्यु ने परहरी, शान्ति माथां भूरी शूर त्यभ संचरो युद्धवाटे ।

वास्तव में यदि नानालाल को आधुनिक गुजराती कवियों का मुकुटमरिण भी कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी ।

डाह्याभाई पी. देरीसरी—"बुलबुल" तथा "चमेली" इनके काव्य-संग्रह हैं । इनकी कविता प्रेमविषयक तथा आत्मलक्ष्यी है । इनके काव्य में ताजगी तथा पदलालित्य है । इनकी दो साखियाँ देखिए :—

(१) **जोके आ दिल माहरूं, होय थयेलुं खाख ,**
प्रेम भजन भूले नहि, प्रेम प्रेम कहे राख ।
खरे मुज खाख कहेवानी, रुडूं तुम नाम देवानी ,
हृदयमां आश रहेवानी, "थई रहूं प्रेमनो बंदो" ।

(२) **अर्ध निशाकरथी रुडूं, प्यारी तुज कपाल ,**
मंगलसम महीं शोभतो, गोण चाँदलो लाल ।
विखरी वांकी अनेकाणी, ललित लट शोभती वाणी ,
अटकी भालेज रुपाणी, अरे, जा, शुं खसेडे छे ।

दौलतराम पंड्या –'इन्द्रजीतवध काव्य' तथा 'सुमनगुच्छ' इनके दो काव्यसंग्रह प्रसिद्ध हैं । प्रथम संग्रह पौराणिक है । इनका समय १८५४-१९१७ है । ये नाडिआद के नागर ब्राह्मण थे । इन्द्रजीतवध में वीररस का अच्छा परिपाक हुआ है । इनका एक संग्रह 'कुसुमावली' नाम से भी है ।

भीमराव भोणानाथ—ये नरसिंह राव दिवेटिया के भाई थे । इनके ग्रन्थ आबुवर्णन, मेघदूत भाषांतर, देवरणदेवी काव्य नाटक, लावण्यमयी

तथा ग्यूबीली है। इन्होंने 'पृथ्वीराजरासो' का अनुवाद भी किया है। इनकी कविता में शब्द-लालित्य प्रशंसनीय है। कालिदास की कविता को आत्मसात् करके नवीन रचना करने वालों में भीमराव प्रमुख हैं। इनकी कविताओं का एक संग्रह 'कुसुमांजली' नाम से भी हुआ है।

ललित—इनका पूरा नाम जन्मशकर महाशंकर बुच है। ये गोडरा के वडनगरा नागर ब्राह्मण हैं। ये अपने उर्मिगीतों तथा गरबियों के कारण अत्यधिक लोकप्रिय हैं। इनके उर्मिगीतों तथा अन्य कविताओं का संग्रह 'ललिता ना ललकार' १६४८ में प्रकाशित हुआ। ये सामयिक कविता भी लिखते रहे हैं। ये स्वय भी मजीरा लेकर अपनी कविता को गाते हैं। इनके दो भजन देखिये—

(१) **धा सुकिये दुःखियानी व्हालाँ ! बंधु बनिये ,**
बंधु बनिये रे ! अेना बेली बनिये।
"अेकज जननीमां जायां—
अेकज शिरछत्र छवायां—
रंक भांडुंनां रखवाणा लेईअे !"

(२) **मढूली मजानी पेले तीर, संतो व्हालाँ !**
अनेरी अमारी अे लगीर !
वृक्षो वेलडी ओवाणां, कुमणाँ फूणकूल रसाणाँ ?
लई जाओ ल्हाणुं अे लगीर ! —संतो

डाक्टर चंदुलाल देसाई—ये दांत के डाक्टर हैं। ये 'वसंतविनोदी' नाम से कविता लिखते हैं। इनके काव्यसंग्रह का नाम 'टड्डकार' है।

रमणभाई नीलकंठ—मुख्यरूप से ये हास्यरस के लेखक के रूप में विख्यात हैं किन्तु इन्होंने करुणरस पूर्ण कविताएँ भी लिखी हैं। अपनी पत्नी के अवसान पर जो कविता इन्होंने लिखी वह करुणरस के कारण उल्लेखनीय है—

त्यारे गई शुं आई थी प्रिया तुं !
मुकी गई आ हईयुं रोखातुं ।
ग्रहो फरे छे रवि आसपास
छाया फरे ज्यां वचमां प्रदार्थ
प्रदक्षिणा अे प्रिय फेरी सर्वे
क्यां हुं फरूं रे तुज विग मध्ये ?
शुं कांई शोधुं कहिं धूमकेतु,
जेने अगाडी वधतो ज देखुं
जेने न मध्ये कई खेंचनारूं,
पाछो फरेजे नहि कोई सारूं
ने छोडी सर्वे सुख शान्ति प्रीते,
स्वीकारी ने संगत तेनी नित्ये,
नवा नवा रोज प्रदेश माणुं ?
जाऊं अहिंथी — अहिंथी ज जाऊं ?

उमाशङ्कर जोशी —गुजराती साहित्य के अधुनातन कवियों में आप अग्रगण्य हैं। कवि के अतिरिक्त आप सफल गद्य-लेखक भी हैं। आपने काव्य में नई शैली को जन्म दिया है। आप 'वास्तववाद' के प्रवर्तकों में से हैं। आपके काव्य संग्रहों में 'विश्वशान्ति', 'गंगोत्री' तथा 'निशीथ' प्रसिद्ध हैं। आपका मत है कि जो वस्तुएँ शाश्वत सौन्दर्य की हैं वे सदैव काव्य में स्थान पायेंगी। अति आधुनिक किसी आलोचक के उत्तर में आपने यह कविता लिखी—

'कहो छो के थाक्या कथन सुणि फूंणां कुसुमनां,
कहो छो के राखो प्रणयरुदनोनी भ्रमकथा,
हवे छोडो गाणां जलधिसरिता निर्भर तणां !
परन्तु कोये तो उडुगण अविश्रांत झबके,

फुटे पत्रो, पुष्पो अविरत खिले निर्झर झरे;
खुटी ना युग्मोनी प्रणयगुजगोष्ठी हजीय ते,
अभे घेला छो ने ! प्रथम दुनिया घेलि पलटो;
पछी शाणं गाणं नवल लवशुं शाणपणनां।

उमाशंकर जोशी मानवतावादी, क्रान्तदर्शी एवं चिन्तन प्रधान कवि हैं।

रामनारायण वि. पाठक—ये आधुनिक युग के प्रसिद्ध कवि तथा लेखक हैं। 'शेषनां काव्यो' इनकी कविताओं का संग्रह है। इनकी कविता प्रणय तथा विषाद की कविता है।

जोशी एवं पाठक के अतिरिक्त अन्य उदीयमान कवि भी गुजराती साहित्य की काव्य-वाटिका को पल्लवित कर रहे हैं। त्रिभुवनदास लुहार आधुनिक युग के प्रतिष्ठित कवि हैं। उनके काव्यसंग्रह 'काव्य-मंगला' ने पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। त्रिभुवनदास लुहार कवि के रूप में 'सुन्दरम्' नाम से विख्यात हैं। 'स्नेहरश्मि' का काव्यसंग्रह 'अर्घ्य' है। कृष्णलाल श्रीधरानी (हाल में ही उनकी मृत्यु हुई है) ने प्रतीकवादी कविता में अपना स्थान बनाया था। मनमुखलाल झवेरी का काव्यसंग्रह 'आराधना' अभिनव गीतों का सुन्दर संकलन है। खडकाव्य-कार सुन्दर जी गो. बेटाई के 'इन्द्रधनुप' तथा 'ज्योतिरेखा' सुन्दर खंड-काव्य हैं। मगनभाई पटेल की मनोरम कविताओं का संग्रह है 'प्रभात-नर्मदा'। ये 'पतील' नाम से लिखते हैं। 'मदनमोहना' हरिवल्लभ भायाणी का काव्य संकलन है। अरालवाणा का 'प्रतीक्षा' तथा झवेर-चन्द मेधाणी का 'अेकतारो' काव्य-साहित्य की निधियां हैं। इंदुलाल गांधी का काव्य संकलन 'उन्मेष' नाम से प्रसिद्ध है।

: १२ :

गद्य का आविर्भाव

गुजराती के प्रारम्भिक काल में पद्य का ही प्राधान्य रहा। गद्य का उपयोग सरकारी कार्य में ही होता था। बाद में पादरियों ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए बाइबिल का अनुवाद गुजराती गद्य में करवाया तथा उसे वितरित किया। वास्तव में परिष्कृत गद्य का प्रारम्भ नर्मद के समय में ही प्रारम्भ हुआ। 'राज्यरंग' नर्मद द्वारा लिखी हुई प्रथम गद्य-कृति है जो एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है। इसमें प्राचीन राज्यों तथा उनके वीरों की वीरगाथाएँ हैं। 'धर्म विचार' नामक नर्मद ने दूसरा ग्रन्थ लिखा जो कि चिन्तन तथा विचार-प्रधान है।

इसके बाद नवलराय ने नर्मद की जीवनकथा गद्य में लिखी जिस का गद्य अधिक परिमार्जित एवं प्रौढ़ था। इसके अतिरिक्त नवलराय ने 'अंग्रेज लोकनो इतिहास' भी लिखा। नवलराय ने समकालीन तथा प्राचीन ग्रन्थों पर आलोचनाएँ भी लिखीं। 'करणघेलो' नामक कहानी तथा 'कांता' नामक नाटक लिखकर इन्होंने गुजराती में इन साहित्य-रूपों का प्रारम्भ भी किया। भोणानाथ की 'ईश्वर प्रार्थनामाला' का गद्य-खंड भी संस्कृतनिष्ठ गद्य का अच्छा उदाहरण है। 'अंधेरी नगरीनो गंधर्वसेन' नामक व्यंग्यवार्ता जो कि नवलराय ने लिखी, अपनी हास्यमय शैली के लिए उल्लेखनीय है। गद्य की दृष्टि से गुजराती साहित्य में नाटक बहुत प्राचीन मिलते हैं। हम अपनी विवेचना नाटकों से ही प्रारम्भ करते हैं—

नाटक

रनछोड़भाई—सन् १८६१ में इन्होंने 'जयकुमारी विजय नाटक' लिखा। इस नाटक ने स्वतंत्र रूप से गुजराती में नाट्य-लेखन का सूत्रपात किया। इसकी कथावस्तु सामाजिक है। इनका दूसरा नाटक 'ललिता दुःख दर्शक नाटक' कथावस्तु के स्वाभाविक विकास की दृष्टि से अधिक श्रेष्ठ माना गया है। इस नाटक का अन्त करुण है। इनके अन्य नाटक ये हैं—नलदमयन्ती नाटक, हरिश्चन्द्र नाटक, नागमती स्वयंवर, मालविकाग्निमित्र, प्रेमराय अने चारुमती, बाणासुर मदमर्दन, मदालसा अने रुतुध्वज, गोपालदास तथा विक्रमोर्वशीय नाटक। इनमें से कुछ संस्कृत तथा अंग्रेजी के अनुवाद हैं।

दलपतराम—सन् १८५१ में दलपतराम ने 'लक्ष्मी नाटक' लिखा जो कि गुजराती का सर्वप्रथम नाटक माना जाता है। यह नाटक ग्रीक कवि ऐरिस्टोफेनीस के नाटक 'प्लूटस' का अनुवाद है। 'मिथ्याभिमान' शीर्षक एक और नाटक दलपतराम ने लिखा जो हास्यरस प्रधान है। इस नाटक का नायक जीवराम भट्ट है जिसका चरित्र-चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक रूप से हुआ है।

नवलराम—'भट नुं भोपाणु' नवलराम द्वारा अनुवादित नाटक है। मोलियर के एक हास्यरस प्रधान नाटक का यह अनुवाद है। नवलराम ने इस नाटक को अत्यन्त सफलतापूर्वक गुजराती संस्कृति में ढाल दिया है।

केशवलाल परीख—'कनोड़ा दुःख दर्शक' नामक हास्यरस प्रधान नाटक इन्होंने लिखा। बालपानी तथा वृद्धपति के वैषम्य द्वारा हास्य उत्पन्न किया गया है।

नानालाल—कवि नानालाल द्वारा लिखित 'जयाने जयन्त' का गुजराती नाट्य साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान है। इस नाटक में स्त्रियों को आजन्म ब्रह्मचारिणी रहने का उपदेश दिया गया है। पुराने विचारों के लोगों ने इसका तीव्र विरोध किया। कथावस्तु के विकास तथा रोचक वार्तालाप इस नाटक की विशेषताएँ हैं। पूर्ण नाटक पद्य रूप में लिखा हुआ गद्य है। इसमें वासनारहित प्रेम को आदर्श माना गया है। इसमें 'नैष्ठिक ब्रह्मचर्य' की भावना प्रमुख है। इनका दूसरा अपूर्ण नाटक 'इन्द्रकुमार' है।

सर रमण भाई—सन् १९१४ में इनका नाटक 'राई नो पर्वत' प्रकाश में आया। इसकी कथावस्तु गुजराती की एक प्राचीन लोककथा पर आधारित है। इस नाटक में सत्य की विजय दिखाई गई है तथा हिन्दू संस्कृति की महानता का दिग्दर्शन कराया गया है। ससार में मनुष्य की नहीं ईश्वर की इच्छा बलवती होती है इसका प्रतिपादन किया गया है। यदि मनुष्य विपत्ति में भी अपने चरित्र को न गिरावे तो ईश्वर उसकी सहायता करता है—यह सिद्धांत नाटक के नायक राई (जगदीप) द्वारा सिद्ध होता है। राई गिरता है, फिर उठता है और उसकी अन्तरात्मा जागती है तथा वह वीरोचित कार्य करता है। उसके चित्त को शान्ति मिलती है तथा अनिच्छा होते हुए भी राज्य तथा वीणावती नाम की सुन्दरी उसे मिलती है।

इस नाटक में संसार-सुधार की भावना भी मिलती है। विधवा-विवाह तथा नारी-प्रतिष्ठा का प्रतिपादन किया गया है। इसके पात्रों में विचारशील राई, चतुर जालका, सुखीदम्पति कल्याणकाम तथा सावित्री तथा लीलावती प्रमुख हैं। वास्तव में "राईनो पर्वत" गुजराती नाटकों में विशिष्ट स्थान के योग्य है।

एकाङ्की तथा एकाङ्कीकार—पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से गुजराती साहित्य में भी एकाङ्कियों का सृजन हुआ। बटुभाई उमरवाडिया गुजराती साहित्य के प्रमुख एकाङ्की-लेखक हैं। इन्होंने कई एकाङ्की लिखे जिनमें "मत्स्यगन्धा अने गाङ्गेय" उल्लेखनीय है। यशवंत पंड्या का "मदन मन्दिर" अपने सूक्ष्म हास्य के कारण प्रसिद्ध हुआ है। स्व० श्री कृष्णलाल श्रीधरानी के एकाङ्की "वडलो" तथा "मोरनां ईडां" प्रसिद्ध हैं। "खेडूत नो शिकागी" तथा "रणशिंगु गाडु" नामक एकाङ्कियों के यशस्वी लेखक क्रमशः प्राणजीवन पाठक तथा जुगतराम दवे हैं। प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार उमाशङ्कर जोशी के नाटकों का संग्रह "सापनामारा" अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

इनके अतिरिक्त रमणलाल देसाई का "परी अने राजकुमार", रमण वकील का "उरतन्त्र", इन्दुलाल गाधी का "पलटातां तेज" जयन्ति दलाल का "बीजो अङ्क" तथा चुन्नीलाल मडिया का "रङ्गदा" उल्लेखनीय हैं।

प्रहसन—सामाजिक विकृतियों पर व्यंग्य करने वाले लघु नाटकों में कन्हैयालाल मुन्शी के "काकानी शशी", "बे खराब जण" तथा "ब्रह्मचर्याश्रम" प्रशंसनीय हैं। दूसरे हास्य-एकाङ्की लेखकों में चन्द्रवदन मेहता प्रसिद्ध हैं जिनके हास्य एकाङ्की "धारा सभा" तथा "देडकानी पाँचशेरी" उल्लेखनीय हैं। हास्यकार धनसुखलाल मेहता का "सरी जतु सूरत" तथा हंसाबेन मेहता का "हिमालय स्वरूप अने बीजा नाटको" रंगमंच के उपयुक्त हैं।

रेडियो नाटक लेखकों में शिवकुमार जोशी, नन्दकुमार पाठक, जयन्ति दलाल, डा० अविनाश मुन्शी, गुलाबदास ब्रोकर, मधुकर रांदेरिया, पुष्कर चदरवाकर, करमनदास माणिक, सुरेश गांधी आदि अग्रगण्य हैं।

अन्य भाषाओं से अनुवादित नाटक—कालिदास के प्रसिद्ध नाटक "अभिज्ञान शाकुन्तल" का भाषान्तर नर्मदाशङ्कर, दलपतराम, खख्खर, झवेरीलाल उमीआशङ्कर याज्ञिक तथा प्रो० ठाकोर ने किया। इनके अतिरिक्त पाँचवा अनुवाद स्व० मगनभाई चतुरभाई पटेल ने किया जिसको उमाशङ्कर जोशी ने हाल ही में प्रकाशित किया है।

कालिदास के दूसरे प्रसिद्ध नाटक "विक्रमोर्वशी" का अनुवाद रनछोड़भाई, कीलाभाई, केशवलाल ध्रुव ने किया। रनछोड़भाई ने "मालविकाग्निमित्र" का भी अनुवाद किया। केशवलाल ध्रुव ने भास के "स्वप्नवासवदत्ता" का अनुवाद "साचुंस्वप्न" नाम से किया है।

भवभूति के "मालती-माधव" तथा "उत्तर-रामचरित" नाटकों का अनुवाद मणिलाल नभुभाई ने किया। विशाखदत्त के "मुद्राराक्षस" का अनुवाद केशवलाल ध्रुव ने किया। केशवलाल ध्रुव ने वेणीसहार, नागानन्द, रत्नावली तथा प्रियदर्शना के सफल अनुवाद किये। "मृच्छकटिक" का अनुवाद बालाशङ्कर तथा सुन्दरम् ने मिलकर किया।

अंग्रेजी नाटकों के अनुवादों में भावनगर के प्रो० नरभेराम के "कोमेडी आफ एरर्स", "मेजर फोर मेजर" तथा "औल वैल देट एण्ड वैल" के अनुवाद उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने "जूलियम सीजर्स" तथा "ओथेलो" के अनुवाद भी किये। हंसाबेन मेहता ने "हेम्लैट" तथा "मर्चेण्ट ओव वेनीस" के सफल अनुवाद किये।

*

: १३ :

आलोचना-साहित्य

साहित्य के अन्य अंगों की भाँति समालोचना-साहित्य का श्रीगणेश भी **नर्मद** के द्वारा ही हुआ। नर्मद ने प्रेमानन्द तथा दयाराम के साहित्य का सम्पादन कर उन कवियों के काव्य के गुण-दोषों की विवेचना की। उन्होंने अपने "कवि-चरित्र" ग्रन्थ में कवियों के जीवन चरित्र भी लिखे।

इनके बाद **नवलराम** ने "गुजरात शाणापत्र" का सम्पादन किया। यह पत्र गुजरात के प्राथमिक शिक्षकों का पत्र था। इस पत्र के माध्यम से नवलराम ने अनेक ग्रंथों की समालोचनाएं प्रकाशित कीं। नवलराम की आलोचना शास्त्रीय-पद्धति पर होती थी। उनका अध्ययन गहन था।

प्रो० मणिलाल द्विवेदी "सुदर्शन" तथा "प्रियंवदा" मासिक पत्रों के सम्पादक थे। ये संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। इनकी भाषा संस्कृत-निष्ठ होती थी। इनके आलोचनात्मक लेख "सुदर्शन गद्यावलि" में संकलित हैं।

सर रमणभाई नीलकंठ (१८६३–१९२८) की आलोचना-पद्धति पाश्चात्य सिद्धान्तों पर आधारित थी। "कविता अने साहित्य (चार भाग)" में इनके आलोनात्मक निबन्ध संकलित हैं।

गोवर्द्धनराम त्रिपाठी (१८५५–१९०७) ने "क्लासीकल पोइट्स आफ़ गुजरात" नामक आलोचनात्मक ग्रंथ अंग्रेजी में लिखा। इस ग्रंथ में तत्कालीन साहित्य का पांडित्यपूर्ण विवेचन किया गया है।

प्रो० बलवन्तराय ठाकोर नई कविता के विशेषज्ञ थे। इनकी मान्यता थी कि काव्य उर्मिप्रधान न होकर विचारप्रधान होना चाहिए। इनके आलोचनात्मक निबन्धों का संकलन "प्रयोगमाला" है।

नरसिंह राव दिवेटिया का गुजराती आलोचकों में विशिष्ट स्थान है। इनकी आलोचना-पद्धति वैज्ञानिक थी। "मनोमुकुर (चार भाग)" तथा "प्रेमानन्द ना नाटको" इनके दो आलोचनात्मक ग्रंथ हैं।

आनन्दशंकर ध्रुव की आलोचना शैली में पूर्व तथा पश्चिम की आलोचना पद्धतियों का मिश्रण है। "वसंत" नामक प्रसिद्ध पत्र के ये सम्पादक थे। इनके आलोचनात्मक ग्रन्थ ये हैं – काव्यतत्व विचार, साहित्यविचार, दिग्दर्शन तथा विचार माधुरी। वास्तव में ये यथार्थ-वादी आलोचक हैं।

प्रो० केशवलाल ध्रुव ने भालण की कादम्बरी का सम्पादन किया। इनकी रुचि प्राचीन ग्रन्थों के सम्पादन में अधिक थी। इनका आलो-चना प्रधान ग्रन्थ "साहित्य अने विवेचन" नाम से प्रसिद्ध है।

डा० डाह्याभाई देरीसरी का "साठीनुं साहित्य" एक महत्त्वपूर्ण खोज-ग्रंथ है।

हिम्मतलाल अंजारिया ने अर्वाचीन गुजराती कवियों का एक प्रतिनिधि संकलन "काव्यमाधुर्य" नाम से किया। इसके बाद की कविताओं का दूसरा संकलन "काव्यसौरभ" भी महत्वपूर्ण है। "अर्वाचीन गद्यनिर्माता" नामक एक विद्वत्तापूर्ण निबन्ध भी इन्होंने लिखा।

दीवानबहादुर कृष्णलाल झवेरी ने "गुजराती साहित्य ना मार्ग सूचक स्तंभो" शीर्षक ग्रन्थ अंग्रेजी में लिखा जिसका बाद में गुजराती अनुवाद प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ गुजराती साहित्य के साहित्यकारों के जीवन तथा कृतियों के बारे में यथेष्ट जानकारी देता है। स्व०

झवेरी जी ने आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखे जिनका संग्रह "निबन्ध संग्रह" शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

कवि नानालाल के आलोचनात्मक ग्रन्थों में "साहित्य मंथन" तथा "आपणां साक्षर रत्नो" उल्लेखनीय हैं। "जगत कादम्बरीओं मा सरस्वती चन्द्रनुस्थान" शीर्षक इनका मौलिक प्रबन्ध भी आलोचना साहित्य का गौरव ग्रन्थ है।

कवि खबरदार का ग्रन्थ "गुजराती कवितानी रचनाकरण" की विवेचना पद्धति गम्भीर एवं प्रशंसनीय है। इन्होंने कवि नानालाल की कविता-शैली का मजाक "प्रभात नो तपस्वी" शीर्षक अपने व्यंग्य-काव्य में उड़ाया।

कन्हैयालाल मुन्शी गुजराती साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकारों में हैं। गुजराती साहित्य के उन्नयन में इनका योगदान महत्वपूर्ण है। इनके आलोचनात्मक ग्रन्थों में "आदिवचनों", "थोडांक रसदर्शनों" तथा "केटेलाक लेखो" उल्लेखनीय हैं।

इनका अंग्रेजी का ग्रन्थ "गुजरात एण्ड इट्स लिटरेचर" विद्वत्तापूर्ण है। इसमें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देकर साहित्यिक प्रवृत्तियों का विकास दिखाया गया है।

गुजराती साहित्य के इतिहासों में उल्लेखनीय ये हैं--मोहनलाल दलीचन्द देसाई द्वारा लिखित "जैन गुजराती साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास", प्रो० विजयराव वैद्य का "गुजराती साहित्य की रूपरेखा" तथा सुन्दरम् का "अर्वाचीन कवितानो इतिहास"।

गुजराती साहित्य के संक्षिप्त इतिहासों में प्रो० केशवराय शास्त्री का "गुजराती साहित्यनुं रेखादर्शन", प्रो० ईश्वरलाल दवे का "गुजराती साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास", प्रो० मनसुखलाल झवेरी तथा रमणलाल शाह का "गुजराती साहित्यनुं रेखादर्शन", प्रो० अनन्तराम रावण का

"गुजराती साहित्यनो इतिहास" (मध्यकालीन) तथा डा० धीरूभाई ठाकर का एक संक्षिप्त इतिहास उल्लेखनीय हैं।

प्रो० रामनारायण पाठक गुजराती के मनीषी विद्वानों में हैं। काव्य-शास्त्र का इनका अध्ययन गहरा है। इनके ग्रन्थ ये हैं—काव्य नी शक्ति, साहित्य विमर्श, आलोचना तथा अर्वाचीन काव्य-साहित्यनां वहेणो।

काका कालेलकर कला तथा साहित्य के सच्चे पारखी विद्वान् हैं। इनकी शैली प्रसाद-गुण-युक्त है। "प्रस्तावनाओ" नामक पुस्तक में इनके कला सम्बन्धी निबन्ध सगृहीत हैं। काका साहब का मत है कि कला कला के ही लिए नहीं है। कला के उपयोगिता-तत्व पर ये विशेष बल देते हैं। "जीवन-भारती" नामक इनकी दूसरी पुस्तक में जीवन-दर्शन सम्बन्धी निबन्ध संगृहीत हैं।

रमणलाल देसाई गुजराती साहित्य के विद्वान आलोचक भी हैं। आधुनिक गुजराती साहित्य पर इन्होंने विवेचनात्मक निबन्ध लिखे हैं। आधुनिक साहित्य के अतिरिक्त इनका उल्लेखनीय कार्य ऐतिहासिक शोध है।

गुजराती साहित्य में आलोचनात्मक निबन्धों के फुटकर संकलन बहुत मिलते हैं। प्रो० विश्वनाथ भट्ट, विजयराव वैद्य, श्री मुन्शी, स्व० प्रो० रामनारायण पाठक, प्रो० विष्णुप्रसाद त्रिवेदी के आलोचनात्मक निबन्धों के संग्रह क्रमशः साहित्यसमीक्षा, विवेचन मुकुर, निकषरेखा; साहित्य मंथन, जूही अने केतकी, साहित्य नी रूपरेखा; थोडाक, रसदर्शनो, आदिवचनो; साहित्य विमर्श; काव्य नी शक्ति, आलोचना; नाम से प्रसिद्ध है। अन्य आधुनिक आलोचकों में प्रो० मोहनलाल दवे, केशवलाल कामदार, अनन्तराम रावरा, मनसुखलाल झवेरी, प्रो० प्रेमशंकर भट्ट, प्रो० डोलरराय मांकड, सुन्दरम् तथा उमाशंकर जोशी उल्लेखनीय हैं।

१४

उपन्यास

भारतवर्ष की अन्य प्रादेशिक भाषाओं की भांति उपन्यास-साहित्य का प्रादुर्भाव भी गुजराती साहित्य में पिछले पचास वर्षों में ही हुआ है। इससे पूर्व पद्य का बोलबाला था। सन् १९१४ में महात्मा गांधी अफीका से लौटे। लोगों में नई चेतना आई। साहित्य में भी पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से नई विधाओं ने जन्म लिया। उपन्यास भी नये युग की देन है।

गुजराती उपन्यास मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किये जा सकते हैं—(१) ऐतिहासिक (२) सामाजिक। दोनों ही क्षेत्रों में गुजराती उपन्यास-साहित्य श्रेष्ठ है। ऐतिहासिक उपन्यासों में अतीत की गौरव-पूर्ण गाथाओं का नवीन शैली में वर्णन है और वह उपन्यास के रूप में इतना रोचक तथा पठनीय है कि मन में अतीत का स्वर्णकाल साकार बनकर छा जाता है। गुजराती पाठकों में ही ये उपन्यास लोकप्रिय नहीं हुए किन्तु उनके अनुवाद अन्य भाषाओं में भी किये गये जो अत्यन्त लोकप्रिय हुए। इनके अतिरिक्त ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यासों की संख्या भी गुजराती में कम नहीं है।

उपन्यास के आधुनिक रूप से पूर्व कथाएँ कंठस्थ थीं तथा वे सुनाई जाती थीं। 'करणघेलो' जो सन् १८६८ में लिखा गया था, गुजराती साहित्य का प्रथम उपन्यास कहा जा सकता है। इसके लेखक **नंदशंकर तुणजाशंकर** थे। गुजरात के अंतिम राजा करण थे। अलाउद्दीन खिलजी ने चढ़ाई करके उन्हें हराया। इसी कथा पर यह

उपन्यास आधारित है। इस उपन्यास में पात्रों के माध्यम से मनुष्य जीवन तथा मानवीय स्वभाव पर सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है।' उपन्यास की भाषा सरल है। इसके वर्णन सजीव हैं। उदाहरण के लिए रजवाड़ों में होने वाले दशहरे के उत्सव का वर्णन, माधव नामक पात्र की हवेली का वर्णन, वीरों की वीरता का वर्णन, मुसलमान काजियों की न्याय-व्यवस्था का वर्णन प्रशंसनीय हैं।

ऐतिहासिक उपन्यास लेखकों में दूसरा नाम **महीमत राम** का आता है। इन्होंने सन् १८८१ में दो उपन्यास लिखे—(१) वनराज चावडो (२) सिद्धराज जयसिंह। 'वनराज चावडो' में राजा वनराज के अपने शत्रु जयशिखर को हटाकर बैठने की कथा है तथा उसकी विधवा मां को जैन साधुओं द्वारा मिली सहायता का वर्णन है। इस उपन्यास में वर्णन अधिक है, कथा-तत्व कम। कलात्मक दृष्टि से भी यह उच्च कोटि का नहीं। भाषा में ग्राम्यत्व दोष है। गुजरात के इतिहास में सिद्धराज के राज्य का विशेष महत्व है। 'सिद्धराज जयसिंह' में औपन्यासिक परिमार्जन नही आ पाया, थोथे विवरण पाठक को उबा देने वाले हैं। इस उपन्यास का ऐतिहासिक महत्व है।

अनंत प्रसाद त्रीकमलाल द्वारा लिखित 'राणकदेवी नी वार्ता' नामक उपन्यास प्रसिद्ध है। इसमें राणकदेवी के वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन किया गया है। इनके जीवन का सर्वाधिक उज्ज्वल प्रसंग वह है कि जब विरोधी के वश में होने की अपेक्षा इन्होंने अपनी तथा अपने पुत्रों की मृत्यु को उत्तम समझा। 'करणघेलो' की लोकप्रियता से प्रभावित होकर ही सम्भवत: इस उपन्यास की रचना की गई।

'अंधेरनगरी नो गंधर्वसेन' नामक उपन्यास **हरगोविन्द दास द्वारका दास कोटावाला** ने लिखा। यह उपन्यास सन् १८८१ में लिखा गया। इस उपन्यास में देशी राज्यों में होने वाले अंधेर एवं अव्यवस्था का

चित्रण किया गया है। इसमें सभी पात्र विचित्र हैं। राज्य का सेनापति है दुर्बलसिंह, मुख्य न्यायाधीश हैं **अज्ञान भट्ट**, टेक्स लेने वाले हैं जुल्मेश्वर तथा खजांची हैं बोधड़पंत। इस उपन्यास में अस्वाभाविकता है, भाषा भी ऊबड़खाबड़ है तथा पात्रों का चरित्र-चित्रण अस्वाभाविक है।

पारसी लेखक **जहाँगीर अरदेशर तालेयार खाँ** ने 'रत्नलक्ष्मी' तथा 'मुद्राकुलीन' उपन्यास लिखे। इनकी शैली प्रभावपूर्ण है। इन उपन्यासों में कथातत्व यथेष्ट मात्रा में है। ये अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुए। यद्यपि इनकी कथावस्तु ऐतिहासिक है लेकिन वर्णन अत्यन्त मनोरंजक एवं स्वाभाविकता लिये हुए हैं।

"गंगा अेक गुर्जर वार्ता" नामक उपन्यास १८८९ में **इच्छाराम सूर्यराम देसाई** ने लिखा। इस उपन्यास में नारी समाज के प्रति हुए अत्याचारों का वर्णन है। कथावस्तु में शिवाजी की मूर्ति के लूटे जाने का प्रसंग मार्मिक है।

चुन्नीलाल वर्धमान ने "सोमनाथनूँ शीवलींग" नामक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा जिसमें महमूद गजनवी द्वारा किये गये सोमनाथ पर आक्रमण का वर्णन है।

ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रसारण में **इच्छाराम सूर्यराम देसाई** का योग महत्त्वपूर्ण है। सन् १८९१ से प्रतिवर्ष ये एक ऐतिहासिक उपन्यास छापते थे। यह आवश्यक नहीं था कि वह मौलिक ही हो; अंग्रेजी, बंगला, मराठी तथा हिन्दी आदि के भाषांतर भी इन्होने छापे। इनके द्वारा प्रकाशित उपन्यास ये हैं :—

(१) हिन्द अने ब्रिटानिया (२) गंगा गोबिन्दसिंह (३) टीपू सुलतान (४) दिल्ली पर हल्लो (५) अराढमी सदीनुं हिन्दुस्तान (६) औरंगजेब अने राजपूतो (७) हेस्टींग्ज नी सोटी (८) पाणीपतनुं युद्ध (९) बेगम साहब (१०) नूरजहां (११) बाजीराव बल्लाल (१२)

रूपनगर नी राजकुंवरी (१३) प्लासी नुं युद्ध (१४) शिवाजीनो वाघनख (१५) हल्दीघाटनुं युद्ध (१६) पेशवाईनी पडतीनो प्रस्ताव (१७) औरंगजेब नो उदय (१८) पद्मिनी (१९) कत्लेआम (२०) हम्मीर हठ (२१) पाटणनी प्रभुता (२२) चाणक्य नन्दिनी (२३) अनंगभद्रा।

गुजराती उपन्यासकारों में **कन्हैयालाल मुंशी** का विशिष्ट स्थान है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि ये मात्रा तथा गुण दोनों ही दृष्टि से सर्वोपिर हैं। यद्यपि इनकी कोई भी कृति 'सरस्वतीचन्द्र' जैसी नहीं तथापि कलात्मक दृष्टि से इनके उपन्यास उच्चकोटि के हैं। इनके उपन्यासों में 'गुजरात नो नाथ' 'पृथ्वीवल्लभ', 'भगवान परशुराम', 'जय सोमनाथ' प्रसिद्ध हैं। ऐतिहासिक कथावस्तुओं पर आधारित इनके उपन्यास मनुष्य जीवन के मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में बेजोड़ हैं। भाषा सरस एवं सरल है। चरित्र-चित्रण स्वाभाविक है। कथावस्तु का गुंफन प्रशंसनीय है। इनके उपन्यासों की लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रभाव यह है कि अनेक भाषाओं में इनके उपन्यासों के अनुवाद हुए। ऊपर लिखे गये उपन्यासों के अतिरिक्त इनके अन्य उपन्यास 'राजाधिराज', 'भग्नपादुका', 'भगवान कौटिल्य' तथा 'स्वप्न दृष्टा' हैं। मुंशीजी ऐतिहासिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रकार के उपन्यास लिखने में सिद्धहस्त है। उपन्यास-क्षेत्र में गुजराती साहित्य को इन्होंने गौरवान्वित किया है।

राष्ट्रीय आन्दोलन को कथावस्तु का रूप देकर **रमणलाल देसाई** ने 'दिव्यचक्षु' नामक उपन्यास लिखा। इसमें राष्ट्रीय-आन्दोलन में भाग लेने वाले शहीदों के सजीव चित्र हैं। १८५७ की क्रांति पर आधारित इनका दूसरा उपन्यास "भारेला अग्नि" है। इसमें भारतीय सैनिकों का राष्ट्रीय-आन्दोलन में योग दिखाया गया है। इनके दोनों

ही उपन्यास राष्ट्रीय-भावना से ओतप्रोत हैं। कहीं भी अस्वाभाविकता नहीं है। इसके अलावा इनका चार भागों में प्रकाशित उपन्यास "ग्रामलक्ष्मी कोण ?" एक युगान्तरकारी उपन्यास है जिसमें ग्रामीण समस्याओं का विशद वर्णन किया गया है।

गुणवन्तराय आचार्य के उपन्यास 'इन्किलाब' में कच्छ के राव रायधन का प्रजा पर अत्याचार तथा प्रजा की प्रतिक्रिया का सजीव वर्णन है। भाषा ओजपूर्ण है। इनका दूसरा उपन्यास 'देश दीवान' है। इसमें मेरामण नामक सेवक के महान् चरित्र को मान्यता दी गई है।

नर्मदाशंकर त्रिवेदी के 'गुजराननो डूभानो दीपक' नामक उपन्यास में देशी राज्यों में फैले कलह, धार्मिक रूढ़िवाद तथा राजनैतिक दिवालियापन का भंडाफोड़ किया गया है।

"सरस्वतीचन्द्र" **गोवर्द्धनराम त्रिपाठी** द्वारा लिखा हुआ उपन्यास है। यह गुजराती साहित्य का गौरवग्रंथ है। यह १८८७ से १९०१ के बीच में लिखा गया। इसको लिखने में १४ वर्ष लगे। एक प्रकार से इसे ज्ञान-कोष कहा जा सकता है। कुछ लोग इसे 'पुराण' की संज्ञा भी देते हैं। इस उपन्यास का नायक "सरस्वतीचन्द्र" आधुनिक शिक्षा पाया हुआ एक युवक है। विचारों से पुरातन है। उपन्यास की नायिका कुसुमसुन्दरी एक हिन्दू युवती है जिसका सरस्वतीचन्द्र से अत्यधिक प्रेम था किन्तु सरस्वतीचन्द्र के अदृश्य हो जाने से उसका विवाह प्रमादधन नामक लंपट युवक से कर दिया गया। कुसुमसुन्दरी ने प्रमादधन को ही अपने हृदय से प्रेम किया। प्रमादधन की मृत्यु होने पर भी कुसुमसुन्दरी अपने पुराने प्रेमी सरस्वतीचन्द्र के साथ पुनर्विवाह नहीं करती वरन् एक सच्चरित्र हिन्दू विधवा का जीवन बिताती है।

सरस्वतीचन्द्र में सरस्वतीचन्द्र तथा कुसुमसुन्दरी की प्रेमकथा के साथ-साथ गुजरात की संस्कृति की कथा भी है। इसकी कथावस्तु

अत्यन्त सुनियोजित है। यह एक कलाकृति है, साथ ही एक शास्त्र भी है। इस उपन्यास में चार लोकों का समावेश किया गया है—(१) व्यक्तिलोक (२) कुटुम्बलोक (३) राजलोक (४) साधुलोक। सरस्वतीचन्द्र तथा कुसुमसुन्दरी का प्रेम-व्यापार व्यक्तिलोक के अन्तर्गत आता है। नायक तथा नायिकाओं की कौटुम्बिक परिस्थितियों के चित्रण के माध्यम से हिन्दूसमाज की कौटुम्बिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है, दो राजकुलों की समस्याओं के चित्रण द्वारा तत्कालीन राज्यों में प्रचलित नीतियों तथा जीवन-व्यवस्था का निरीक्षण किया गया है एवं सुन्दरगिरि के साधुओं के चित्रण द्वारा तत्कालीन साधु व्यवस्था तथा धार्मिक मतमतान्तरों का सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

इस उपन्यास का उद्देश्य महान् है। पात्र सजीव हैं। वास्तव में "सरस्वतीचन्द्र" एक अमरकृति है।

"विक्रमनी वीसमी सदी" नामक उपन्यास **त्रिभोवनदास सट्टावाणा** द्वारा सन् १९०१ में लिखा गया। इसमें बम्बई का मनोरंजक चित्रण है। फैशनपरस्त युवकों की फिजूल-खर्ची का रोचक चित्रण इस उपन्यास में मिलता है।

भोगीन्द्रराव दिवेटिया ने लगभग एक दर्जन उपन्यास लिखे किन्तु उनमें "उषाकान्त" तथा "आसिस्टेन्ट कलक्टर" उल्लेखनीय हैं। "उषाकान्त" में मजदूर-समस्या को लिया गया है तथा "आसिस्टेन्ट कलक्टर" में अपढ़ स्त्रियों द्वारा गृहकलह तथा परिणामस्वरूप गृहस्वामी की पदअवनति दिखाई गई है। दोनों उपन्यास सुन्दर हैं।

राममोहनराय देसाई ने १९१३ में 'बाला' नामक उपन्यास लिखा। इसमें आधुनिक युवक-युवतियों के जीवन में जो परिवर्तन हुआ है उसका चित्रण है।

इनके अतिरिक्त **कृष्णराव भोणानाथ दिवेटिया** कृत "मुकुलमर्दन", "शिवाजी नो वाघनख", "रणवीरसिंह" तथा "हल्दीघाटनु युद्ध" नामक उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

पन्नालाल पटेल ग्रामीण जीवन के कुशल चित्रकार हैं। इनको गुजराती साहित्य का प्रेमचन्द कहा जा सकता है। "मालेलाफीव" तथा "मानवी-नी-भवाई" इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं जो अत्यधिक लोकप्रिय हुए हैं।

इनके अतिरिक्त आधुनिक प्रसिद्ध उपन्यासकारों में दर्शक, झवेरचन्द मेधानी, धूमकेतु, चुन्नीलाल वी. शाह, सोपान, पीताम्बर पटेल उल्लेखनीय हैं।

गुजराती में अन्य भाषाओं के प्रमुख उपन्यासों का अनुवाद भी हुआ है। बाणभट्ट की "कादम्बरी" का सुन्दर अनुवाद छगनलाल पंड्या ने किया। बंगाली से बंकिमचन्द्र चटर्जी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, रमेशचन्द्रदत्त, वसंतकुमार मुकर्जी आदि उपन्यासकारों के प्रसिद्ध उपन्यासों का अनुवाद किया गया है। मराठी के हरिनारायण आप्टे लिखित "उषःकाल" नामक प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी में अनुवाद किया गया है। प्रेमचन्द के कई हिन्दी उपन्यासों का अनुवाद गुजराती में किया गया है। अंग्रेजी के उपन्यासों के अनुवाद भी हुए हैं।

पारसी लेखकों ने अनेक मौलिक उपन्यास लिखकर तथा अन्य भाषाओं से अनुवाद करके गुजराती साहित्य को पल्लवित किया है।

: १५ :

कहानी

गुजराती साहित्य में 'कहानी' का प्रारम्भ लगभग ६० वर्ष पूर्व हुआ। इससे पूर्व साहित्य के अन्य रूपों का प्रारम्भ हो चुका था यथा मुक्त-छन्द की कविता, नाटक तथा उपन्यास। आज कहानी का प्रचलन इतनी अधिक मात्रा में हो गया है कि केवल उपन्यास को छोड़ कर अन्य सब साहित्यरूपों में यह सर्वाधिक लोकप्रिय है।

आज का मनुष्य जीवन में बहुत व्यस्त रहता है। उसे इतना समय नहीं है कि बृहत्काय उपन्यासों को पढ़े। कहानी छोटी होती है और अपेक्षाकृत कम समय में पढ़ी जा सकती है। इसलिए आज कहानियों की बेहद माँग रहती है। आज के प्रत्येक मासिक, साप्ताहिक तथा कभी-कभी दैनिक पत्रों में कहानियों की बहुतायत रहती है।

कहानी का क्षेत्र सीमित होता है। वह उपन्यास का स्थान नहीं ले सकती। उपन्यास यदि एक बड़ा उपवन है तो कहानी कुछ चुने हुए पुष्पों का गुलदस्ता। कहानी में जीवन की एक झाँकी मात्र होती है।

गुजराती साहित्य में "सुन्दरी सुबोध" नामक मासिक पत्र से कहानियों का प्रारम्भ हुआ। ये कहानियाँ कलात्मक दृष्टि से कमजोर थीं। कहानी के आवश्यक तत्वों की दृष्टि से सन् १९१८ में **कंचनलाल वासुदेव मेहता** द्वारा लिखित "गोवालणी" शीर्षक कहानी उल्लेखनीय है। यह "वीसमी सदी" मासिक पत्र में प्रकाशित हुई। वास्तव में यह कहानी प्रथम है जो आदर्श रूप में ली जा सकती है। **केशवप्रसाद**

देसाई ने १९१९ में "वीसवार्ताओ" शीर्षक अपना कहानी-संग्रह निकाला। "वानर मेनानी वातो" इनका बालकों के लिए लिखी गई कहानियों का संग्रह है। **प्रो० विष्णुप्रसाद त्रिवेदी** की भावनात्मक कहानियों का संग्रह सन् १९२४ में "भावना सृष्टि" नाम से प्रकाशित हुआ। **अमृतलाल सुन्दर जी पंढियार** का संग्रह "नयायुगनी वातो" तथा **चन्द्रशंकर पंड्या** का संग्रह "पाँच प्रेमकथाओ" उल्लेखनीय हैं।

गुजराती के कहानीकारों में **गौरीशंकर गोवर्द्धन जोशी "धूमकेतु"** का विशिष्ट स्थान है। "तणखा" भाग १, २, ३ तथा ४ में इनकी कहानियों को संकलित किया गया है। कथावस्तु का विन्यास, स्वाभाविक चरित्र-चित्रण तथा सरल शैली, सब दृष्टियों से इनकी कहानी प्रशंसनीय है। सम्भवतः इनकी कहानियों के अनुवाद अन्य भाषाओं में पर्याप्त मात्रा में हुए हैं।

कन्हैयालाल मुंशी की कहानियों का संग्रह १९२८ में "मारी-कमला अने बीजीवातो" नाम से प्रकाशित हुआ। विनोदप्रियता इनकी शैली की विशेषता है। इनकी कहानियाँ काफी लोकप्रिय हुई। **मदुभाई कोटावाणा** जो "नारद" के छद्मनाम से लिखा करते थे, उनकी कहानियों के संग्रह "संसारलीला" तथा "वीनकनी वातो" नाम से निकले। **इन्दुलाल याज्ञिक** की कहानियों का संग्रह "कुमारनां स्त्रीरत्नो" नाम से निकला। इनकी कहानियों में नारी जीवन की मार्मिक झाँकियां मिलती हैं। **श्रीमती लीलावती मुंशी** की कहानियों का संग्रह "जीवन-मांथी जडेली" नाम से प्रकाशित हुआ।

झवेरचन्द मेघानी लोक-साहित्य के कुशल साहित्यकार हैं। सौराष्ट्र का जीवन इन्हें विशेष रुचिकर रहा है। "प्रतिमाओ" नामक इनकी कहानियों का संग्रह सन् १९३४ में निकला। इनकी कहानियों का भी अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ।

गुणवन्तराय आचार्य की कहानियों का संग्रह "भूतकाण ना पडछाया" सन् १९३४ में निकला। इनकी कहानियाँ ओजपूर्ण शैली में लिखी गई हैं। इनमें वीर पात्रों के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन किया गया है।

ललितमोहन गाँधी का कहानी-संग्रह "कल्पना कुसुमों" सन् १९३० में प्रकाशित हुआ। इसमें सत्तर कहानियाँ संकलित हैं। इनकी कहानियों में पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है। गुजराती के कथा-साहित्य में इनकी कहानियों का विशेष स्थान है। **बैरिस्टर जयकृष्ण वर्मा** का कहानी-संग्रह "वर्मानी विविध वार्ताओ" उल्लेखनीय है।

स्व० प्रो० रामनारायण पाठक "द्विरेफ" गुजराती साहित्य के प्रमुख कहानीकार थे। इनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण मिलता है। इनकी कहानियाँ "द्विरेफनी वातो" दो भागों में संकलित हैं। इनकी शैली गम्भीर के साथ-साथ विनोदमयी भी है। इनकी अनेक कहानियों का अनुवाद अन्य प्रादेशिक भाषाओं में हुआ है।

झीणाभाई देसाई "स्नेहरश्मि" का कहानी-संग्रह "गाता आसोपालव" है। क्योंकि ये प्रमुखतः कवि हैं इसलिए इनकी कहानियाँ भी कवित्वमय हो गई हैं।

रमणलाल देसाई गुजराती कहानीकारों में अग्रगण्य हैं। ये वस्तुतः मानव जीवन के सच्चे कलाकार हैं। इनकी कहानियाँ पाठकों के स्मृति-पटल पर एक छाप छोड़ जाती हैं। इनके चरित्र वास्तविक जीवन से लिये गये हैं। इनकी शैली सरल है। इनकी कहानियों में रस का परिपाक होता है। इनकी अधिकांश कहानियों का अनुवाद अन्य भाषाओं में हुआ है। इनकी कहानियों के संग्रह हैं—"पंकज", "झाकरा", "रसबिन्दु", "कांचन अने गेरु" तथा "दीवडी"।

उमाशंकर जोशी गुजराती के प्रमुख चित्रक तथा कवि हैं। इनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। "श्रावणी मेणो" इनकी कहानियों का संग्रह है। आंचलिकता की दृष्टि से इनकी कहानियां विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

गुलाबदास ब्रोकर आधुनिक कहानीकारों में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। कलात्मक दृष्टि से इनकी कहानियाँ उच्चकोटि की होती हैं। प्रादेशिक भाषाओं के अतिरिक्त इनकी अनेक कहानियां अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में भी अनूदित हुई हैं। **पन्नालाल पटेल** उपन्यासकार के अतिरिक्त कहानीकार भी हैं। ग्रामीण-जीवन सम्बन्धी इनकी कहानियाँ उच्चकोटि की हैं।

अन्य कहानीकारों में जयन्ती दलाल अपनी व्यंग्यात्मक शैली के लिए, विनोदिनी नीलकण्ठ अपने सजीव चित्रण के लिए, ईश्वर पेटलीकर अपनी सरल शैली के लिए, चुन्नीलाल मडिया अपने रेखाचित्रों के लिए तथा किशनसिंह चावडा सौन्दर्य-निरूपण के लिए उल्लेखनीय हैं।

उदीयमान कहानीकारों में केतन मुन्शी उल्लेखनीय हैं जिनकी असामयिक मृत्यु सन् १६५६ में हो गई। इनके अतिरिक्त वेनीभाई पुरोहित, रमनलाल पाठक तथा शिवकुमार जोशी उल्लेखनीय हैं।

: १६ :

निबन्ध

गुजराती साहित्य में निबन्ध साहित्य की कमी है। विवेचनात्मक निबन्ध तो प्रचुर मात्रा में मिलते हैं जिनका विवेचन 'आलोचना' नामक अध्याय में हो चुका है, किन्तु आत्मव्यंजक निबन्ध कम मिलते हैं। **काका कालेलकर** गुजराती के मूर्धन्य निबन्धकार हैं। "जीवननो आनन्द" इनके कला तथा प्रकृति विषयक निबन्धों का संग्रह है। इनके निबन्ध सरल शैली में लिखे गये हैं। गम्भीर भावों को प्रसादपूर्ण भाषा में व्यक्त करना काका साहब की विशेषता है। इन निबन्धों में अनुभूति की सत्यता है एवं विषय की स्पष्टता है। इनके निबन्धों में हिन्दी के आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धों जैसी कसावट है। आपको इनके निबन्धों में न अनावश्यक वर्णन मिलेगा तथा न अनावश्यक शब्दाडंबर। अपने विवेच्य विषय की अभिव्यक्ति आप इतनी सरलता से करते हैं कि सम्मुख एक चित्र बन जाता है और भाव हृदयङ्गम हो जाता है। इनके निबन्धों का उद्देश्य पाठकों की जीवनशुद्धि है। इनकी मान्यता है कि कलाकार को शाश्वत सौन्दर्य की सृष्टि करने के लिए अपने जीवन में भी स्वच्छता एवं नैतिकता लाना आवश्यक है। लेखक के जीवन की शुद्धता का प्रभाव उसकी कृतियों पर भी पड़ता है।

"जीवननो आनन्द" के लेख चार खण्डों में विभाजित हैं—
१—प्रकृतिनुं हास्य, २—अनन्तनो विस्तार, ३—निवृत्तिमां निरीक्षण, ४—जीवननो ओप।

प्रथम खण्ड के निबन्धों में लेखक को प्रकृति निरीक्षण से जो अनुभूति हुई है उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति की गई है। प्रभात, चांदनी रात, संध्याकाण ना वादणा, "पहेलो वरसाद" मार्मिक निबन्ध है। वर्णन सजीव हैं। दूसरे खण्ड के निबन्ध दार्शनिकता का पुट लिये हुए हैं; यथा —सृष्टिनु रहस्य, गतिभ्रम, रविमार्गना विभाग। तीसरे खण्ड के निबन्धों में से अधिकांश आत्मव्यंजक हैं; यथा---समुद्रकिनारे, उपादूत, सपुद्रनी मामी आदि। चौथे खण्ड में सौन्दर्य तथा कला सम्बन्धी विवेचन है।

काका कालेलकर के निबन्धों की तुलना हिन्दी के कवि बिहारी के दोहों से की जाती है जिनके बारे में कहा गया है –

"सतसैया के दोहरा, ज्यों नाविक के तीर ।
देखत में छोटे लगें, घाव करत गम्भीर ॥

अधिकांश निबन्ध कलेवर की दृष्टि से लघुकाय हैं किन्तु विचार तथा भावों की दृष्टि से अत्यन्त गहरे हैं। विवेच्य विषय को स्पष्ट करने के हेतु लेखक जनसाधारण के परिचित प्रसङ्गों का प्रचुर मात्रा में उपयोग करता है। "जीवनकला" शीर्षक निबन्ध के एक अंश का हिन्दी रूपान्तर उदाहरणार्थ प्रस्तुत है :---

"सदाचार सर्वश्रेष्ठ कला है। सदाचार में ही कलापूर्ण जीवन है। रूप की उपासना की अपेक्षा प्रेम की उपासना करना श्रेयस्कर है। लैला और मजनूं की प्रेम-कथा के रूढ़ बनाने वाले सूफी कलाकारों ने मजनूं के सुदामा के दूसरे अवतार होने की कल्पना की है तथा काली लैला की तुलना अन्धेरी रात्रि के पुष्प से की है तथा स्पष्ट किया है कि उच्चकला को बाह्यरूप की उपासना नहीं करनी चाहिए।"

काका कालेलकर के अन्य निबन्ध-संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं, यथा — जीवन संस्कृति, ओतरातीदीवालो, जीवता तहेवारो, बापू की झांकी। प्रवास-साहित्य में भी इनका योग यथेष्ट है।

वास्तव में निबन्ध साहित्य का प्रारम्भ **नर्मदाशंकर** के "मंडणी मणवापी थता लाभ" शीर्षक से हुआ जो सन् १८५१ में लिखा गया था। बाद के प्रमुख निबन्धकारों में मणिलाल, आनन्दशङ्कर, प्रो० जयेन्द्रराव, रामनारायण पाठक तथा ज्योतीन्द्र दवे आदि प्रमुख हैं। मणिलाल के निबन्धों का संग्रह 'पूर्व अने पश्चिम' तथा नरसिंहराव दिवेटिया के निबन्धों का संग्रह 'अभिनयकरणा' उल्लेखनीय हैं।

विवेचनात्मक तथा आलोचनात्मक निबन्धकार तथा उनके संग्रह इस प्रकार हैं—प्रो० विश्वनाथ भट्ट—साहित्य समीक्षा, विवेचन मुकुर तथा निकषरेखा; विजयराय वैद्य–साहित्य मंथन, जुही अने केतकी तथा साहित्य नी रूपरेखा; श्री मुन्शी—थोडांक रसदर्शनो अने आदिवचनो; रामनारायण पाठक—साहित्य विमर्श, काव्यनी शक्ति तथा आलोचना; प्रो० विष्णुप्रसाद त्रिवेदी—विवेचना, परिशीलन अने अर्वाचीन चिन्तनात्मक गद्य; प्रो० नवलराम त्रिवेदी–"केटलांक विवेचनो", "नवां विवेचनो" अने शेष विवेचनो; श्रीरामचन्द्र शुक्ल—गुजराती साहित्यनुं मनन अने विवेचन; स्व० श्री रमणलाल देसाई—जीवन अने साहित्य अने गुजरातनुं घडतर; प्रो० मोहनलाल दवे—काव्यकला अने साहित्य-कला; स्व० श्री झवेरचन्द मेघाणी–"लोकसाहित्य" तथा "परिभ्रमण"; प्रो० केशवलाल कामदार—स्वाध्याय ग्रन्थ; स्व० बटुभाई उमरवाडिया–कीर्तियाने कमलना पत्रो; स्व० श्री चैतन्यबाला मजूमदार–ललितकला अने बीजा निबन्धों; प्रो० अनन्तराम रावण—"साहित्य विहार" तथा "गन्धाक्षत"; प्रो० मनसुखलाल झवेरी—"थोडाक-विवेचनो"; प्रो० प्रेमशङ्कर भट्ट—मधुपर्क; प्रो० डोलरराय

मांकड–काव्यविवेचना; सुन्दरम्–अर्वाचीन कविता; प्रो० उमाशंकर जोशी—समसंवेदनो; स्व० सर रमणभाई—मनोमुकुर; प्रो० नरसिंह-राव दिवेटिया—साहित्य अने विवेचन।

उपर्युक्त ग्रन्थकारों ने अपने ग्रन्थों में साहित्यकार तथा उनकी कृतियों की आलोचना करने के अतिरिक्त साहित्य, कला, सौन्दर्य तथा रसानुभूति पर स्वतन्त्र निबन्ध भी लिखे हैं जो इन ग्रन्थों में संगृहीत हैं।

: १७ :

विविध साहित्य

गुजराती साहित्य में साहित्य के सभी आधुनिक रूपों की कृतियां मिलती हैं। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् 'आत्मचरित' लिखने का पर्याप्त कार्य हुआ। इस प्रकरण में हम आत्मचरित, जीवनचरित्र, प्रवास-साहित्य तथा रेखाचित्र साहित्य की चर्चा कर रहे हैं।

आत्म-चरित्र

सर्वप्रथम **नर्मद** ने अपनी जीवनी 'मारी हकीकत' नाम से लिखी। इसके बाद **नारायण हेमचन्द्र** ने 'हूँ पोते' शीर्षक से अपना आत्मचरित लिखा। **पूज्य महात्मा गांधी** की 'आत्मकथा' अथवा 'सत्यना प्रयोगो' सन् १९२७ में लिखी गई जो कि सारे संसार द्वारा सराही गई। बापू की आत्मकथा एक प्रकार से ज्ञान-कोष है। अनेक व्यक्ति उसे गीता की भांति पढ़कर अपनी जीवन-शुद्धि करते हैं। सत्य की पूजा उनकी आत्मकथा की कुंजी है। सरल भाषा में उच्च भावों की अभिव्यक्ति बापू की आत्मकथा की विशेषता है।

१९५३ में **श्री छोटालाल नरभेराम भट्ट** की आत्मकथा को 'आत्म-वृत्तांत' शीर्षक से उनकी मृत्यु के पश्चात् **प्रो० गोविन्दलाल भट्ट** ने प्रकाशित किया। इसमें साहित्य-विषयक अनेक समस्याओं का समाधान किया गया है।

इसके बाद आत्मकथाओं की बाढ़-सी आ गई। अनेक लेखकों ने अपने प्रचार के लिए तथा रस्म पूरी करने के लिए आत्मकथाएँ लिखीं। **श्रीमती शारदा बहिन** ने 'जीवन संभारणा' शीर्षक से अपनी

आत्मकथा लिखी । **स्व० रमणलाल देसाई** ने दो पुस्तकें अपनी आत्मकथा के रूप में लिखी—'गई काल' तथा 'मध्याह्न' ।

'बांध गठरिया' **चन्द्रवदन मेहता** की आत्मकथा है । यह अत्यन्त मनोरंजक शैली में लिखी गई है । अपने समय की सामाजिक, राजनैतिक तथा शिक्षा सम्बन्धी स्थिति का इस आत्मकथा में यथार्थ वर्णन किया गया है । गुजरात के सामाजिक कार्यकर्ता **इंदुलाल याज्ञिक** की आत्मकथा का प्रथम भाग हाल ही में प्रकाशित हुआ है ।

श्री प्रभुदास गाँधी की आत्मकथा 'जीवन ना प्रबोध' उल्लेखनीय है । इसमें प्रकृति-चित्रण तथा मानवीय स्वभाव का विशद विश्लेषण है । **नानाभाई भट्ट** की आत्मकथा 'घडतर अने चणतर' अत्यन्त महत्वपूर्ण है । भाषा की सरलता तथा भावों की स्पष्टता इस आत्मकथा की विशेषता है ।

जीवन-चरित्र

गुजराती साहित्य में पर्याप्त मात्रा में जीवनचरित्र लिखे गये हैं । जीवन-चरित्र-लेखन का कलात्मक विकास भी हुआ है । जिन विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र गुजराती में मिलते हैं उनमें मुख्य ये हैं—भगवानदास हरिवल्लभ, मोहनलाल रनछोड़दास, महीपतराम, गोकुलजी झाला, करसनदास मूलजी, दुर्गाराम मेहता । प्राचीन ऐतिहासिक व्यक्तियों में अकबर, सिद्धराज जयसिंह तथा राणाप्रताप के जीवन-चरित्र उल्लेखनीय हैं ।

नरसिंह भाई पटेल ने देशभक्त गेरीबाल्डी का जीवनचरित्र 'गेरीबाल्डीनुं जीवन' नाम से लिखा ।

धार्मिक नेताओं तथा सम्प्रदायों के प्रवर्तकों के जीवनचरित्र भी लिखे गये । जैन आचार्य 'श्रीमद् रामचन्द्र' का जीवन-चरित्र सन्

१९३६ में प्रकाशित हुआ। महात्मा गांधी जी ने इस जीवनी की प्रस्तावना लिखी। आचार्य धर्मानन्द कोसांबी ने गौतम बुद्ध की जीवनी 'बुद्ध चरित' नाम से १९३८ में प्रकाशित की। श्री झवेरचन्द्र मेघाणी ने आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी का जीवन-चरित्र 'झंडाधारी' शीर्षक से लिखा। धार्मिक गुरु 'श्रीमान् नृसिहाचार्य' का जीवनचरित्र महेन्द्रकुमार देसाई ने लिखा। 'वल्लभाचार्य' का जीवन-चरित्र श्री केशवराम शास्त्री ने १९५५ में प्रकाशित कराया जो कि बहुत अधिक लोकप्रिय हुआ।

साहित्यकारों के जीवनचरित्र प्रचुर मात्रा में लिखे गये। सर्व-प्रथम नवलराम ने 'कवि जीवन' नाम से कवि नर्मद का जीवनचरित्र लिखा। गोवर्द्धनराम त्रिपाठी ने 'नवलरामनूं जीवन' शीर्षक से नवल-राम का जीवनचरित्र लिखा। कान्तिलाल पंड्या ने गोवर्द्धनराम त्रिपाठी का जीवनचरित्र 'श्रीयुत् गोवर्द्धनराम' नाम से लिखा। विनायक मेहता ने अपने पिता तथा 'करणघेलो' नामक उपन्यास के लेखक श्री नन्दशंकर का जीवनचरित्र 'नन्दशंकर जीवनचरित्र' शीर्षक से लिखा। नर्मद का दूसरा जीवनचरित्र विश्वनाथ मगनलाल भट्ट ने 'वीर नर्मद' नाम से सन् १९३३ में लिखा। गरबी-सम्राट दया-राम का जीवनचरित्र 'दयाराम नुं जीवन अने कार्य' सन् १९२० में श्री शंकरप्रसाद रावण ने लिखा। यह प्रामाणिक है एवं इसकी शैली प्रसाद-गुण-युक्त है। प्रसिद्ध कवि नानालाल ने "कवीश्वर दलपतराम भाग१" तथा "संस्कृति अोना संगमघाट" नामक ग्रंथों में कवि दलपत के जीवन पर तथा तत्कालीन साहित्यिक गति-विधियों पर विद्वत्तापूर्ण विवेचना की है। साधुकवि "सागर" का जीवनचरित्र डॉ० योगीन्द्र त्रिपाठी ने "सागर जीवन अने कवन" शीर्षक से लिखा।